NTA UGC NET-JRF/SET
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा
जूनियर रिसर्च फेलोशिप एवं लेक्चररशिप
पात्रता हेतु

संस्कृत

हल प्रश्न-पत्र

प्रधान सम्पादक
आनन्द कुमार महाजन

संपादन एवं संकलन
यू.जी.सी. संस्कृत परीक्षा विशेषज्ञ समिति

कम्प्यूटर ग्राफिक्स
बालकृष्ण, चरन सिंह

संपादकीय कार्यालय
12, चर्च लेन, प्रयागराज-211002
मो. : 9415650134
Email : yctap12@gmail.com
website : www.yctbooks.com/www.yctfastbook.com
© All Rights Reserved with Publisher

प्रकाशन घोषणा

सम्पादक एवं प्रकाशक आनन्द कुमार महाजन ने E:Book by APP YCT BOOKS, से मुद्रित करवाकर, वाई.सी.टी. पब्लिकेशन्स प्रा. लि., 12, चर्च लेन, प्रयागराज-211002 के लिए प्रकाशित किया।

इस पुस्तक को प्रकाशित करने में सम्पादक एवं प्रकाशक द्वारा पूर्ण सावधानी बरती गई है
फिर भी किसी त्रुटि के लिए आपका सहयोग और सुझाव सादर अपेक्षित है

किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायिक क्षेत्र प्रयागराज होगा।

विषय-सूची

UGC NET/JRF

■ यूजीसी NTA नेट/जेआरएफ नवीन परीक्षा पाठ्यक्रम 3-4
■ यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, संस्कृत जून-2004 द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल 5-8
■ यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, संस्कृत जून-2005 द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल 9-12
■ यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, संस्कृत दिसम्बर-2005 द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल 13-16
■ यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, संस्कृत जून-2006 द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल 17-20
■ यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, संस्कृत दिसम्बर-2006 द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल 21-24
■ यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, संस्कृत जून-2007 द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल 25-28
■ यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, संस्कृत दिसम्बर-2007 द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल 29-32
■ यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, संस्कृत जून-2008 द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल 33-37
■ यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, संस्कृत दिसम्बर-2008 द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल 38-42
■ यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, संस्कृत जून-2009 द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल 43-46
■ यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, संस्कृत दिसम्बर-2009 द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल 47-50
■ यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, संस्कृत जून-2010 द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल 51-54
■ यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, संस्कृत दिसम्बर-2010 द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल 55-58
■ यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, संस्कृत जून-2011 द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल 59-63
■ यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, संस्कृत दिसम्बर-2011 द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल 64-67
■ यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, संस्कृत जून-2012 द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल 68-71
■ यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, संस्कृत जून-2012 तृतीय प्रश्न-पत्र का हल 72-76
■ यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, संस्कृत दिसम्बर-2012 द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल 77-81
■ यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, संस्कृत दिसम्बर-2012 तृतीय प्रश्न-पत्र का हल 82-87
■ यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, संस्कृत जून-2013 द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल 88-93
■ यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, संस्कृत जून-2013 तृतीय प्रश्न-पत्र का हल 94-102
■ यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, संस्कृत दिसम्बर-2013 द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल 103-107
■ यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, संस्कृत दिसम्बर-2013 तृतीय प्रश्न-पत्र का हल 108-114
■ यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, संस्कृत जून-2014 द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल 115-119
■ यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, संस्कृत जून-2014 तृतीय प्रश्न-पत्र का हल 120-125
■ यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, संस्कृत दिसम्बर-2014 द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल 126-130
■ यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, संस्कृत दिसम्बर-2014 तृतीय प्रश्न-पत्र का हल 131-136
■ यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, संस्कृत जून-2015 द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल 137-141
■ यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, संस्कृत जून-2015 तृतीय प्रश्न-पत्र का हल 142-148
■ यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, संस्कृत दिसम्बर-2015 द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल 149-153
■ यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, संस्कृत दिसम्बर-2015 तृतीय प्रश्न-पत्र का हल 154-160
■ यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, संस्कृत जुलाई-2016 द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल 161-164
■ यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, संस्कृत जुलाई-2016 तृतीय प्रश्न-पत्र का हल 165-172
■ यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, संस्कृत जनवरी-2017 द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल 173-177
■ यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, संस्कृत जनवरी-2017 तृतीय प्रश्न-पत्र का हल 178-184
■ यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, संस्कृत नवम्बर-2017 द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल 185-188
■ यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, संस्कृत नवम्बर -2017 तृतीय प्रश्न-पत्र का हल 189-194
■ यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, संस्कृत जुलाई-2018 द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल 195-203
■ यूजीसी NTA नेट/जेआरएफ परीक्षा, संस्कृत दिसम्बर-2018 द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल 204-212
■ यूजीसी NTA नेट/जेआरएफ परीक्षा, संस्कृत जून-2019 द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल 213-220
■ यूजीसी NTA नेट/जेआरएफ परीक्षा, संस्कृत दिसम्बर-2019 द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल 221-232
■ यूजीसी NTA नेट/जेआरएफ परीक्षा, संस्कृत जून-2020 द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल 233-248
■ यूजीसी NTA नेट/जेआरएफ परीक्षा, संस्कृत दिसम्बर-2020/जून-2021 द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल 249-264
■ यूजीसी NTA नेट/जेआरएफ परीक्षा, संस्कृत दिसम्बर-2021/जून-2022 द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल 265-280
■ यूजीसी NTA नेट/जेआरएफ परीक्षा, संस्कृत दिसम्बर-2022 द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल 281-296
■ यूजीसी NTA नेट/जेआरएफ परीक्षा, संस्कृत जून-2023 द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल 297-312
■ यूजीसी NTA नेट/जेआरएफ परीक्षा, संस्कृत दिसम्बर-2023 द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल 313-328

GDC

■ राजकीय डिग्री कालेज प्रवक्ता परीक्षा, संस्कृत 2008 का हल 1-10
■ राजकीय डिग्री कालेज प्रवक्ता परीक्षा, संस्कृत 2012 का हल 11-21
■ राजकीय डिग्री कालेज प्रवक्ता परीक्षा, संस्कृत 2013 का हल 22-32
■ राजकीय डिग्री कालेज प्रवक्ता परीक्षा, संस्कृत 2015 का हल 33-40

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग NTA नेट संस्कृत नवीन परीक्षा पाठ्यक्रम

इकाई-I

वैदिक-साहित्य

(क) वैदिक-साहित्य का सामान्य परिचयः

- वेदों का काल : मैक्समूलर, ए. वेबर, जैकोबी, बालगंगाधर तिलक, एम. विन्टरनिट्ज, भारतीय परम्परागत विचार
- संहिता साहित्य
- संवाद सूक्त : पुरुरवा-उर्वशी, यम-यमी, सरमा-पणि, विश्वामित्र-नदी
- ब्राह्मण साहित्य
- आरण्यक साहित्य
- वेदांग : शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष

इकाई-II

(ख) वैदिक साहित्य का विशिष्ट अध्ययन :-

1. निम्नलिखित सूक्तों का अध्ययन :-

- ऋग्वेद :- अग्नि (1.1), वरुण (1.25), सूर्य (1.125), इन्द्र (2.12), उषस् (3.61), पर्जन्य (5.83), अक्ष (10.34), ज्ञान (10.71), पुरुष (10.90), हिरण्यगर्भ (10.121), वाक् (10.125), नासदीय (10.129)
- शुक्लयजुर्वेदः - शिवसंकल्प, अध्याय-34 (1-6), प्रजापति, अध्याय-23 (1-5)
- अथर्ववेद :- राष्ट्राभिवर्धनम् (1.29), काल (10.53), पृथिवी (12.1)

2. ब्राह्मण-साहित्य : प्रतिपाद्य विषय, विधि एवं उसके प्रकार, अग्निहोत्र, अग्निष्टोम, दर्शपूर्णमास यज्ञ, पंचमहायज्ञ, आख्यान (शुनःशेप, वाङ्मनस्)।
3. उपनिषद्-साहित्य : निम्नलिखित उपनिषदों की विषयवस्तु तथा प्रमुख अवधारणाओं का अध्ययन : ईश, कठ, केन, बृहदारण्यक, तैत्तिरीय, श्वेताश्वतर।
4. वैदिक व्याकरण, निरुक्त एवं वैदिक व्याख्या पद्धति :

- ऋक्प्रातिशाख्य : निम्नलिखित परिभाषाएँ - समानाक्षर, सन्ध्यक्षर, अघोष, सोष्म, स्वरभक्ति, यम, रक्त, संयोग, प्रगृह्य, रिफित।
- निरुक्त (अध्याय 1 तथा 2) चार पद - नाम विचार, आख्यात विचार, उपसर्गों का अर्थ, निपात की कोटियाँ,
- निरुक्त अध्ययन के प्रयोजन
- निर्वचन के सिद्धान्त
- निम्नलिखित शब्दों की व्युत्पत्ति : आचार्य, वीर, ह्रद, गो, समुद्र, वृत्र, आदित्य, उषस, मेघ, वाक् उदक, नदी, अश्व, अग्नि, जातवेदस्, वैश्वानर, निघण्टु।
- निरुक्त (अध्याय 7 दैवत काण्ड)
- वैदिक स्वर : उदात्त, अनुदात्त तथा स्वरित।
- वैदिक व्याख्या पद्धति : प्राचीन एवं अर्वाचीन

इकाई-III

दर्शन-साहित्य

(क) प्रमुख भारतीय दर्शनों का सामान्य परिचयः

प्रमाणमीमांसा, तत्त्वमीमांसा, आचारमीमांसा (चार्वाक, जैन, बौद्ध, न्याय, सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा के संदर्भ में)

इकाई-IV

(ख) दर्शन-साहित्य का विशिष्ट अध्ययन :

- ईश्वरकृष्ण; सांख्यकारिका - सत्कार्यवाद, पुरुषस्वरूप, प्रकृतिस्वरूप, सृष्टिक्रम, प्रत्ययसर्ग, कैवल्य।
- सदानन्द; वेदान्तसार : अनुबन्ध-चतुष्टय, अज्ञान, अध्यारोप-अपवाद, लिंगशरीरोत्पत्ति, पंचीकरण, विवर्त, महावाक्य, जीवन्मुक्ति।
- अन्नंभट्ट; तर्कसंग्रह/केशव मिश्र; तर्कभाषाः पदार्थ, कारण, प्रमाण (प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द), प्रामाण्यवाद, प्रमेय।

1. लौगाक्षिभास्कर; अर्थसंग्रह
2. पतंजलि; योगसूत्र, - (व्यासभाष्य): चित्तभूमि, चित्तवृत्तियाँ, ईश्वर का स्वरूप, योगाङ्ग, समाधि, कैवल्य।
3. बादरायण ; ब्रह्मसूत्र 1.1 (शांकरभाष्य)
4. विश्वनाथपंचानन; न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (अनुमानखण्ड)
5. सर्वदर्शनसंग्रह; जैनमत, बौद्धमत

इकाई-V

व्याकरण एवं भाषाविज्ञान

(क) सामान्य-परिचय : निम्नलिखित आचार्यों का परिचय

- पाणिनि, कात्यायन, पतंजलि, भर्तृहरि, वामनजयादित्य, भट्टोजिदीक्षित, नागेशभट्ट, जैनेन्द्र, कैय्यट, शाकटायन, हेमचन्द्रसूरि, सारस्वतव्याकरणकार।
- पाणिनीय शिक्षा
- भाषाविज्ञान : भाषा की परिभाषा, भाषा का वर्गीकरण (आकृतिमूलक एवं पारिवारिक), ध्वनियों का वर्गीकरण : स्पर्श, संघर्षी, अर्धस्वर, स्वर (संस्कृत ध्वनियों के विशेष संदर्भ में), मानवीय ध्वनियंत्र, ध्वनि परिवर्तन के कारण, ध्वनि नियम (ग्रिम, ग्रासमान, वर्नर) अर्थ परिवर्तन की दिशाएँ एवं कारण, वाक्य का लक्षण व भेद, भारोपीय परिवार का सामान्य परिचय, वैदिक संस्कृत एवं लौकिक संस्कृत में अन्तर, भाषा तथा वाक् में अन्तर, भाषा तथा बोली में अन्तर।

इकाई-VI

(ख) व्याकरण का विशिष्ट अध्ययन :

- परिभाषाएँ - संहिता, संयोग, गुण, वृद्धि, प्रातिपदिक, नदी, घि, उपधा, अपृक्त, गति, पद, विभाषा, सवर्ण, टि, प्रगृह्य, सर्वनामस्थान, भ, सर्वनाम, निष्ठा।
- सन्धि - अच् सन्धि, हल् सन्धि, विसर्ग सन्धि (लघुसिद्धान्तकौमुदी के अनुसार)

- सुबन्त - अजन्त - राम, सर्व (तीनों लिंगों में), विश्वपा, हरि, त्रि (तीनों लिंगों में), सखि, सुधी, गुरु, पितृ, गौ, रमा, मति, नदी, धेनु, मातृ, ज्ञान, वारि, मधु।
  हलन्त - लिह्, विश्ववाह् चतुर् (तीनों लिंगों में), इदम् (तीनों लिंगों में), किम् (तीनों लिंगों में), तत् (तीनों लिंगों में), राजन्, मघवन, पथिन्, विद्वस्, अस्मद् युष्मद्।
- समास- अव्ययीभाव, तत्पुरुष, बहुव्रीहि, द्वन्द्व, (लघुसिद्धान्तकौमुदी के अनुसार)
- तद्धित - अपत्यार्थक एवं मत्वर्थीय (सिद्धान्तकौमुदी के अनुसार)
- तिङन्त - भू, एध्, अद्, अस्, हु, दिव्, षुञ्, तुद्, तन्, कृ, रुध्, क्रीञ्, चुर्
- णिजन्त; सन्नन्त; यङन्त; यङ्लुगन्त; नामधातु
- कृदन्त - तव्य/तव्यत्; अनीयर्; यत्; ण्यत्; क्यप्; शतृ; शानच्; क्त्वा; क्त; क्तवतु; तुमुन्; णमुल्।
- स्त्रीप्रत्यय - लघुसिद्धान्तकौमुदी के अनुसार
- कारक प्रकरण-सिद्धान्तकौमुदी के अनुसार
- परस्मैपद एवं आत्मनेपद विधान-सिद्धान्तकौमुदी के अनुसार
- महाभाष्य (पस्पशाह्निक)-
  शब्दपरिभाषा, शब्द एवं अर्थ संबंध, व्याकरण अध्ययन के उद्देश्य, व्याकरण की परिभाषा, साधु शब्द के प्रयोग का परिणाम, व्याकरण पद्धति।
- वाक्यपदीयम् (ब्रह्मकाण्ड) -
  स्फोट का स्वरूप, शब्द-ब्रह्म का स्वरूप, शब्द-ब्रह्म की शक्तियाँ, स्फोट एवं ध्वनि का संबंध, शब्द-अर्थ संबंध, ध्वनि के प्रकार, भाषा के स्तर।

इकाई-VII

संस्कृत-साहित्य, काव्यशास्त्र एवं छन्दपरिचय :

(क) निम्नलिखित का सामान्य परिचय:

- भास, अश्वघोष, कालिदास, शूद्रक, विशाखदत्त, भारवि, माघ, हर्ष, बाणभट्ट, दण्डी, भवभूति, भट्टनारायण, बिल्हण, श्रीहर्ष, अम्बिकादत्तव्यास, पंडिता क्षमाराव, वी. राघवन्, श्रीधरभास्कर वर्णेकर।
- काव्यशास्त्र : रससम्प्रदाय, अलंकारसम्प्रदाय, रीतिसम्प्रदाय, ध्वनिसम्प्रदाय, व्रकोक्तिसम्प्रदाय, औचित्यसम्प्रदाय।
- पाश्चात्य काव्यशास्त्र : अरस्तू, लॉन्जाइनस, क्रोचे।

इकाई-VIII

(ख) निम्नलिखित का विशिष्ट अध्ययन :

- पद्य : बुद्धचरितम् (प्रथम) रघुवंशम् (प्रथमसर्ग), किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग), शिशुपालवधम्, (प्रथमसर्ग), नैषधीयचरितम् (प्रथमसर्ग)
- नाट्य : स्वप्नवासवदत्तम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, वेणीसंहारम्, मुद्राराक्षसम्, उत्तररामचरितम्, रत्नावली, मृच्छकटिकम्।
- गद्य : दशकुमारचरितम् (अष्टम्-उच्छ्वास), हर्षचरितम्, (पञ्चम-उच्छ्वास), कादम्बरी (शुकनासोपदेश)
- चम्पूकाव्य : नलचम्पू : (प्रथम-उच्छ्वास)
- **साहित्यदर्पण :**
  काव्यपरिभाषा, काव्य की अन्य परिभाषाओं का खण्डन, शब्दशक्ति-(संकेतग्रह, अभिधा, लक्षणा, व्यंजना), काव्यभेद (चतुर्थ परिच्छेद) श्रव्यकाव्य (गद्य, पद्य, मिश्र काव्य-लक्षण)
- **काव्यप्रकाश :**
  काव्यलक्षण, काव्यप्रयोजन, काव्यहेतु, काव्यभेद, शब्दशक्ति, अभिहितान्वयवाद, अन्विताभिधानवाद, रसस्वरूप एवं रससूत्र विमर्श, रसदोष, काव्यगुण, व्यंजनावृत्ति की स्थापना (पञ्चम उल्लास)
  अलंकारः-
  वक्रोक्ति, अनुप्रास, यमक, श्लेष, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, समासोक्ति, अपहनुति, निदर्शना, अर्थान्तरन्यास, दृष्टान्त, विभावना, विशेषोक्ति, स्वभावोक्ति, विरोधाभास, सकंर, संसृष्टि।
- ध्वन्यालोक : (प्रथम उद्योत)
- वक्रोक्तिजीवितम् (प्रथम उन्मेष)
- भरत-नाट्यशास्त्रम् (द्वितीय एवं षष्ठ अध्याय)
- दशरूपकम् (प्रथम तथा तृतीय प्रकाश)
- छन्द परिचय-
  आर्या, अनुष्टुप्, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, वसन्ततिलका, उपजाति, वंशस्थ, द्रुतविलम्बित, शालिनी, मालिनी, शिखरिणी, मन्दाक्रान्ता, हरिणी, शार्दूलविक्रीडित, स्रग्धरा।

इकाई-IX

पुराणेतिहास, धर्मशास्त्र एवं अभिलेखशास्त्र

(क) निम्नलिखित का सामान्य परिचय:

- रामायण - विषयवस्तु, काल, रामायणकालीन समाज, परवर्ती ग्रन्थों के लिए प्रेरणास्रोत, साहित्यिक महत्त्व, रामायण में आख्यान
- महाभारत - विषयवस्तु, काल महाभारतकालीन समाज, परवर्ती ग्रन्थों के लिए प्रेरणास्रोत, साहित्यिक महत्त्व, महाभारत में आख्यान।
- पुराण - पुराण की परिभाषा, महापुराण-उपपुराण, पौराणिक, सृष्टि-विज्ञान, पौराणिक आख्यान।
- प्रमुख स्मृतियों का सामान्य परिचय।
- लिपि : ब्राह्मी लिपि का इतिहास एवं उत्पत्ति के सिद्धान्त।
- अभिलेख का सामान्य परिचय

इकाई -X

(ख) निम्नलिखित ग्रन्थों का विशिष्ट अध्ययन

- कौटिलीय-अर्थशास्त्रम् (प्रथम-विनयाधिकारिक)
- मनुस्मृति - (प्रथम, द्वितीय तथा सप्तम अध्याय)
- याज्ञवल्क्यस्मृति - (व्यवहाराध्याय)
- **लिपि तथा अभिलेख-**
  - गुप्तकालीन तथा अशोककालीन ब्राह्मी लिपि।
  - अशोक के अभिलेख-प्रमुख शिलालेख, प्रमुख स्तम्भलेख
  - मौर्योत्तरकालीन अभिलेख- कनिष्क के शासन वर्ष 3 का सारनाथ बौद्ध प्रतिमा लेख, रुद्रदामन् का गिरनार शिलालेख, खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख
  - गुप्तकालीन एवं गुप्तोत्तरकालीन अभिलेख-समुद्रगुप्त का इलाहाबाद स्तम्भलेख, यशोधर्मन् का मन्दसौर शिलालेख, हर्ष का बांसखेड़ा ताम्रपट्ट अभिलेख, पुलकेशिन द्वितीय का ऐहोल शिलालेख।

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, दिसम्बर-2004

संस्कृत

व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

सूचना : अस्मिन् प्रश्नपत्रे पञ्चाशत् (50) बहुवैकल्पिकप्रश्नाः सन्ति। एकैकस्य प्रश्नस्य अङ्कद्वयं (2) वर्तते। सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः।

1. देवेषु भूषिष्ठैः सूक्तैः स्तुतः :

(a) अग्निः (b) रुद्रः
(c) इन्द्रः (d) वरुणः

Ans : (c) – देवेषु भूषिष्ठैः सूक्तैः इन्द्रः स्तुतः। अर्थात् भूषिष्ठ सूक्त में इन्द्र की स्तुति की गयी है। इन्द्र को दन्तोहर्ता बृत्रहा आदि नामों से भी पुकारा जाता है।

2. शतपथब्राह्मणम्

(a) ऋग्वेदस्य (b) शुक्लयर्जुर्वेदस्य
(c) सामवेदस्य (d) कृष्णयजुर्वेदस्य

Ans : (b) शतपथ ब्राह्मण शुक्लयुर्वेद के माध्यन्दिनि एवं काण्व दोनों शाखाओं में मिलता है।

3. धर्मसूत्रम् आयति

(a) शिक्षायाम् (b) छन्दसि
(c) कल्पे (d) निरुक्ते

Ans : (c) धर्मसूत्र कल्प का एक भाग है कल्प छः वेदाङ्गों में एक है। कल्प के चार भाग होते है- श्रौतसूत्र, शुल्बसूत्र, गृह्यसूत्र तथा धर्मसूत्र।

4. वेदपाठस्य विकृतयः

(a) तिस्रः (b) चतस्रः
(c) अष्ट (d) नव

Ans : (c) वेदपाठस्य विकृतिः - अष्टः। यथा - जटा, माला, शिखा, रेखा, ध्वज, दण्ड, रथ और धन।

5. वेदस्य नेत्रम् :

(a) व्याकरणम् (b) छन्दः
(c) ज्योतिषम् (d) निरुक्तम्

Ans : (c) वेदस्य नेत्रम् - ज्योतिषामयनं चक्षु, व्याकरण - मुखं व्याकरणं स्मृतं। छन्द - छन्दः पादौ तु वेदस्य, निरुक्त - श्रोतंमुच्यते निरुक्तम्।

6. यम-यमी-संवादः वर्तते

(a) ऋग्वेदे (b) यजुर्वेदे
(c) सामवेदे (d) अथर्ववेदे

Ans : (a) यम-यमी संवाद ऋग्वेद के 10वें मण्डल का दशवां सूक्त है। इसके अलावा विश्वामित्र नदी संवाद 3/33 । पुरुरवा उर्वशी- संवाद 10/95 में प्राप्त होता है।

7. पृथिवीसूक्तः

(a) ऋग्वेदस्य (b) सामवेदस्य
(c) अथर्ववेदस्य (d) यजुर्वेदस्य

Ans : (c) पृथ्वीसूक्त-अथर्ववेद की शौनक शाखा के 12वें काण्ड का प्रथम सूक्त है इसके देवता-पृथ्वी तथा ऋषि-अथर्वा हैं।

8. मैत्रेयी शिक्षामवाप :

(a) याज्ञवल्क्यात् (b) पैप्लात्
(c) जैमिनेः (d) कौत्सात्

Ans : (a) मैत्रेयीशिक्षा याज्ञवल्क्यात् अवाप्। अर्थात् मैत्रेयी शिक्षा याज्ञवल्कीय शिक्षा में प्राप्त होती है।

9. निरुक्तेऽस्ति :

(a) वेदमन्त्रणां संग्रहः (b) वैदिकशब्दानां निर्वचनम्
(c) वेदमन्त्राणां स्वरविवेचनम् (d) वैदिकयज्ञानां प्रक्रिया

Ans : (b) निरुक्तेऽस्ति-वैदिकशब्दानां निर्वचनम्। यास्क रचित निरुक्त में वेद के कठिन शब्दों का निर्वचन किया गया है।

10. ताण्ड्यब्राह्मणम्

(a) ऋग्वेदस्य (b) शुक्लयजुर्वेदस्य
(c) कृष्णयर्जुर्वेदस्य (d) सामवेदस्य

Ans : (d) ताण्ड्यब्राह्मण-सामवेद का ब्राह्मण है इसे प्रौढब्राह्मण भी कहा जाता है अन्य ब्राह्मण-पञ्चविंश, षड्विंश, आर्षेय, दैवत इत्यादि।

11. नचिकेतसः पितुर्नाम :

(a) वाजस्रवाः (b) श्वेतकेतुः
(c) याज्ञवल्क्यः (d) जाबालिः

Ans : (a) कठोपनिषद् के अनुसार नचिकेता के पिता का नाम - वाजस्रवा था।

12. बालगङ्गाधर तिलकानुसारं ऋग्वेदस्य कालः ख्रीस्तपूर्वः :

(a) 6000 (b) 3500
(c) 2500 (d) 1200

Ans : (a) बालगङ्गाधर तिलक ने ऋग्वेद का काल निर्धारण ज्योतिष के आधार पर 6000 BC निर्धारित किया है।

13. सांख्यमते प्रकृतिविकृतयाः :

(a) सप्त (b) पञ्च
(c) तिस्रः (d) नव

Ans : (a) सांख्यमते प्रकृति विकृति-सप्त हैं यथा – महत्त, अहंकार, पञ्च तन्मात्रा (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध)।

14. सांख्यमते विकृतयः :

(a) सप्त (b) नव
(c) षोडश (d) अष्टादश

Ans : (c) सांख्यमते विकृति षोडश हैं जैसे – मन, पञ्च ज्ञानेन्द्रिय, पञ्च कर्मेन्द्रिय तथा पञ्च महाभूत।

15. सांख्यनये एकादशेन्द्रियाणि जायन्ते :

(a) अहङ्कारात् (b) महतःि
(c) प्रकृतेः (d) पञ्चतन्मात्रेभ्यः

Ans : (a) सांख्यमते अहङ्कारात् एकादशेन्द्रियाणि जायन्ते। सांख्यशास्त्र में 25 तत्त्व हैं लेकिन जो ग्यारह इन्द्रियाँ हैं उनकी उत्पत्ति अहङ्कार से होती है।
= सांख्यशास्त्र में 25 तत्त्व हैं लेकिन जो ग्यारह इन्द्रियां हैं उनमें से अहङ्कार की उत्पत्ति 11 इन्द्रियों से होती है। जैसे- प्रकृति → महत्तत्त्व→अहङ्कार→पञ्चतन्मात्रायें→
मन→एकादशेन्द्रिय→पञ्चमहाभूत ।

16. वेदान्तो नाम :

(a) रामायणप्रमाणम् (b) धर्मशास्त्रप्रमाणम्
(c) उपनिषत्प्रमाणम् (d) अर्थशास्त्रप्रमाणम्

Ans : (c) - वेदान्तो नामोपनिषत्प्रमाणं तदुपकारीणि शारीरक सूत्रादीनि च। ब्रह्मविद्या की प्रमाण रूप उपनिषदे ही मुख्य रूप से वेदान्त है।

17. सांख्यमते अन्तःकरणम् :

(a) द्विविधम् (b) त्रिविधम्
(c) चतुर्विधम् (d) पञ्चविधम्

Ans : (b) सांख्यमते अन्तःकरणम् त्रिविधम् अर्थात् सांख्य मतानुसार अन्तःकरण तीन हैं-(1) बुद्धि (2) मन (3) अहङ्कार।

18. अद्वैतवेदान्ते जीवब्रह्मणोः स्वरूपम् :

(a) जीव एव ब्रह्म (b) जीव एव ईश्वरः
(c) जीव एव अज्ञानम् (d) जीव एव पुरुषः

Ans : (a) अद्वैतवेदान्ते जीवब्रह्मणोः स्वरूपम् – जीवब्रह्मैक्यम् शुद्ध चैतन्यम् इत्यादि।

19. अनुबन्धः :

(a) त्रिविधः (b) चतुर्विधः
(c) पञ्चविधः (d) षड्विधः

Ans : (b) अनुबन्ध - वेदान्तसार में चार अनुबन्ध हैं- अधिकारी, विषय, सम्बन्ध और प्रयोजन।

20. अध्यारोपस्य लक्षणम्

(a) वस्तुनि अवस्त्वारोपः (b) अवस्तुनि वस्त्वारोपः
(c) जीवे ब्रह्मण आरोपः (d) न किमपि

Ans : (a) वस्तुन्यवस्त्वारोपोऽध्यारोपः - वस्तु पर अवस्तु का आरोप करना ही अध्यारोप है जैसे – रज्जु में सर्प की प्रतीति ।

21. अद्वैते सुषुप्ते देवता

(a) वैश्वानरः (b) ईश्वरः
(c) हिरण्यगर्भः (d) अग्निः

Ans : (b) अद्वैते सुषुप्ते देवता - ईश्वरः। वेदान्तसार के 25 खण्ड में जागरण काल के विषयों से रहित होने के कारण स्वप्न कही जाती है।

22. न्यायदर्शनानुसारं प्रमाणानि :

(a) त्रीणि (b) चत्वारि
(c) पञ्च (d) षट्

Ans : (b) न्याय दर्शन के अनुसार चार प्रमाण हैं - प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द।

23. न्यायमते वाक्यम् :

(a) पदवर्णशब्दाः
(b) अभिधालक्षणाव्यञ्जनाः
(c) आकाङ्क्षायोग्यतासन्निधिमतां पदानां समूहः
(d) पदपदार्थयोजना

Ans : (c) वाक्यं स्याद्योग्यताकांक्षाआसित्तियुक्तः पदोच्चयः - योग्यता आकांक्षा, आसक्ति से युक्त पदसमवाय को वाक्य कहा जाता है।

24. परार्थानुमाने अवयवाः :

(a) त्रयः (b) पञ्च
(c) सप्त (d) नव

Ans : (b) परार्थानुमान के पांच अवयव हैं- प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय और निगमन।

25. परः सन्निकर्षः :

(a) संहिता (b) वृद्धि
(c) नदी (d) घि

Ans : (a) (1) परः सन्निकर्षः संहिता अर्थात् दो वर्णों की अत्यन्त समीपता को संहिता कहते हैं जैसे– सुधी + उपास्यः में धकारोत्तरवर्ती ई और परवर्ती उ में संहिता होने के कारण संधि कार्य हुआ है। (2) वृद्धिरेचि, (3) यूस्त्याख्यौ नदी, (4) शेषोध्यसखि।

26. अदेङ्

(a) गुणः (b) प्रातिपदिकम्
(c) अपृक्तः (d) पदम्

Ans : (a) (1) अदेङ्गुणः-अत् और एङ् अर्थात् अ,ए, ओ की गुण संज्ञा होती है। (2) अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्, (3) अपृक्तम् एकालप्रत्ययः, (4) सुप्तिङन्तं पदम्।

27. न वेति :

(a) उपधा (b) विभाषा
(c) निष्ठा (d) संहिता

Ans : (b) (1) न वेति विभाषा, (2) अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा, (3) क्तक्तवतूनिष्ठा, (4) परः सन्निकर्षः संहिता।

28. तुल्यास्यप्रयत्नं :

(a) घि (b) सवर्णम्
(c) निष्ठा (d) प्रगृह्यम्

Ans : (b) (1) तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम् अर्थात् जिन वर्णों का उच्चारण स्थान एवं प्रयत्न एक होते हैं उनकी सवर्ण सञ्ज्ञा होती है। (2) शेषोध्यसखि, (3) क्तक्तवतूनिष्ठा, (4) ईदूदेद्विवचनम् प्रगृह्यम्।

29. कर्मादीनामपि सम्बन्धमात्रविवक्षायाम् :

(a) प्रथमा (b) पञ्चमी
(c) चतुर्थी (d) षष्ठी

Ans : (d) कर्मादीनामपि सम्बन्धमात्रविवक्षायां षष्ठी विभक्तिर्भवति- कर्म आदि कारक के भी सम्बन्ध मात्र की विवक्षा करने में षष्ठी विभक्ति होती है - जैसे- मातुःस्मरति।

30. प्रायेण पूर्वपदार्थप्रधानः :

(a) द्वन्द्वः (b) अव्ययीभावः
(c) तत्पुरुषः (d) बहुव्रीहिः

Ans : (b) (1) प्रायेण पूर्वपदार्थप्रधानोऽव्ययीभावः, (2) प्रायेण उत्तर पदार्थप्रधानस्तत्पुरूषः, (3) प्रायेणान्यपदार्थप्रधानो बहुव्रीहिः, (4) प्रायेणोभयपदार्थप्रधानोद्वन्द्वः।

31. उपपदविभक्तेः ..... बलीयसी।

(a) अनुपपदविभक्ति (b) कारकविभक्तिः
(c) प्रथमाविभक्तिः (d) न कोऽपि विभक्तिः

Ans : (b) उपपदविभक्तेः कारक विभक्तिर्वलीयसी अर्थात् पद के सम्बन्ध से होने वाली विभक्ति से क्रिया के सम्बन्ध से होने वाली विभक्ति बलवती होती हैं। जैसे-गुरुः देवं नमस्करोति।

32. भाषा ..... विनिमयस्य साधनम्।

(a) विचार (b) आचार
(c) वित्त (d) वस्तु

Ans : (a) भाषा विचार विनिमयस्य साधनम् – ''अपने व्यापकतम् रूप में भाषा का अर्थ है अपने विचारो और मनोभावों को व्यक्त करने वाले ऐसे संकेतो का कुल योग जो देखे और सुने जा सके इच्छानुसार उत्पन्न किए एवं दोहराए जा सके''। डा0 भोला नाथ तिवारी।

33. भाषाणां वर्गीकरणस्य आधारः स्वीकृतः :

(a) कालः (b) धर्मः
(c) प्रकृतिः (d) आकृतिः

Ans : (d) भाषा वर्गीकरण का आधार - विश्व की अनेक भाषाओं को ध्यान में रखते हुए भाषा का दो भागों में वर्गीकरण किया गया है- (1) आकृतिमूलक वर्गीकरण - आकृति शब्दों या पदों की रचना के आधार पर, (2) पारिवारिक वर्गीकरण - अर्थ तत्त्व एवं रूपतत्व की समानता के आधार पर - 4 खण्डों में कुल 18 परिवार।

34. कादयो मावसानाः :

(a) स्वरः (b) अर्धस्वराः
(c) स्पर्शाः (d) ऊष्माणः

Ans : (c) कादयो मावसानाः स्पर्शाः अर्थात् - क् से लेकर म् तक के वर्ण स्पर्श सञ्ज्ञक होते हैं। य्, व्, र्, ल्, अन्तस्थ। श्, ष्, स्, ह् ऊष्म वर्ण कहे जाते हैं तथा अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ अच् कहे जाते है।

35. भारतीयार्यभाषासु प्राचीनतमा :

(a) पालिभाषा (b) प्राकृतभाषा
(c) वैदिकसंस्कृतभाषा (d) लौकिकसंस्कृतभाषा

Ans : (c) भारतीयआर्यभाषासु वैदिक संस्कृत प्राचीनतमा भाषाऽस्ति -भारतीय आर्यों की प्राचीन भाषा वैदिक संस्कृत है क्योंकि वेदों को अपौरूषेय कहा गया है तथा संस्कृत भाषा को सभी भाषाओं की जननी तथा इसे देव वाणी भी कहा जाता है।

36. भारोपीयपरिवारस्य भाषा नास्ति :

(a) संस्कृतभाषा (b) आङ्ग्लभाषा
(c) तमिलभाषा (d) प्राकृतभाषा

Ans : (c) भारोपीयपरिवार की भाषा को दो वर्गो में बांटा गया है-
(i) केन्तुम्-लैटिन, ग्रीक, इटैलियन, फ्रेंच, ब्रीटन, गोलिक, तोखारी।
(ii) सतम् - अवेस्ता, फारसी, संस्कृत, हिन्दी, रूसी, बुल्गेरियन, लिथुआनिअन् अंग्रेजी। अतः तमिलभाषा भारोपीय परिवार की भाषा नहीं है।

37. 'वागर्थाविवसम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये' इत्युक्तिः :

(a) बुद्धचरिते (b) रघुवंशे
(c) नैषधीयचरिते (d) शिशुपालवधे

Ans : (b) वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ।।

महाकवि कालिदास विरचित रघुवंश महाकाव्य का यह मङ्गलाचरण है जिसमें भगवान् शंकर तथा पार्वती की आराधना की गयी है।

शब्द और अर्थ के समान नित्य सम्बद्ध तथा संसार के माता-पिता भगवती पार्वती और भगवान् शंकर को शब्दार्थ परिज्ञान के लिए मैं प्रणाम करता हूँ।

38. केवलं मन्दाक्रान्ताछन्दसि निबद्धम् :

(a) किरातार्जुनीयम् (b) मेघदूतम्
(c) बुद्धचरितम् (d) नैषधीयचरितम्

Ans : (b) महाकवि कालिदास विरचित मेघदूतम् गीतिकाव्य मन्दाक्रान्ता छन्द में लिखा गया है। मन्दाक्रान्ता का लक्षण इस प्रकार है- मन्दाक्रान्ता जलधिषडगैम्भौ नतौ ताद् गुरु चेत्। इसके प्रत्येक चरण में मगण, भगण, नगण, तगण, तगण दो गुरु वर्ण आये तथा 4, 6 तथा 7 पर यति होती है। कुल 17 वर्ण होते है।

39. कालानुसारी क्रमः :

(a) कालिदासः, भासः, बाणभट्टः, भवभूतिः
(b) भासः, कालिदासः, बाणभट्टः, भवभूतिः
(c) भवभूतिः, कालिदासः, भासः, बाणभट्टः
(d) बाणभट्टः, भासः, कालिदासः, भवभूतिः

Ans : (b)
कालक्रम- भास - 100 ई.पू. से 200 ई. के मध्य-13 नाटक
कालिदास - प्रथम शताब्दी ई. पूर्व - 7 रचनाएँ
बाणभट्ट - सातवीं शताब्दी का पूर्वाह्न – 5 रचनाएँ
भवभूति - सातवीं आठवीं – 3 रचनाएँ

40. शुकनासोपदेशः वर्तते :

(a) दशकुमारचरिते
(b) कादम्बर्याम्
(c) हर्षचरिते
(d) अभिज्ञानशाकुन्तले

Ans : (b) शुकनासोपदेशः कादम्बर्याम् वर्तते। शुकनासोपदेशः का वर्णन कादम्बरी कथामुखम् के पूर्वार्द्ध में है। कादम्बरी कथा दो भागों में विभाजित है। (1) पूर्वार्द्ध, (2) उत्तरार्द्ध। इस कथा में तीन जन्मों की कहानी वर्णित है।

41. करुणरसप्रधानं नाटकम् :

(a) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(b) स्वप्नवासवदत्तम्
(c) उत्तररामचरितम्
(d) मृच्छकटिकम्

Ans : (c) भवभूति विरचित उत्तरामचरितम् नाटक करुण रस प्रधान है जो सात अंको का है। इसके तृतीय अङ्क में कहा भी गया है– एकोरसः करुण एवं निमित्तभेदाद्।
(ii) अभिज्ञानशाकुन्तलम् – श्रृंगाररस, (iii) स्वप्नवासवदत्तम् – श्रृंगाररस, (iv) मृच्छकटिकम् – श्रृंगाररस।

42. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत :

(A) वेणीसंहार (i) भवभूतिः
(B) स्वप्नवासवदत्तम् (ii) कालिदासः
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (iii) भट्टनारायणः
(D) उत्तररामचरितम् (iv) भासः

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(ii)	(i)	(iii)	(iv)
(b)	(i)	(iii)	(iv)	(ii)
(c)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(d)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)

Ans : (d) वेणीसंहार - भट्टनारायण
स्वप्नवासवदत्तम् - भास
अभिज्ञानशाकुन्तलम् - कालिदास
उत्तररामचरितम् - भवभूति

43. ''तत्राऽपि च चतुर्थोऽङ्कस्तत्र श्लोकचतुष्टयम्'' इत्युक्तिः सङ्गच्छते :

(a) मृच्छकटिके (b) वेणीसंहारे
(c) अभिज्ञानशाकुन्तले (d) उत्तररामचरिते

Ans : (c) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में श्लोकचतुष्टय का वर्णन है- चतुर्थअङ्क के चार प्रसिद्ध श्लोक महाकवि कालिदास रचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के है जो इस प्रकार हैं –
(i) यास्यत्यद्य शाकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया 4/6
(ii) अस्मानसाधु विचिन्त्य 4/17
या
अभिजनवतो भर्तुः श्लाघ्ये स्थिता गृहिणीपदे 4/19
(iii) शुश्रूषस्व गुरुन् कुरु प्रिय सखीवृत्तिं 4/18
(iv) भूत्वा चिराय चतुरन्तमहीसपत्नी 4/20

44. साहित्यदर्पणस्य प्रणेता :

(a) पण्डितराज जगन्नाथः
(b) कविराज विश्वनाथः
(c) दीपशिखा कालिदासः
(d) श्रीकण्ठपदलाञ्छनो भवभूतिः

Ans : (b) साहित्यदर्पण के प्रणेता – आचार्य विश्वनाथ हैं। रसगङ्गाधर – पं. जगन्नाथ (7 वीं शताब्दी) (चार आनन)। दीपशिखा कालिदास की उपाधि है।

45. अग्रिमा शब्दशक्तिः :

(a) तात्पर्याख्या (b) लक्षणा
(c) व्यञ्जना (d) अभिधा

Ans : (d) तत्र संकेतितार्थस्य बोधनादग्रिमाऽभिधा।। (सा0 द0)
अर्थ वाच्य – लक्ष्य एवं व्यंग्य तीन प्रकार का माना गया है। वाच्य अभिधा से, लक्ष्य-लक्षणा से तथा व्यङ्ग्य व्यंजना से बोध होता है संकेतित अर्थ का बोध कराने वाली प्रथम शक्ति अभिधा है।

46. शब्दस्यार्थादिकस्य वृत्तिः :

(a) अभिधा (b) लक्षणा
(c) व्यञ्जना (d) तात्पर्याख्या

Ans : (c) शब्द के अर्थ आदि को बताने वाली वृत्ति व्यञ्जना है। अनेक अर्थ वाले शब्द के एक अर्थ में संयोग आदि से नियन्त्रित हो जाने पर अन्य अर्थ का बोध जिस शक्ति से होता है वह व्यञ्जना कही जाती है। जैसे – सशंख चक्रो हरिः। शंख एवं चक्र के योग वश ही हरि शब्द विष्णु का बोध कराता है।

47. सर्गबन्धो :

(a) नाटकम् (b) गद्यकाव्यम्
(c) महाकाव्यम् (d) चम्पूकाव्यम्

Ans : (c) –सर्गबन्धो महाकाव्यं तत्रैक नायकः सुरः ।
सद्वंशः क्षत्रियोवापि धीरोदात्त गुणान्वितः ।।
महाकाव्य का लक्षण है– महाकाव्य सर्गो में विभक्त होना चाहिए। नायक, देवता, क्षत्रिय। श्रृंगार, वीर और शान्त मे से कोई एक प्रधानरस होना चाहिए।

48. रूपकभेदाः :

(a) अष्टौ (b) नव
(c) दश (d) एकादशा

Ans : (c) – रूपक के दश भेद होते हैं –
1. नाटक 2. प्रकरण, 3.भाण, 4. प्रहसन, 5. डिम, 6. व्यायोग, 7. समवकार, 8.वीथी, 9.अङ्क, 10. ईहामृग।

49. विश्वनाथोक्तं काव्यलक्षणम् :

(a) तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि
(b) रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्
(c) वाक्यं रसात्मकं काव्यम्
(d) इष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली

Ans : (c) विश्वनाथोक्तं काव्यलक्षणमस्ति –
(i) वाक्यं रसात्मकं काव्यं – (आचार्यविश्वनाथ) साहित्य दर्पण।
(ii) तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि – आचार्य मम्मट (काव्य प्रकाश)
(iii) रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दःकाव्यम् – पं जगन्नाथ (रसगङ्गाधर)
(iv) शरीरं तावद् इष्टार्थव्यवछिन्ना पदावली – दण्डी (काव्यादर्श)

50. वीररसस्य स्थायीभावः :

(a) क्रोधः (b) उत्साहः
(c) भयम् (d) विस्मय

Ans : (b)
कुल नव रस माने जाते हैं काव्य प्रकाश के अनुसार –

1. श्रृंगार – रति	6. वीर – उत्साह
2. रौद्र – क्रोध	7. भयानक – भय
3. बीभत्स – जुगुत्सा	8. अद्भुत – विस्मय
4. हास्य – हास	9. शान्त – निर्वेद
5. करुण- शोक	

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, जून-2005

संस्कृत

व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

1. 'सत्यमेव जयते नानृतम्' इति वचनं कस्याम् उपनिषदोपलभ्यते?

(a) केनोपनिषदि (b) कठोपनिषदि
(c) मुण्डकोपनिषदि (d) ऐतरेयोपनिषदि

Ans : (c) 'सत्यमेव जयते नानृतम्' यह वचन मुण्डकोपनिषद् में प्राप्त होता है। मुण्डकोपनिषद् अथर्ववेद का उपनिषद् है, अथर्ववेद के अन्तर्गत तीन उपनिषदे प्राप्त होती है। (1) प्रश्नोपनिषद् (2) मुण्डकोपनिषद् (3) माडूक्योपनिषद्। मुण्डकोपनिषद् शौनकशाखा से सम्बन्धित है।

2. 'विश्वामित्र -नदी संवाद ऋग्वेदस्य कस्मिन् मण्डले उपलभ्यते?

(a) प्रथमण्डले (b) तृतीयमण्डले
(c) दशममण्डले (d) अष्टममण्डले

Ans : (b) विश्वामित्र नदी संवाद ऋग्वेद के तृतीय मण्डल में है। विश्वामित्र- नदी संवाद- 3/33/। ऋग्वेद में दश मण्डल हैं प्रथम मण्डल में अगस्त्य लोपा मुद्रा संवाद है। दशम मण्डल में सरमा पणि तथा यम-यमी संवाद मिलता है।

3. 'शतपथब्राह्मणम् केन वेदेन सम्प्रक्रम् ?

(a) सामवेदेन (b) शुक्लयजुर्वेदेन
(c) ऋग्वेदेन (d) अथर्ववेदेन

Ans : (b) यजुर्वेद की दो शाखायें प्राप्त होती है – (1) शुक्लयजुर्वेद (2) कृष्णयजुर्वेद। शुक्लयजुर्वेद की कई शाखायें प्राप्त होती है- माध्यन्दिनसंहिता, काण्वसंहिता, वाजसनेयी इत्यादि। शतपथ ब्राह्मण भी शुक्लयजुर्वेद का ब्राह्मण है।

4. त्रीणि पदानि कस्य देवस्य प्रसिद्धानि?

(a) अग्नेः (b) इन्द्रस्य
(c) सवितुः (d) विष्णोः

Ans : (d) तीन पदों के लिए भगवान् विष्णु प्रसिद्ध हैं क्योंकि इन्होंने सिर्फ तीन पग से ही सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को माप लिया था। इसीलिए इनका नाम त्रिविक्रम पड़ा। इन्द्र को शचीपति एवं मरुत्वान् कहते हैं अग्नि जातवेदा के लिए प्रसिद्ध है।

5. 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' इति मन्त्रः कस्मिन् वेदेदृक्पथमुपयाति?

(a) कृष्णयजुर्वेदे (b) ऋग्वेदे
(c) अथर्ववेदे (d) शुक्लयजुर्वेदे

Ans : (c) 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' यह मन्त्र अथर्ववेद से सम्बन्धित है। अथर्ववेद में इस मन्त्र का विस्तार से वर्णन प्राप्त होता है। यह मन्त्र इहलौकिक है।

6. पैप्पलाद शाखा केन वेदेन सम्पृक्ता?

(a) ऋग्वेदेन (b) सामवेदेन
(c) अथर्ववेदेन (d) यजुर्वेदेन

Ans : (c) महर्षि पतञ्जलि ने महाभाष्य में नवधाऽथर्वणो वेदः कहकर अथर्ववेद की नव शाखाओं का उल्लेख किया है जिसमें से वर्तमान में सिर्फ दो ही शाखायें प्राप्त होती है- (1) पैप्पलाद शाखा (2) शौनकीय शाखा। पिप्पलाद ऋषि के नाम से इस शाखा का नाम पैप्पलाद पड़ा।

7. तैत्तरीयारण्यकम् कं वेदमवलम्बते?

(a) यजुर्वेदम् (b) ऋग्वेदम्
(c) सामवेदम् (d) अथर्ववेदम्

Ans : (a) यजुर्वेद के दो भाग - (1) कृष्णयजुर्वेद (2) शुक्ल यजुर्वेद। कृष्णयजुर्वेद के दो आरण्यक मिलते हैं- तैत्तिरीय आरण्यक (2) मैत्रायणी आरण्यक। शुक्लयजुर्वेद के अन्तर्गत बृहदारण्यक आता है।

8. को नाम वे दशतयी इति शब्देन व्यपदिश्यते?

(a) सामवेद (b) यजुर्वेद
(c) अथर्ववेद (d) ऋग्वेद

Ans : (d) ऋग्वेद को दशतयी नाम से भी जाना जाता है। इसी प्रकार सामवेद को संगीत एवं अथर्ववेद को लौकिक उपनामों से भी जाना जाता है।

9. ऋग्वेदस्य नवम मण्डले को नाम देव स्तुति लभते?

(a) इन्द्रः (b) विष्णुः
(c) रुद्रः (d) सोमः

Ans : (d) ऋग्वेद के नवम् मण्डल में 120 सूक्तों में सोम की स्तुति की गयी है। इसी प्रकार ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के 145वें सूक्त में विष्णु की स्तुति की गयी है। इन्द्र ऋग्वेद का सबसे प्रभावशाली देवता है इसकी स्तुति 250 सूक्तों में की गयी है।

10. वेदाङ्गानि कति :

(a) पञ्च (b) दश
(c) षट् (d) द्वादश

Ans : (c) वेदपुरुष के 6 (षट्) अङ्ग बताये गये हैं जो इस प्रकार हैं (1) शिक्षा (2) कल्प (3) निरुक्त (4) व्याकरण (5) छन्द (6) ज्योतिष। जिसमें से व्याकरण को वेदपुरुष का मुख कहा गया है।

11. त्रिष्टुप् छन्दसि कति अक्षराणि विराजन्ते?

(a) त्रिंशत् (b) चतुर्विंशति
(c) चतुश्चत्वारिंशत् (d) षट्त्रिंशत

Ans : (c) त्रिष्टुप् छन्द में चतुश्चत्वारिंशत् (44) अक्षर होते हैं इस छन्द में चार चरण होते हैं प्रत्येक चरण में 11 वर्ण होते हैं। 11×4=44 वर्ण।

12. श्रौतसूत्रं किं वेदाङ्गविषयीकरोति?

(a) कल्पम् (b) निरुक्तम्
(c) ज्योतिषम् (d) व्याकरणम्

Ans : (a) षड्वेदाङ्गो में कल्प का विशेष स्थान है। कल्प को वेदपुरुष का हाथ माना गया है। कल्प मुख्यतः चार भागों में विभक्त है-(1) श्रौतसूत्र (2) गृह्यसूत्र (3) धर्मसूत्र (4) शुल्बसूत्र।

13. सांख्यस्य मतमिदम् :

(a) आरम्भवादः (b) विवर्तवादः
(c) असत्कार्यवादः (d) सत्कार्यवादः

Ans : (d) सांख्यदर्शन के प्रमुख आचार्य कपिल माने जाते हैं। सांख्यदर्शन में परिणामवाद को ही सत्कार्यवाद के नाम से जाना जाता है। सत्कार्यवाद की पुष्टि के लिए 5 हेतु माने गये हैं -(1) असद्करणाद् (2) उपादानग्रहणात् (3) सर्वसम्भवाभावात् (4) शक्तस्यशक्यकरणात् और (5) कारणभावात्।

14. त्रिगुणातीतोऽयम्

(a) महान् (b) अहङ्कार
(c) पुरुषः (d) विकारः

Ans : (c) पुरुषः त्रिगुणातीतः। अव्यक्त एवं सभी पदार्थ त्रिगुण, अविवेकि विषय आदि होते हुये संघात रूप है। जन्म, मरण एवं इन्द्रियों की व्यवस्था होने एवं अलग-अलग रूप में प्रवृत्त होने से पुरुष त्रिगुणत्व की श्रेणी में आता है।

15. विषादोऽस्य स्वरूपम्

(a) सत्त्वगुणस्य (b) तमोगुणस्य
(c) रजोगुणस्य (d) पुरुषस्य

Ans : (b) विषाद् तमोगुण का स्वरूप है। तीन गुण है यह गुणत्रय के नाम से भी जाने जाते हैं- (1) सत्त्वगुण (2) रजोगुण (3) तमोगुण।

16. भूतद्यहङ्काराद् उत्पद्यते

(a) ज्ञानेन्द्रियपञ्चकम् (b) कर्मेन्द्रियपञ्चकम्
(c) तन्मात्रपञ्चकम् (d) मनः

Ans : (c) अहङ्कार से पञ्चतन्मात्राओं की उत्पत्ति होती है। पञ्चमहाभूत है- आकाश, वायु, तेज, जल और पृथिवी। पञ्चतन्मात्राएँ हैं- शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध इनका क्रमशः एक दूसरे से सम्बन्ध है।

17. अनुबन्धोऽयम्

(a) पञ्चीकरणम् (b) अज्ञानम्
(c) विषयः (d) लक्षणम्

Ans : (c) विषयोऽनुबन्धः - विषयः जीवब्रह्मैक्यं शुद्धचैतन्यं प्रमेयं तत्रैव वेदान्तानां तात्पर्यात् ।

18. नैमित्तकं कर्मेदम्

(a) ज्योतिष्टोमयज्ञम् (b) ब्रह्महत्या
(c) जातेष्टि (d) सन्ध्यावन्दनम्

Ans : (c) पुत्रजन्म आदि के निमित्त किये जाने वाले जातेष्टि आदि नैमित्तिक कर्म है। ब्रह्महत्या आदि निषिद्ध कर्म है। ज्योतिष्टोम आदि काम्य कर्म की श्रेणी में आते हैं तथा सन्ध्यावन्दनादि नित्यकर्म है।

19. विज्ञानमयकोशोऽयम्

(a) पञ्चज्ञानेन्द्रियाणि + बुद्धिः
(b) पञ्चज्ञानेन्द्रियाणि + मनः
(c) पञ्चज्ञानेन्द्रियाणि प्राणादिपञ्चकम्
(d) पञ्चकमेन्द्रियाणि + बुद्धिः

Ans : (a) वेदान्तसार में पञ्च ज्ञानेन्द्रियों (श्रोत, त्वक्, चक्षु, जिह्वा, घ्राण) से युक्त बुद्धि को विज्ञानमय कोश कहा गया है। इयं बुद्धिर्ज्ञानेन्द्रियैः संहिता विज्ञानमय कोशो भवति।

20. 'जीवन्मुक्तः' इत्यस्य अर्थो विद्यते-

(a) जीवनात् मुक्तः (b) जीवितः सन् मुक्तः
(c) प्रारब्धकर्मयो मुक्तः (d) शुभवासनानुवृत्तेर्मुक्तः

Ans : (a) जीवनाद् मुक्तः इति जीवन्मुक्तः। तात्पर्य यह है कि समस्त बन्धनों से रहित हो जाने से केवल ब्रह्म में ही तत्पर रहने वाले ब्रह्मनिष्ठ को जीवन्मुक्त कहते हैं।
स्रोत-वेदान्तदर्शन-सदानन्द श्रीवास्तव पृ0सं0-205

21. न्यायवैशेषिकानुसारं गुणाः कति सन्ति-

(a) त्रयः (b) चत्वारः
(c) चतुर्विंशतिः (d) सप्तदश

Ans : (c) न्यायवैशेषिकानुसार गुण 24 है जो इस प्रकार है- रूप, रस-गन्ध-स्पर्श-संख्या-परिमाण-पृथकत्व-संयोग-विभाग-परत्व-अपरत्व गुरुत्व-स्नेह-शब्द-बुद्धि-सुख-दुःख- इच्छा-द्वेष-प्रयत्न- धर्म-अधर्म तथा संस्कार।

22. घटः स्वगतरूपादेः -

(a) असमवायिकारणम् (b) समवायिकारणम्
(c) निमित्तकारणम् (d) न कारणम्

Ans : (b) घट अपने रुपादि का समवायिकारण है जिस प्रकार तन्तु पट के प्रति समवायि कारण हैं। यत्समवेतं कार्यमुत्पद्यते तत्समवायिकारणम्। यथा- तन्तवः पटस्य समवायि कारणम् ।

23. श्रोत्रेण शब्द साक्षात्कारे सन्निकर्षः -

(a) संयोगः (b) विशेषण विशेष्यभावः
(c) समवायः (d) संयुक्तसमवाय

Ans : (c) जब कान से शब्द ग्रहण किया जाता है उस समय कर्ण ही इन्द्रिय है तथा शब्द अर्थ है। इन दोनों का सन्निकर्ष समवाय सन्निकर्ष कहलाता है।

24. सादृश्यज्ञानं करणम् -

(a) अनुमितेः (b) उपमितेः
(c) शाब्दबोधस्य (d) चाक्षुषप्रत्यक्षस्य

Ans : (b) संज्ञासंज्ञि सम्बन्ध ज्ञानमुपमितिः । तत्करणं सादृश्यज्ञानम्। संज्ञा संज्ञि इनका जो सम्बन्ध है उसका ज्ञान उपमिति है उस उपमिति के प्रति उपमेय में उपमान का सादृश्यज्ञान (दर्शन) करण है।

25. वृद्धिसंज्ञाविधायकं सूत्रम् अस्ति -

(a) वृद्धिरेचि (b) वृद्धिरादैच्
(c) मृजेर्वृद्धिः (d) इकोगुणवृद्धी

Ans : (b) वृद्धिरादैच् वृद्धि संज्ञा विधायक सूत्र है अर्थात् आत् +ऐच् की वृद्धि संज्ञा होती है। आत् में आ तथा ऐच् में ऐ, औ आते हैं। वृद्धिरेचि वृद्धि सन्धि विधायक सूत्र है अर्थात् अ या आ के बाद एच् आने पर पूर्व एवं पर को वृद्धि एकादेश होता है।

26. निषेधाविकल्पयोः का सञ्ज्ञा भवति-

(a) निषेधविकल्पः (b) विकल्पनिषेधः
(c) विभाषा (d) विकल्पः

Ans : (c) न वेति विभाषा सूत्र से निषेध और विकल्प की विभाषा संज्ञा होती है। विभाषा का अर्थ भी होता है- विकल्प से अर्थात् हो भी सकता है नहीं भी हो सकता।

27. एकाल् प्रत्ययस्य का संज्ञा-

(a) नदी (b) समाहारः
(c) एकवर्णः (d) अपृक्तम्

Ans : (d) एकाल् प्रत्ययः अपृक्तम्- सूत्र से एकाल् प्रत्यय की अपृक्त संज्ञा होती है। समाहार स्वरितः -उच्चारण स्थान के उच्च अंश से उच्चारित स्वर उदात्त नीचे से अनुदात्त तथा दोनों से स्वरित कहलाता है। यूस्त्राख्यौ नदी सूत्र से ईकारान्त एवं ऊकारान्त नित्य स्त्रीलिङ्ग शब्दों की नदी संज्ञा होती है।

28. अपादाने का विभक्तिः भवति-

(a) प्रथमा (b) पञ्चमी
(c) सप्तमी (d) तृतीया

Ans : (b) 'अपादाने पञ्चमी'- जिसकी अपादान संज्ञा हो उसमें पञ्चमी विभक्ति होती है। 'सप्तम्यधिकरणे च' सूत्र से अधिकरण में सप्तमी विभक्ति होती है और 'कर्तृकरणयोस्तृतीया' सूत्र से तृतीया होती है। प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा।

29. समीचीनां तालिकां चिनुत -

(A) प्रगृह्यम् (1) यू स्त्र्याख्यौ
(B) टि (2) अदेङ्
(C) गुणः (3) ईदूदेद्द्विवचनम्
(D) नदी (4) अचोऽन्त्यादि

कूट :

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	4	2	1	3
(b)	2	4	3	1
(c)	1	2	3	4
(d)	3	4	2	1

Ans : (d) ईदूदेद्द्विवचनम् प्रगृह्यम् - ऊकारान्त/ऊकारान्त/तथा एकारान्त द्विवचन की प्रगृह्य संज्ञा होती है। अचोऽन्त्यादि टि- अन्तिम अच् की टि संज्ञा होती है। अदेङ्गुणः- अत् और एङ् की गुण संज्ञा होती है। यूस्त्र्याख्यौ नदी- नित्य स्त्रीलिङ्ग ईकारान्त और ऊकारान्त की नदी संज्ञा होती है।

30. अक्ष्णा काणः केन सूत्रेण तृतीया विभक्तिः -

(a) कर्तृकरणयोस्तृतीया (b) येनाङ्गविकारः
(c) दिवः कर्म च (d) जनिकर्तुः प्रकृतिश्च

Ans : (b) 'अक्ष्णा काणः' इस वाक्य में अक्ष्णा में तृतीया विभक्ति येनाङ्गविकारः सूत्र से हुआ है। येनाङ्गविकारः का अर्थ- जिस विकृत अङ्ग के द्वारा अङ्गी का विकार लक्षित हो उस अङ्ग में तृतीया विभक्ति होती है।

31. कर्तुः क्रियया ईप्सिततमं किम् -

(a) कर्ता -कारकम् (b) करण-कारकम्
(c) कर्म कारकम् (d) अधिकरण कारकम्

Ans : (c) 'कर्तुरीप्सिततमं कर्म' कर्ता अपनी क्रिया के द्वारा जिसको सबसे अधिक चाहे उसकी कर्म संज्ञा होती है। 'साधकतमं करणम्' - अपने कार्य सिद्धि में कर्ता जिसकी सबसे अधिक सहायता ले वही करण है।

32. अधिहरि इत्यत्र कः समासः अस्ति-

(a) केवल समासः (b) उपपद समासः
(c) तत्पुरुषः (d) अव्ययीभावः

Ans : (d) अधिहरि में अव्ययीभाव समास है क्योंकि अव्ययीभाव समास में पूर्व पद प्रधान होता है- प्रायेणपूर्वपदार्थप्रधानोऽव्ययीभावः। किसी विशेष संज्ञा से मुक्त केवल समास होता है- 'विशेष संज्ञा विनिर्मुक्तः केवल समासः'। प्रायेणोत्तरपदार्थप्रधानस्तत्पुरुषः- जिस समास का उत्तर पद प्रधान हो वह तत्पुरुष होता है।

33. नित्य समासो नाम -

(a) अस्वपदविग्रहः (b) विकल्पो न भवति
(c) स्वपद विग्रहः (d) विग्रहवान्

Ans : (a) समास नित्य होने पर लौकिक विग्रह करने की स्थिति में अस्वपद विग्रह किया जाता हैं जबकि वैकल्पिक समास में स्वपद विग्रह किया जाता है।

34. संयोगात्मक भाषा-

(a) उर्दू (b) संस्कृतम्
(c) चीनी (d) हिन्दी

Ans : (b) संयोगात्मक भाषा के अन्तर्गत संस्कृत भाषा का वर्णन मिलता है। संस्कृत 'सम्' उपसर्ग पूर्वक √कृ धातु क्त प्रत्यय के योग से बना है हिन्दी वियोगात्मक भाषा के अन्तर्गत आती है। तथा चीनी अयोगात्मक भाषा है।

35. निर्दिष्टेषु स्पर्शः कः?

(a) म् (b) ह्
(c) अ (d) ल्

Ans : (a) कादयोमावसानाः स्पर्शाः ' क् से लेकर म् पर्यन्त वर्णों की स्पर्श संज्ञा होती है। ह् की ऊष्म संज्ञा तथा अ की अच् संज्ञा होती है।

36. तालव्येषु अन्तर्भवति-

(a) अ (b) क्
(c) ष् (d) श्

Ans : (d) 'इचुयशानां तालुः' - इ, च वर्ग, य और श का उच्चारण स्थान तालु है। क् का - कण्ठ तथा अ का भी उच्चारण स्थान कण्ठ है। ष् वर्ण का उच्चारण स्थान मूर्धा है।

37. ''याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा'' इत्यस्ति-

(a) रघुवंशमहाकाव्ये (b) किरातार्जुनीये
(c) कादम्बर्याम् (d) मेघदूते

Ans : (d) याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा यह श्लोक कालिदास विरचित मेघदूत का है। पूर्वमेघदूत में विरही यक्ष मेघ से अपनी प्रियतमा के पास सन्देश ले जाने की याचना करता है कि श्रेष्ठ लोगों से निष्फल याचना भी दुष्ट लोगों की सफल याचना से अच्छी होती है।

38. बाणभट्ट विरचितमस्ति-

(a) बुद्धचरितम् (b) हर्षचरितम्
(c) नैषधीयचरितम् (d) दशकुमारचरितम्

Ans : (b) महाकवि बाण की पाँच रचनायें प्राप्त होती हैं- जिनमें (1) कादम्बरी (2) हर्षचरितम् (3) पार्वतीपरिणय (4) मुकुटताडितक और (5) चण्डीशतकम्। बुद्धचरितम् अश्वघोष द्वारा विरचित महाकाव्य है। नैषधीयचरितम् के रचयिता श्री हर्ष है तथा दण्डी द्वारा विरचित दशकुमारचरितम् है।

39. प्रकरणम् अस्ति-

(a) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (b) मृच्छकटिकम्
(c) रत्नावली (d) वेणीसंहारम्

Ans : (b) मृच्छकटिकम् शूद्रक रचित एक प्रकरण ग्रन्थ है। इसमें 10 अङ्क है। रूपक के दश भेदों में से प्रकरण भी रूपक का ही एक भेद है। अभिज्ञानशाकुन्तलम् महाकविकालिदास विरचित विश्व प्रसिद्ध नाटक है। रत्नावली श्रीहर्ष द्वारा रचित नाटिका है। वेणीसंहारम् भट्टनारायण विरचित है।

40. 'मृच्छकटिकस्य' रचयिता कः अस्ति-

(a) भासः (b) कालिदासः
(c) शूद्रकः (d) भट्टनारायणः

Ans : (c) मृच्छकटिकम् के रचयिता शूद्रक हैं यह एक प्रकरण ग्रन्थ है। मृच्छकटिकम् नाटक में 10 अङ्क है। अभिज्ञानशाकुन्तलम् के रचयिता कालिदास हैं। नायिका शकुन्तला अप्रतिमा सुन्दरी है। दुष्यन्त धीरोदात्त कोटि के नायक हैं।

41. मुद्राराक्षसेऽङ्गीरसः वर्तते-

(a) शृंगाररसः (b) करुणरसः
(c) हास्यरसः (d) वीररसः

Ans : (d) मुद्राराक्षस विशाखदत्त विरचित सात अङ्कों का नाटक है। इसका नायक चन्द्रगुप्त है तथा इस नाटक में नायिका का अभाव है। मुद्राराक्षस नाटक में प्रायः सभी रस मिलते हैं किन्तु वीर रस अङ्गी रस है। अतः इस नाटक में वीर रस की प्रधानता है।

42. 'ऋषीनां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति'' इत्यस्ति-

(a) अभिज्ञानशाकुन्तले
(b) मृच्छकटिके
(c) उत्तररामचरिते
(d) मुद्राराक्षसे

Ans : (c) 'ऋषीनां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति इसका वर्णन महाकवि भवभूति द्वारा रचित उत्तररामचरितम् नाटक में मिलता है। इस नाटक में सात अङ्क है तथा उत्तररामचरितम् नाटक में ही छायांक का वर्णन मिलता है।

43. अधोलिखितेषु किं रूपकं नास्ति?

(a) भाणः (b) समवकारः
(c) आख्यायिका (d) वीथी

Ans : (c) आख्यायिका रूपक के अन्तर्गत नहीं है बल्कि उपरूपक है। रूपक के 10 भेद तथा उपरूपक के 18 भेद होते हैं रूपक के 10 भेद निम्न हैं-
रूपकमथ प्रकरणं भाण व्यायोग समवकार डिमा।
ईहामृगाङ्क वीथ्यः प्रहसनम् इति रूपकाणि दश।।

44. काव्यादर्शकारः कः अस्तिः

(a) रुद्रटः (b) वामनः
(c) दण्डी (d) राजशेखरः

Ans : (c) काव्यादर्श के रचयिता महाकवि दण्डी हैं काव्यादर्श में दश परिच्छेद है। रुद्रट रचित काव्यालङ्कार है जिसमें 16 अध्याय एवं 714 अध्याय हैं। वामन का काव्यालङ्कारसूत्र है जो 5 अधिकरणों में है। जबकि 18 अध्याय वाली काव्यमीमांसा राजशेखर रचित है।

45. अनलङ्कृती पुनः क्वापि इति केनोक्तम् -

(a) विश्वनाथेन (b) मम्मटेन
(c) भामहेन (d) दण्डिना

Ans : (b) मम्मट द्वारा रचित 'काव्यप्रकाश' में अनलङ्कृती पुनः क्वापि का वर्णन मिलता है। काव्यप्रकाश में दश उल्लास हैं काव्यप्रकाश में काव्य प्रकाश की परिभाषा है। तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि।

46. अद्भुत् रसस्य स्थायीभावः कः अस्ति-

(a) इतिः (b) शोकः
(c) विस्मयः (d) जुगुप्सा

Ans : (c) अद्भुत् रस का स्थायीभाव विस्मय है। शृंगार रस का स्थायीभाव रति है। करुणरस का स्थायीभाव शोक है तथा वीभत्स रस का स्थायीभाव जुगुप्सा है।

47. सान्तरार्थनिष्ठो व्यापारो भवति -

(a) व्यञ्जनाव्यापारः
(b) अभिधाव्यापारः
(c) लक्षणाव्यापारः
(d) तात्पर्याभिधोव्यापारः

Ans : (c) सान्तरार्थनिष्ठो व्यापारः लक्षणाव्यापारः भवति। सान्तरार्थनिष्ठ व्यापार ही लक्षणाव्यापार कहलाता है।

48. नाटके न्यूनतः कति अङ्काः भवन्ति?

(a) पञ्च (b) सप्त
(c) दश (d) षट्

Ans : (a) नाटक में कम से कम पाँच अंक तथा अधिक से अधिक 10 अंक होने चाहिए इसविषय में एक श्लोक प्रसिद्ध है-

सुखदुःखसमुद्भूति नाना रसनिरन्तरम् ।
पञ्चादिका दशपरास्तत्राङ्का परिकीर्तिताः ॥

49. शृंगाररसः कतिविधाः -

(a) द्विविधः (b) चतुर्विधः
(c) त्रिविधः (d) पञ्चविधः

Ans : (a) शृंगार रस के दो भेद हैं- (1) सम्भोग शृंगार (2) विप्रलम्भ शृंगार। सम्भोग शृंगार असंख्य होता है जबकि विप्रलम्भ शृंगार के पाँच भेद होते हैं।

50. अलकापुर्याः वर्णनं कुत्र प्राप्यते?

(a) कादम्बर्याम्
(b) रघुवंशे
(c) मेघदूते
(d) शाकुन्तले

Ans : (c) कालिदास विरचित मेघदूत में अलकापुरी का वर्णन मिलता है जो कि कैलाश पर्वत पर स्थित है तथा यक्षों (कुबेर) की नगरी है। कादम्बरी में विदिशा का वर्णन मिलता है जो कि शूद्रक की राजधानी थी, शाकुन्तलम् में हस्तिनापुर का वर्णन है जो महाराज दुष्यन्त की राजधानी थी।

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, दिसम्बर-2005

संस्कृत

व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

1. को नाम देवः द्युस्थानीय?

(a) इन्द्रः (b) अग्निः
(c) वायुः (d) सूर्यः

Ans : (d) यास्क ने समस्त देवताओं को तीन भागों में विभक्त किया है- (1) पृथिवीस्थानीय (2) अन्तरिक्षस्थानीय (3) द्युस्थानीय। सूर्य द्युस्थानीय देवता हैं। अग्नि पृथिवी स्थानीय है। इन्द्र और वायु अन्तरिक्षस्थानीय देवता हैं।

2. 'जैमिनीय ब्राह्मण' केन वेदेन सम्पृक्तम्?

(a) ऋग्वेदेन (b) यजुर्वेदेन
(c) सामवेदेन (d) अथर्ववेदेन

Ans : (c) सामवेद की सहस्त्र शाखाएँ बताई गयी है किन्तु 3 ही प्राप्त होती है- (1) कैथुम् (2) राणायनीय (3) जैमिनीय। अतः जैमिनीय ब्राह्मण, जैमिनीय शाखा से सम्बन्धित है।

3. वेदकालनिरूपणे कः ज्योतिषमवलम्बते?

(a) विन्टरनित्सः (b) मैक्समूलरः
(c) वेबरः (d) बालगङ्गाधर तिलकः

Ans : (d) वेदों के समय निरूपण में श्री बालगङ्गाधर तिलक महोदय ने ज्योतिष का सहारा लिया था इनके अनुसार वेदों का समय 4000ई.पू. से 6000 ई.पू. है।

4. मैत्रेयी याज्ञवल्क्य सम्बद्धः कस्यामुपनिषदि उपलभ्यते-

(a) कठोपनिषदि (b) केनोपनिषदि
(c) ईशोपनिषदि (d) बृहदारण्यकोपनिषदि

Ans : (d) मैत्रेयी और याज्ञवल्क्य से सम्बन्धित बृहदारण्यकोपनिषद् है। शुक्लयजुर्वेद से सम्बन्धित बृहदारण्यकोपनिषद् में मैत्रेयी का वर्णन मिलता हैं यजुर्वेद की दो शाखायें हैं। केनोपनिषद् सामवेद से सम्बन्धित हैं तथा कठोपनिषद् कृष्णयजुर्वेद से सम्बन्धित है।

5. कस्य देवस्य चाराः प्रसिद्धाः?

(a) वरुणस्य (b) सोमस्य
(c) अग्नेः (d) इन्द्रस्य

Ans : (a) वरुण चाराः एव धृवृत है अर्थात् वरुण संसार को नियमों में चलाने का व्रत धारण किये हुये हैं। सोम को मौञ्जवान् एवं पवमान कहते हैं। अग्नि हविष्मान् नाम से विश्व प्रसिद्ध है।

6. यास्कमते कति पद जातानि सन्ति-

(a) पञ्च (b) त्रीणि
(c) चत्वारि (d) सप्त

Ans : (c) यास्क ने चार पद जातो का वर्णन किया है।
यास्कमते चत्वारि पदजातानि सन्ति। (नाम, आख्यात उपसर्ग और निपात)

7. कः प्रणेता वेदाङ्गज्योतिषस्य-

(a) पाणिनिः (b) कात्यायनः
(c) भट्टहरिः (d) लगधाचार्यः

Ans : (d) लगधाचार्य ने वेदाङ्ग ज्योतिष की रचना की थी। पाणिनि अष्टाध्यायी के लिए प्रसिद्ध है। भर्तृहरि ने वाक्यपदीय लिखकर विश्व में प्रसिद्धि पायी थी। वररुचि कात्यायन ने वार्तिकों की रचना की थी।

8. हरिश्चन्द्रोपाख्यानं कस्मिन् ब्राह्मणे उपलभ्यते?

(a) ऐतरेयब्राह्मण (b) गोपथब्राह्मण
(c) शतपथब्राह्मण (d) पञ्चविंश ब्राह्मण

Ans : (a) हरिश्चन्द्र उपाख्यान ऐतरेय ब्राह्मण में प्राप्त होता है ऐतरेय ब्राह्मण ऋग्वेदीय ब्राह्मण है। शतपथब्राह्मण यजुर्वेदीय ब्राह्मण है। जबकि गोपथ ब्राह्मण अथर्ववेदीय ब्राह्मण है।

9. भूमिसूक्तं कं वेदम् विषयीकरोति ?

(a) अथर्ववेदम् (b) ऋग्वेदम्
(c) सामवेदम् (d) यजुर्वेदम्

Ans : (a) चारो वेदों में अथर्ववेद अर्वाचीन तथा लौकिक है। अथर्ववेद से सम्बन्धित कुछ सूक्त निम्न है-
(1) भूमि सूक्त (2) गौसूक्त (3) पृथ्वीसूक्त इत्यादि।

10. को नाम देवः 'वृत्रहा' इत्युच्यते ?

(a) अग्निः (b) रुद्रः
(c) बृहस्पतिः (d) इन्द्रः

Ans : (d) इन्द्र को वृत्रहा नाम से जाना जाता है इसके अलावा वह त्वष्टा, वज्रबाहु, वज्रहस्त, सोमपा आदि नामों से भी जाने जाते हैं। अग्नि को दमूनस, अंगिर, यज्ञकेतु एवं रुद्र की श्वेतवर्णी तथा बृहस्पति सप्तमुख इत्यादि नामों से भी जाना जाता है।

11. सामवेदस्य प्रमुखः प्रतिपाद्यविषयोऽस्ति?

(a) स्तुतिः (b) ज्ञानम्
(c) गानम् (d) याग्ययज्ञादिकम्

Ans : (c) सामवेद का प्रमुख प्रतिपाद्य विषय गान है। स्तुति, मन्त्र यजुर्वेद का प्रतिपाद्य विषय है तथा याग्ययज्ञादि ऋग्वेद का विषय है।

12. कति मण्डलानि ऋग्वेदे विलसन्ति?

(a) पञ्च (b) नव
(c) एकादश (d) दश

Ans : (d) ऋग्वेद में दश मण्डल, 1028 सूक्त एवं 10552 मन्त्र हैं। प्रत्येक मण्डल के अलग-अलग ऋषि एवं देवता है तथा प्रत्येक मण्डल में अलग-अलग देवताओं की स्तुति की गई है।

13. कारणभावाच्च इत्यनेन पुष्यते-

(a) पुरुषबहुत्वम् (b) प्रकृतिसिद्धि
(c) सृष्टिप्रक्रिया (d) सत्कार्यवादः

Ans : (d) सांख्यदर्शन में परिणामवाद को ही सत्कार्यवाद के नाम से जाना जाता है।

असदकरणादुपादानग्रहणात् सर्वसम्भवाभावात् ।
शक्तस्य शक्यकरणात् कारणभावाच्च सत्कार्यम् ।।

14. कार्यं भवति-

(a) केवलं प्रकृतिस्वरूपं
(b) केवलं विकृतिरूपम्
(c) प्रकृतिस्वरूपमपि विकृतिरूपमपि
(d) न प्रकृतिस्वरूपं न विकृति

Ans : (b) सांख्याचार्यों ने सांख्यदर्शन में कार्य को केवल विकृतिरूप माना है। प्रकृतिरूप कार्य का विषय नही बन सकता है।

15. अकर्तृत्त्वमस्य धर्मः -

(a) प्रधानस्य (b) अहङ्कारस्य
(c) पुरुषस्य (d) ज्ञानेन्द्रियाणाम्

Ans : (c) अकर्तृत्त्व पुरुष का धर्म है। कुछ विद्वान् पुरुष को इस प्रकार बताया है-

जनममरणकरणानां प्रतिनियमादयुगपत्प्रवृतेश्च।
पुरुषं बहुत्वं सिद्धं त्रैगुण्यविपर्ययाच्चैव ।।

16. प्रकृतिर्वस्तुतो बध्नाति?

(a) स्वात्मानम् (b) पुरुषम्
(c) अहङ्कारम् (d) आनन्दम्

Ans : (a) प्रकृति अपने सातों रूपों (अज्ञान, धर्म, अधर्म, वैराग्य, अवैराग्य ऐश्वर्य एवं अनैश्वर्य) से अपने द्वारा अपने को बांधती है और वही पुरुषार्थ की सिद्धि के लिए ज्ञान से अपने को मुक्त करती है।

17. विहितकर्मणां विधिना परित्यागः ?

(a) तितिक्षा (b) उपरतिः
(c) दमः (d) श्रद्धा

Ans : (b) विहितकर्मणां विधिना परित्यागः - उपरतिः ।
शीतोष्णादिद्वन्द्वसहिष्णुता- तितिक्षा
गुरुपदिष्टवेदान्तवाक्येषु विश्वासः -श्रद्धा
बाह्येन्द्रियाणां तद्व्यतिरिक्तविषयोभ्यो निवर्तनम् - दमः।

18. वेदान्तानुसारं लिङ्गशरीरस्य अवयवाः सन्ति?

(a) सप्तदश (b) षोडश
(c) पञ्चविंशति (d) अष्टादश

Ans : (a) वेदान्त में लिङ्गशरीर के सप्तदश (17) अवयव हैं- पञ्च ज्ञानेन्द्रियाँ (श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, जिह्वा, घ्राण) +
पञ्च कर्मेन्द्रियाँ (वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ) +
पञ्च वायु (प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान) + और मन तथा बुद्धि।

19. अखिलशरीरवर्ती वायुः विद्यते ?

(a) प्राणः (b) अपानः
(c) व्यानः (d) उदानः

Ans : (c) हृदि प्राणो गुदेऽपान, समानः नाभिसंस्थितः।
उदानः कण्ठ देशे च, व्यानः सर्वशरीरगः।।
अतः सम्पूर्ण शरीर में व्यान नामक वायु रहती है।

20. शब्दस्पर्शौ अभिव्यञ्ज्येते?

(a) पञ्चीकृताकाशे (b) पञ्चीकृतवायौ
(c) पञ्चीकृततेजसि (d) पञ्चीकृतपृथिव्याम्

Ans : (b) शब्द और स्पर्श नामक द्रव्यों से पञ्चीकृत वायु अभिव्यञ्जित होता है। यह वायु 5 प्रकार का होता है– (1) प्राण (2) अपान (3) व्यान (4) उदान (5) समान।

21. कारणं तदुच्यते यत् कार्यात् भवति?

(a) पूर्ववर्ति (b) परवर्ति
(c) नियतपूर्ववृत्ति (d) समकालवर्ति

Ans : (c) कार्य से पूर्व क्षण में जिसकी वर्तमानता नियत या अवश्यम्भावी रूप से हो वही उस कार्य का कारण होगा। अतः नियतपूर्ववर्ति उदाहरण सही है।

22. यत्र धूमस्तत्राग्निः' इति साहचर्य नियमः?

(a) परामर्शः (b) पक्षधर्मता
(c) द्वितीयधूमज्ञानम् (d) व्याप्तिः

Ans : (d) 'यत्र धूमस्तत्राग्निः' इति साहचर्य नियमः व्याप्ति। जहाँ जहाँ धुँआ है वहीं वहीं अग्नि का पाया जाना ही इस प्रकार के साहचर्य का नियम व्याप्ति होती है।

23. संज्ञासंज्ञिसम्बन्धज्ञानस्य कारणम् ?

(a) प्रत्यक्षप्रमाणम् (b) शब्दप्रमाणम्
(c) अनुमानप्रमाणम् (d) उपमानप्रमाणम्

Ans : (d) संज्ञासंज्ञि सबन्ध ज्ञान का कारण अनुमान प्रमाण है। क्योंकि अनुमिति का जो करण है वह अनुमान है। अनुमिति करणमनुमानम् ।।

24. अग्निना सिञ्चति' इति उदाहरणम् अस्ति?

(a) योग्यताविषयम् (b) अकांक्षाविषयम्
(c) सन्निधिविषयम् (d) उपमानविषयम्

Ans : (a) अग्निना सिञ्चति (वह अग्नि से सींचता है) यहाँ सेचन क्रिया अग्नि के द्वारा हो रही है जबकि सेंचन कार्य जल का है न कि अग्नि का अत; यह योग्यता विषय का उदाहरण है।

25. गुणसन्धि विधायकं सूत्रम् -

(a) मिदेर्गुणः (b) आद्गुणः
(c) अदेङ्गुणः (d) गुणो यङ्लुको

Ans : (b) गुणसन्धि विधायक सूत्र आद्गुणः है = यदि अ/आ के बाद कोई भी स्वर आये तो पूर्व एव पर के स्थान पर गुण एकादेश होता है। गुण कितने हैं यह अदेङ्गुणः सूत्र से पता चलता हैं अत् +एङ् = अदेङ्, अर्थात् अत् और एङ् को गुण कहते हैं। अत् में अ और एङ् में ए, ओ आते हैं अर्थात् अ ए और ओ की गुण संज्ञा होती है।

26. क्तक्तवतू प्रत्ययोः का सञ्ज्ञा-

(a) घि (b) स्त्री
(c) निष्ठा (d) नदी

Ans : (c) क्तक्तवतू = क्त च क्तवतु च = क्तक्तवतू यहाँ पर इतरेतर द्वन्द्व समास है। क्तक्तवतू की संज्ञा निष्ठा होती हैं यूस्त्याख्यौ नदी होता है द्वन्द्वे घि से द्वन्द्व समास घि संज्ञक होता है।

27. स्वादिपञ्च प्रत्ययानां का सञ्ज्ञा-

(a) प्रत्याहारः (b) अनुनासिकः
(c) सर्वनामस्थान (d) प्रातिपदिकम्

Ans : (c) स्वादिष्वसर्वनामस्थाने सूत्र से सु, औ, जस्, अम्, औट् इन पाँच प्रत्ययों की सर्वनामस्थान सञ्ज्ञा होती है।
सुडनपुंसकस्य सूत्र से नपुंसकलिङ्ग को छोड़कर पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग शब्दों के आगे लगने वाले सुट् सर्वनामस्थान कहलाते हैं।

28. 'सम्प्रदाने' का विभक्ति :-

(a) चतुर्थी (b) पञ्चमी
(c) षष्ठी (d) सप्तमी

Ans : (a) ''चतुर्थी सम्प्रदाने'' सूत्र से सम्प्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति होती है। ''अपादाने पञ्चमी'' सूत्र से अपादान कारक में पञ्चमी विभक्ति तथा षष्ठी शेषे सूत्र से षष्ठी विभक्ति एवं सप्तम्यधिकरणे च सूत्र से अधिकरण कारक में सप्तमी विभक्ति होती है।

29. समीचीनां तालिकां चिनुत-

(A) वृद्धिः	1. न वेति
(B) उपधा	2. एकाल् प्रत्ययः
(C) अपृक्तम्	3. आदैच्
(D) विभाषा	4. अलोऽन्त्यात्पूर्व

कूट :

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	3	4	2	1
(b)	1	2	4	3
(c)	3	1	4	2
(d)	2	1	3	4

Ans : (a) वृद्धिरादैच् सूत्र से आत् और ऐच् की वृद्धि संज्ञा होती है। अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा होता है। अपृक्त एकाल् प्रत्ययः तथा न वेति विभाषा होता है। विभाषा का अर्थ -विकल्प होता है।

30. पुष्पेभ्यो स्पृहयति - अत्र केन सूत्रेण विभक्ति ?

(a) अपादाने पञ्चमी (b) रुच्यर्थानां प्रीयमाणः
(c) कर्तृकर्मणोः कृतिः (d) स्पृहेरीप्सितः

Ans : (d) पुष्पेभ्यो स्पृहयति इस उदाहरण में स्पृहेरीप्सितः सूत्र से पुष्पेभ्यो में चतुर्थी विभक्ति हुई है। रुच्यर्थानां प्रीयमाण = रुच्यर्थक धातुओं के योग में प्रीयमाण की सम्प्रदानसंज्ञा होती है तथा चतुर्थी सम्प्रदाने से चतुर्थी विभक्ति होती है। कर्तृकर्मणोः कृति सूत्र से कृदन्त के योग में कर्ता और कर्म में षष्ठी विभक्ति होती है।

31. क्रिययायमभिप्रैति सोऽपि-

(a) कर्म (b) सम्प्रदान
(c) अपादानम् (d) करणम्

Ans : (b) क्रिययायमभिप्रैति सोऽपि सम्प्रदानम्। अर्थात् अकर्मक क्रिया के द्वारा कर्ता जिसको सन्तुष्ट करना चाहता है वह भी सम्प्रदान सञ्ज्ञक होता है। जैसे– पत्ये शेते (वह पति के लिए सोती है)। कर्तुरीप्सिततमं कर्म। कर्तृकरणयोस्तृतीया एवं ध्रुवमपायेऽपादनम् होता है।

32. 'पंञ्चानां गङ्गानाम् समाहारः = पञ्चगङ्गम्' इत्यत्र कः समासः?

(a) तत्पुरुषः (b) द्विगुः
(c) कर्मधारयः (d) अव्ययीभावः

Ans : (d) पञ्चानां गङ्गानां समाहारः = पञ्चगङ्गम् । नदीभिश्च सूत्र से संख्या वाचक शब्द का जब नदी वाचक शब्द के साथ समास होता है तो वह अव्ययीभाव समास कहलाता है। नदीभिश्च सूत्र संख्यावाची द्विगुः सूत्र का बाधक सूत्र है।

33. 'उपराजम्' - अत्र समासान्तः कः ?

(a) टच् (b) अच्
(c) अ (d) अम्

Ans : (a) राज्ञः समीपम् = उपराजम् (अव्ययीभाव समास) उपराजम् में अनश्च सूत्र से समासान्त टच् प्रत्यय की प्राप्ति हुई। टच् में अ बचता है। अतः उपराजम् में टच् प्रत्यय है।

34. वियोगात्मक भाषा अस्ति?

(a) संस्कृतम् (b) प्राकृतम्
(c) हिन्दी (d) लैटिन

Ans : (c) वियोगात्मक भाषा के अन्तर्गत हिन्दी भाषा आती है जबकि संस्कृत भाषा संयोगात्मक भाषा के अन्तर्गत समाहित है। लैटिन विदेशी भाषा मानी गयी है।

35. 'च' वर्णः कुत्र अन्तर्भवति?

(a) अनुनासिकः (b) स्पर्शः
(c) स्वरः (d) संघर्षः

Ans : (b) 'कादयोमावसानाः स्पर्शाः' सूत्र से ज्ञात होता है कि क् से लेकर म् वर्ण पर्यन्त स्पर्श संज्ञक होते हैं। अतः च भी स्पर्श के अन्तर्गत आता है। मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः सूत्र से मुख और नासिका से उच्चारित वर्ण अनुनासिक होते हैं।

36. मूर्धन्येषु अन्तर्भवति ?

(a) ष् (b) य्
(c) व् (d) श्

Ans : (a) तीन प्रकार से कहे जाने वाले (ष्) मूर्धा, स् (दन्त) श् (तालव्य) उच्चारण के आधार पर इनकी संज्ञा निर्धारित की गयी है। य् (तालु) होता है। व् (दन्त+ओष्ठ) होता है। अतः ष् मूर्धा होता है।

37. 'शैशवेऽभनस्तविद्यानाम्' इत्यस्ति-

(a) किरातार्जुनीये (b) बुद्धचरिते
(c) मेघदूते (d) रघुवंशमहाकाव्ये

Ans : (d) यह श्लोक महाकवि कालिदास विरचित रघुवंश महाकाव्य के प्रथम सर्ग का 8वाँ श्लोक है जो इस प्रकार है-

शैशवेऽभ्यस्तविद्यानां यौवने विषयैषिणाम् ।
वार्धके मुनिवृत्तीनां योगेनान्ते तनुत्यजाम् ।।

38. 'अश्वघोषविरचितम्' अस्ति?

(a) रघुवंश महाकाव्यम् (b) दशकुमारचरितम्
(c) बुद्धिचरितम् (d) हर्षचरितम्

Ans : (c) बुद्धचरितम् अश्वघोषविरचित महाकाव्य है जो 28 सर्गो में विभक्त है। रघुवंशम् कालिदास का महाकाव्य हैं बाणभट्ट विरचित हर्षचरितम् तथा दशकुमारचरितम् महाकवि दण्डी द्वारा रचित है।

39. नाटिकाऽस्ति -

(a) शाकुन्तलम् (b) मृच्छकटिकम्
(c) रत्नावली (d) वेणीसंहारम्

Ans : (c) रत्नावली श्रीहर्ष द्वारा रचित 4 अङ्को की नाटिका है। इसका नायक उदयन है जो धीरललित नायक है तथा नायिका रत्नावली है। मृच्छकटिकम् शूद्रक का प्रकरण ग्रन्थ है जिसमें 10 अंक है। शाकुन्तलम् कालिदास का नाटक है जिसमें 7 अंक है।

40. वेणीसंहारस्य रचयिता कः?

(a) भासः (b) कालिदासः
(c) शूद्रकः (d) भट्टनारायणः

Ans : (d) वेणीसंहार भट्टनारायण द्वारा रचित 6 अङ्कों का नाटक है। जिसके नायक भीम हैं तथा नायिका द्रौपदी हैं। मृच्छकटिक शूद्रक की रचना है जिसमें 10 अङ्क हैं।

41. उत्तररामचरिते अङ्गीरसः -

(a) शृंगार रसः (b) करुणरसः
(c) हास्य रसः (d) वीररसः

Ans : (b) 'एकोरसः करुण एव निमित्त भेदात्' इस श्लोक के आधार पर कहा जा सकता है कि 'उत्तररामचरितम्' में प्रधान रस करुण ही है क्योंकि 'उत्तररामचरितम्' के रचयिता महाकवि भवभूति करुण रस को ही रस मानते हैं बाकी सब निमित्त मात्र है। अतः करुण ही अंगी रस है।

42. ''पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलम्' इत्यस्ति-

(a) उत्तररामचरिते (b) रघुवंशे
(c) अभिज्ञानशाकुन्तले (d) मृच्छकटिके

Ans : (c) पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलम् । युष्मास्वपीतेषु या। यह श्लोक महाकवि कालिदास विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलं के चतुर्थ अङ्क के श्लोकचतुष्टय के अन्तर्गत आता है। इस श्लोक में महर्षि कण्व सबसे शकुन्तला को आज्ञा देने के लिए कहते हैं जो कि अपने पतिगृह जा रही है।

43. चत्वारः सन्धयोः कुत्र भवन्ति -

(a) नाटके (b) प्रकरणे
(c) नाटिकायाम् (d) भाणे

Ans : (c) नाटिका में चार सन्धियाँ होती हैं जबकि नाटक में पाँचों सन्धियाँ होती है। नाटकं पञ्चसन्धि समन्वितं।

44. काव्यालङ्कार सूत्रवृत्तिकारः कः अस्ति -

(a) भामह (b) वामन
(c) दण्डी (d) रुद्रट

Ans : (b) काव्यालङ्कारसूत्र वामन का है जिसमें 5 अधिकरण है। जबकि भामह का काव्यालङ्कार है जिसमें 6 परिच्छेद है। दण्डी के काव्यादर्श में दश परिच्छेद हैं। रुद्रट के काव्यालङ्कार में 16 अध्याय तथा 714 आर्याये हैं।

45. 'शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली इति केनोक्तम्

(a) भामहेन (b) वामनेन
(c) दण्डिना (d) विश्वनाथेन

Ans : (c)'शरीरं तावदिष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली यह दण्डी का काव्यलक्षण है जबकि वामन ने रीति को काव्य की आत्मा कहकर लक्षण दिया है- 'रीतिरात्मा काव्यम्' । भामह का काव्य लक्षण इस प्रकार है। शब्दार्थौ सहितौ काव्यम् । वाक्यं रसात्मकं काव्यम् कहकर विश्वनाथ ने काव्य का लक्षण प्रस्तुत किया।

46. वीररसस्य स्थायीभावः कः अस्ति?

(a) क्रोधः (b) शोकः
(c) उत्साहः (d) भयः

Ans : (c) वीररस का स्थायी भाव उत्साह है। शोक करुणरस का स्थायी भाव है। भय का भयानक तथा क्रोध का स्थायीभाव रौद्र है।

47. वाच्यार्थप्रतिपादिका शक्तिर्भवन्ति?

(a) अभिधा (b) लक्षणा
(c) व्यञ्जना (d) तात्पर्या

Ans : (a) वाच्यार्थप्रतिपादिका शक्तिर्भवति - अभिधा।
अभिधा शक्ति वाच्यार्थ की प्रतिपादिका होती है।

48. प्रकरणे कति अङ्का भवन्ति ?

(a) पञ्च (b) षट्
(c) दश (d) सप्त

Ans : (c) रूपक के 10 प्रभेदो के अन्तर्गत प्रकरण भी रूपक का ही एक प्रभेद है। प्रकरण में 10(दश) अङ्क होते हैं तथा इसका नायक धीरललित कोटि का होता है।

49. महाकाव्ये न्यूनतः कति सर्गाः भवन्ति?

(a) पञ्चदश (b) विंशतिः
(c) अष्ट (d) दश

Ans : (c) महाकाव्य में न्यूनतम् 8सर्ग होने चाहिए जो निम्न श्लोक से ज्ञात होता है-
सर्गबन्धो महाकाव्यम् तत्र नायको सुरः। एकवृत्तयैः पद्यैरवसानेऽन्यवृतकैः
नातिस्वल्पाः नातिदीर्घाः सर्गा अष्टाधिका इह।।

50. 'अच्छोद वर्णन' कुत्र प्राप्यते?

(a) हर्षचरिते (b) कादम्बर्याम्
(c) मेघदूते (d) रघुवंशे

Ans : (b) अच्छोद सरोवर का वर्णन बाणभट्ट रचित गद्यकाव्य ''कादम्बरी'' में मिलता है। कालिदास विरचित मेघदूत में रामगिरि आश्रम का वर्णन मिलता है जबकि रघुवंश महाकाव्य में सूर्यवंश के 31 राजाओं का वर्णन मिलता है।

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, जून-2006

संस्कृत

व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

1. 'नासत्या' इति कस्य विशेषणम् अस्ति-

(a) अग्नेः (b) अश्विनोः
(c) वरुणस्य (d) इन्द्रस्य

Ans : (b) नासत्या अश्विनौ का विशेषण है इसी प्रकार घृतलोम अग्नि का, घृतव्रत वरुण का तथा सोमपा इन्द्र का विशेषण है।

2. देवता इन्द्रोऽस्ति -

(a) पृथिवीस्थानीया (b) अन्तरिक्षस्थानीया
(c) द्युस्थानीया (d) पातालस्थानीया

Ans : (b) इन्द्र, वायु और रुद्र अन्तरिक्ष स्थानीय देवता हैं। पृथ्वी स्थानीय देवता के अन्तर्गत अग्नि है तथा द्युस्थानीय के अन्तर्गत विष्णु आते हैं।

3. 'आनन्द ब्राह्मणो विद्वान् न बिभेति कुतश्चन्' वर्तते-

(a) बृहदारण्यके (b) तैत्तिरीये
(c) केनोपषदि (d) छान्दोग्ये

Ans : (b) आनन्दः ब्राह्मणो विद्वान् न बिभेति' यह तैत्तिरीय में प्राप्त होता है। तैत्तिरीय यजुर्वेद के अन्तर्गत आता है।

4. 'वेदाङ्गेषु व्याकरणम्' उपमीयते-

(a) हस्तेन (b) मुखेन
(c) पादेन (d) चक्षुषा

Ans : (b) वेदाङ्ग में व्याकरण को वेदपुरुष का मुख बताया गया है। हाथों को कल्प। ज्योतिष को चक्षु तथा छन्द को वेदपुरुष के पादों के रूप में माना जाता है।

5. 'श्वेताश्वतरोपनिषद्' केन संपृक्ता -

(a) ऋग्वेदेन (b) सामवेदेन
(c) अथर्ववेदेन (d) कृष्णयजुर्वेदेन

Ans : (d) यजुर्वेद की दो शाखायें- (1) शुक्लयजुर्वेद तथा (2) कृष्णयजुर्वेद। श्वेताश्वतरोपनिषद् का सम्बन्ध कृष्णयजुर्वेद से है।

6. चतुर्णामेव वेदानां भाष्यकारोऽस्ति -

(a) स्कन्दस्वामी (b) सायणाचार्यः
(c) उव्वटः (d) वेङ्कटमाधवः

Ans : (b) वेद जगत् में विख्यात आचार्य सायण ने ही चारों वेदों अर्थात् ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद के भाष्यकार हैं।

7. 'जगतीछन्दसि' एकस्मिन् पादे अक्षराणि सन्ति-

(a) पञ्च (b) दश
(c) षट् (d) द्वादश

Ans : (d) जगती छन्द के एक पाद अर्थात् प्रत्येक चरण में द्वादश (12) अक्षर होते हैं। इस प्रकार 12×4 = 48 वर्ण।

8. नैगमकाण्डं कुत्र वर्तते-

(a) कल्पे (b) निरुक्ते
(c) ज्योतिषे (d) व्याकरणे

Ans : (b) निरुक्त में 12 अध्याय है जो कि 3 काण्डों में विभक्त है प्रारम्भिक 3 अध्याय नैघण्टुक काण्ड, 4-6 अध्याय तक नैगमकाण्ड तथा 7-12 अध्याय तक का भाग दैवतकाण्ड कहलाता है।

9. ऋग्वेदे अधिकतमानां सूक्तानां देवता अस्ति-

(a) अग्निः (b) वरुणः
(c) सोमः (d) इन्द्रः

Ans : (d) ऋग्वेद में सबसे अधिक सूक्तों वाला देवता इन्द्र है इसकी 250 सूक्तों में स्तुति की गयी है इसके बाद अग्नि की 200 सूक्तों में एवं सोम की 120 सूक्तो में तथा वरुण की 12 सूक्तो में स्तुति की गयी है।

10. 'न वै स्त्रैणानि सख्यानि सन्ति' इति वर्तते-

(a) सरमापणिसंवादे (b) यम-यमी संवादे
(c) पुरुरवा उर्वशी संवादे (d) विश्वामित्र नदी संवादे

Ans : (c) 'न वै स्त्रैणानि सख्यानि सन्ति' यह ऋग्वेद के दशम मण्डल के पुरुरवा- उर्वशी संवाद का है। अनेक योजनाएँ करने पर भी उर्वशी राजा का प्रेम स्वीकार नहीं करती जिस कारण पुरुरवा आत्महत्या के लिए उद्यत होता है तो उर्वशी कहती है कि हे राजन्। आप आत्महत्या मत करो क्योंकि स्त्रियों और भेड़ियों का हृदय मित्रता से हीन होता है।

11. शाकलशाखा कस्य वेदस्य अस्ति-

(a) ऋग्वेदस्य (b) सामवेदस्य
(c) यजुर्वेदस्य (d) अथर्ववेदस्य

Ans : (a) ऋग्वेद की अनेक शाखायें हैं किन्तु वर्तमान में निम्न उपलब्ध है- (1) शाकलशाखा (2) वाष्कलशाखा (3) शांखायन शाखा (4) माण्डूकायनशाखा (5) आश्वलायनशाखा अतः शाकल शाखा ऋग्वेद की ही शाखा है।

12. याज्ञवल्क्य मैत्रेयी संवादा कुत्र विद्यते-

(a) छान्दोग्ये (b) बृहदारण्यके
(c) तैत्तिरीये (d) कठोपनिषदि

Ans : (b) याज्ञवल्क्य -मैत्रेयी संवाद यजुर्वेद की शाखा कृष्णयजुर्वेद के बृहदारण्यक में प्राप्त होता है। इसमें याज्ञवल्क्य और मैत्रेयी का विधिवत् संवाद है।

13. सत्कार्यवादेः उत्पत्तेः पूर्वं कार्यं कीदृशम्-

(a) व्यक्तरूपेण सत् (b) अव्यक्तरूपेण सत्
(c) उभयरूपेण सत् (d) सद्सत्

Ans : (b) सत्कार्यवाद या परिणामवाद की उत्पत्ति के पहले कार्य अव्यक्तरूप में सत् था। सत्कार्यवाद की पुष्टि के लिए पाँच हेतु माने हैं। असत्कार्यवाद को न्याय या वैशेषिक स्वीकार करते हैं।

14. सांख्यमते वायोः प्रादुर्भावः कस्मात् -

(a) शब्दतन्मात्रात् (b) स्पर्शतन्मात्रात्
(c) गन्धतन्मात्रात् (d) रसतन्मात्रात्

Ans : (b) सांख्यमत में वायु का प्रादुर्भाव स्पर्शतन्मात्रा से हुआ है। वायु पाँच है- (1)प्राण, (2) अपान, (3) व्यान (4) उदान तथा (5) समान।

15. महत् इत्यस्य का वृत्तिः -

(a) अभिमानः (b) सङ्कल्प
(c) अध्यवसायः (d) आलोचनम्

Ans : (c) महत् की वृत्ति अध्यवसाय है जबकि अध्यवसाय का सम्बन्ध बुद्धि से है- ''अध्यवसायात्मिका बुद्धिः'' कहा भी गया है।

16. तुष्टि कतिविधा-

(a) सप्तविधा (b) अष्टविधा
(c) नवविधा (d) दशविधा

Ans : (c) तुष्टिर्नवधा अर्थात् तुष्टि के नव भेद हैं- प्रकृति, उपादान, काल और भाग इन नामों वाली चार आध्यात्मिक तुष्टियाँ हैं तथा शब्दादि पाँच विषयों से वैराग्य होने पर पाँच वाह्य तुष्टियाँ दोनों मिलाकर तुष्टियों के नव भेद हैं।

17. अद्वैतवेदान्तस्य विषयः कः अस्ति।

(a) जीवब्रह्मैक्यम् (b) ईश्वर
(c) अज्ञानम् (d) शुद्ध चैतन्यम्

Ans : (a) जीव और ब्रह्म में एकता स्थापित करना ही वेदान्त का लक्ष्य है- जीवब्रह्मैक्यं शुद्ध चैतन्यं प्रमेयं तत्र एव वेदानां तात्पर्यात्। अतः स्पष्ट है कि सर्वज्ञाता और अल्पज्ञाता में सम्बन्ध स्थापित करना ही वेदान्त सार का प्रतिपाद्य विषय है।

18. वेदान्तानुसारेण भूतानां केभ्यो अंशेभ्यो कर्मेन्द्रियाणि उत्पद्यन्ते-

(a) सात्त्विकेभ्यः (b) राजसेभ्यः
(c) तामसेभ्य (d) सर्वेभ्यः

Ans : (b) वेदान्तसार के अनुसार पञ्चभूतो के रजोगुण से क्रमशः पृथक्-पृथक् रूप में ये वाक् आदि पाँच कर्मेन्द्रियाँ उत्पन्न होती हैं। पञ्च कर्मेन्द्रियाँ निम्न हैं- (1) वाक् (2) पाणि (3) पाद (4) पायु (5) उपस्थ।

19. पञ्चीकृते वायौ जलस्य कियान् भागः -

(a) 50% (b) 25%
(c) 30% (d) $12\frac{1}{2}\%$

Ans : (d) पञ्चीकरण प्रक्रिया में जल का $12\frac{1}{2}\%$ भाग वायु में रहता है।

20. जीवन्मुक्तौ सत्यां कस्य कर्मण फलम् उपभोक्तव्यमेव-

(a) सञ्चितस्य (b) क्रियमाणस्य
(c) प्रारब्धस्य (d) सर्वेषाम्

Ans : (c) कर्म तीन है- (1) सञ्चित (2) प्रारब्ध (3) क्रियमाण। जिस कर्म का फलोपभोग मिलना आरम्भ हो गया हो उसे प्रारब्ध कर्म कहते हैं।

21. न्यायमते कति प्रमाणानि सन्ति-

(a) त्रीणि (b) चत्वारि
(c) पञ्च (d) षट्

Ans : (b) न्याय मत के अनुसार चार प्रमाण है-
(1) प्रत्यक्ष (2) अनुमान (3) उपमान (4) शब्द। वेदान्ती 6 प्रमाण मानते हैं। सांख्य में तीन प्रमाण माना गया है।

22. समवेत समवाय सन्निकर्षेण कस्य प्रत्यक्षं भवति-

(a) गन्धस्य (b) शब्दस्य
(c) स्पर्शस्य (d) शब्दत्वस्य

Ans : (d) समवेतसमवाय सन्निकर्ष शब्दत्व का प्रत्यक्ष जाति का श्रोत्र इन्द्रिय से ग्रहण किया जाता है, उस समय श्रोत्र इन्द्रिय है क्योंकि श्रोत्र समवेत शब्द में समवाय सम्बन्ध होता है।

23. असिद्ध हेत्वाभासः कतिविधः -

(a) द्विविधः (b) त्रिविधः
(c) चतुर्विधः (d) पञ्चविधः

Ans : (b) लिङ्ग के रूप में निश्चित न होने वाला हेतु असिद्ध हेत्वाभास कहलाता है। यह तीन प्रकार का होता है-
(1) आश्रयासिद्ध (2) स्वरूपासिद्ध (3) व्याप्यत्वासिद्ध।

24. अतिदेशवाक्यार्थस्मरणं कुत्र व्यापारः -

(a) प्रत्यक्षे (b) अनुमितौ
(c) उपमितौ (d) शब्दबोधे

Ans : (c) उपमिति में अतिदेश वाक्यार्थ स्मरण व्यापार होता है। प्रत्यक्ष इसका विषय नहीं बन सकता न ही अनुमिति और शब्द बोध बन सकते हैं।

25. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत्-

(A)	संहिता	(1)	अचोऽन्त्यादि
(B)	गुण	(2)	अलोऽन्त्यात् पूर्वं
(C)	उपधा	(3)	परः सन्निकर्षः
(D)	टि	(4)	अदेङ्गुणः

कूट :

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	3	4	2	1
(b)	1	2	4	3
(c)	1	2	3	4
(d)	4	3	2	1

Ans : (a) परः सन्निकर्षः संहिता- निकटस्थ वर्णो की संहिता संज्ञा होती है और संहिता होने पर ही सन्धि होगी। अदेङ्गुणः - गुण संज्ञा करने वाला सूत्र है। अ, ए और ओ गुण हैं। अचोऽन्त्यादि टि-अचों में जो अन्तिम् अच् है उसकी टि संज्ञा होती है। अलोऽन्त्यात् पूर्वं उपधा अन्तिम अल् के ठीक पहले वाला वर्ण उपधा होता है।

26. क्तक्तवतू प्रत्ययोः का सञ्ज्ञा -

(a) नदी (b) सवर्णम्
(c) निष्ठा (d) घि

Ans : (c) क्तक्तवतू प्रत्ययों की संज्ञा निष्ठा होती है अर्थात् निष्ठामात्र कह देने से क्त और क्तवतु प्रत्ययों का बोध हो जायेगा। निष्ठा प्रत्यय भूतकाल के लिये प्रयोग में आते हैं। तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम् । द्वन्द्वे घि। यू स्त्याख्यौ नदी।

27. अर्थवदधातुरप्रत्ययः

(a) प्रगृह्यम् (b) सुप्
(c) तद्धितः (d) प्रातिपदिकम्

Ans : (d) अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् अर्थवद् + अधातुः + अप्रत्ययः अर्थात् धातु और प्रत्यय के अतिरिक्त कोई भी अर्थवान् शब्द प्रातिपदिक होता है। इसके अतिरिक्त कृत्तद्धितसमासाश्च से कृदन्त, तद्धित और समास की भी प्रातिपदिक संज्ञा होती है।

28. सर्वनामस्थानसंज्ञक प्रत्यय-

(a) अण् (b) जस्
(c) अच् (d) सुट्

Ans : (d) सुट् अर्थात् सु, औ, जस् , अम् और औट् ये पाँच प्रत्यय सर्वनामस्थान संज्ञक होते हैं। अण् अर्थात् अ, इ, उ और ऋ, ऌ ये अण् के अन्तर्गत आते हैं। अच् में सम्पूर्ण स्वर आते हैं।

29. अधोनिर्दिष्टेषु ऊष्मवर्णः -

(a) ह् (b) य्
(c) क् (d) अ

Ans : (a) श ष स ह ऊष्मवर्णः अर्थात् श्, ष्, स् और ह वर्णों की संज्ञा ऊष्म होती है। क् स्पर्श सञ्ज्ञक है। य् अन्तस्थ है और अ अच् है।

30. ऋटुरषाणां किं स्थानम् -

(a) तालु (b) दन्तः
(c) जिह्वा (d) मूर्धा

Ans : (d) ऋटुरषाणां मूर्धा अर्थात् ऋ, ट वर्ग ष् और र् । इन वर्णों का उच्चारण स्थान मूर्धा होता है।

ऌतुलसानां दन्तः। इचुयशानां तालु।

31. समीचीनां तालिकां चिनुत-

(a)	लोपः	(1)	अयोगात्मक
(b)	चीनी	(2)	संघर्षी
(c)	हकारः	(3)	Geneological Classification
(d)	पारिवारिकवर्गीकरणम्	(4)	ध्वनिपरिवर्तन हेतुः

कूटः

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	4	1	2	3
(b)	1	4	3	2
(c)	1	2	3	4
(d)	4	3	1	2

Ans : (a) लोप ध्वनिपरिवर्तन का हेतु होता है। चीनी भाषा अयोगात्मक है। हकार संघर्षी के अन्तर्गत आता है और पारिवारिक वर्गीकरण Genological Classification होता है।

32. 'समासे प्रथमानिर्दिष्टम् उपसर्जनं' कुत्र प्रयोक्तव्यम् -

(a) पूर्वम् (b) अन्ते
(c) मध्ये (d) यथेच्छम्

Ans : (a) 'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' इस सूत्र के आधार पर समास में जो प्रथमा विभक्ति में निर्दिष्ट है उसकी उपसर्जनसंज्ञा होती है और 'उपसर्जनं पूर्वं' सूत्र से जिसकी उपसर्जन संज्ञा है उसका पूर्व अर्थात् पहले प्रयोग होता है।

33. 'उपशरदम् अत्र कः समास : -

(a) बहुव्रीहिः (b) द्विगुः
(c) अव्ययीभावः (d) द्वन्द्वः

Ans : (c) शरदः समीपम् = उपशरदम् । शरद् ङस् उप। यहाँ पर उपशरदम् में अव्ययं विभक्ति समीप .....सूत्र से अव्ययीभाव समास हुआ है।

34. प्रातिपदिकार्थे का विभक्ति -

(a) सप्तमी (b) प्रथमा
(c) द्वितीया (d) तृतीया

Ans : (b) प्रातिपदिकार्थे प्रथमा अर्थात् प्रातिपदिक में प्रथमा विभक्ति होती है इसके अतिरिक्त सम्बोधने च से भी सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति होती है। 'सप्तम्यधिकरणे च' से सप्तमी कर्मणि द्वितीया से द्वितीया एवं कर्तृकरणयोस्तृतीया सूत्र से तृतीया विभक्ति होती है।

35. 'हरये रोचते' अत्र सम्प्रदान सञ्ज्ञा केन सूत्रेण भवति-

(a) स्पृहेरीप्सितः (b) चतुर्थीसम्प्रदाने
(c) कर्मणा यमभिप्रैति (d) रुच्यर्थानां प्रीयमाणः

Ans : (d) 'हरये रोचते' इस वाक्य में रुच्यर्थानां प्रीयमाणः इस सूत्र से हरि की सम्प्रदान सञ्ज्ञा हुई तथा चतुर्थी सम्प्रदाने- सूत्र से हरि में चतुर्थी विभक्ति होकर हरये बना।

36. स्वतन्त्रः -

(a) कर्ता (b) कर्म
(c) करण (d) सम्प्रदान

Ans : (a) स्वतन्त्रः कर्ता -अर्थात् कर्ता स्वतन्त्र होता है। कर्तुरीप्सिततमं कर्म। साधकतमं करणम् एवं कर्मणायमभिप्रैति स सम्प्रदानम् होता है।

37. 'महीयांसः प्रकृत्या मितभाषिणः' इदं वाक्यमस्ति-

(a) रघुवंशे (b) महाभारते
(c) शिशुपालवधे (d) रामायणे

Ans : (c) 'महीयांसः प्रकृत्या मितभाषिणः' यह सूक्ति महाकवि माघ विरचित शिशुपालवधम् महाकाव्य से है। शिशुपालवधं महाकाव्य में 20 सर्ग हैं इसके नायक भगवान् श्री कृष्ण एवं प्रतिनायक महाबली शिशुपाल हैं जो पूर्व जन्म में रावण है।

38. प्रतिबध्नाति हि श्रेयः पूज्यपूजाव्यतिक्रमः इदं वाक्यमस्ति-

(a) रघुवंशे (b) नैषधीयचरिते
(c) रामायणे (d) महाभारते

Ans : (a) ''प्रतिबध्नाति हि श्रेयः पूज्यपूजाव्यतिक्रमः'' यह उक्ति महाकवि कालिदास विरचित रघुवंश महाकाव्य के प्रथम सर्ग का 70वाँ श्लोक है। इस महाकाव्य में 19 सर्ग हैं तथा 31 राजाओं का वर्णन है।

39. 'वज्रायुधस्य' वर्णनमस्ति-

(a) कादम्बर्याम् (b) वासवदत्तायाम्
(c) हर्षचरिते (d) दशकुमार चरिते

Ans : (c) वज्रायुध का वर्णन बाण द्वारा रचित हर्षचरित नामक आख्यायिका ग्रन्थ में मिलता है। इस ग्रन्थ में महाकवि ने हर्षवर्धन के साम्राज्य एवं परिवार का विस्तार से वर्णन किया है।

40. ''सतां हि प्रियवदता कुलविधा'' इदं वाक्यमस्ति-

(a) हर्षचरिते (b) कादम्बर्याम्
(c) दशकुमारचरिते (d) बुद्धचरिते

Ans : (d) ''सतां हि प्रियवदता कुलविधा'' यह सूक्ति अश्वघोष के बुद्धचरित नामक महाकाव्य की है। बुद्धचरित महाकाव्य में 28 सर्ग हैं तथा बुद्धचरितम् विश्व का दूसरा सबसे बड़ा महाकाव्य की श्रेणी में आता है।

41. 'वेश्याः श्मशानसुमना इव वर्जनीयाः'' इदं वाक्यमस्ति-

(a) उत्तररामचरिते (b) मुद्राराक्षसे
(c) स्वप्नवासवदत्ते (d) मृच्छकटिके

Ans : (d) ''वेश्याः श्मशानसुमना इव वर्जनीयाः'' यह वाक्य शूद्रक के मृच्छकटिकम् का है जो कि एक प्रकरण ग्रन्थ है। इसमें कहा गया है कि वेश्याएँ श्मशान के फूल की तरह वर्जित है अर्थात् अशुद्ध है।

42. 'मृच्छकटिकम्' अस्ति-

(a) नाटकम् (b) प्रकरणम्
(c) नाटिका (d) व्यायोगः

Ans : (b) मृच्छकटिकम् एक प्रकरण ग्रन्थ है जो कि रूपक का ही एक अंग है। प्रकरण भी अङ्को में विभक्त होता है।

43. साहित्यदर्पणानुसारं लक्षणाया प्रभेदाः भवन्ति-

(a) 16 (b) 27
(c) 36 (d) 80

Ans : (d) साहित्य दर्पणकार ने लक्षणा के सारे भेदों प्रभेदों को मिलाकर लक्षणा के 80 (अशीतिः) भेद बताये हैं।

44. विश्वनाथ मते काव्यत्वसिद्धि भवति-

(a) शब्दार्थाभ्याम् (b) गुणालङ्काराभ्याम्
(c) रीतिवृत्तिभ्याम् (d) रसात्

Ans : (d) विश्वनाथ के अनुसार काव्य की सिद्धि रस से ही होती है। उन्होंने अपने काव्य लक्षण में कहा भी है- वाक्यं रसात्मकं काव्यम् । अर्थात् रसात्मक वाक्य ही काव्य है।

45. 'उत्साहः' स्थायिभावोऽस्ति-

(a) रौद्ररसस्य (b) शान्तरसस्य
(c) अद्भुतरसस्य (d) वीररसस्य

Ans : (d) उत्साह वीर रस का स्थायी भाव है।
अद्भुत का विस्मय। शान्त का शम या निर्वेद तथा क्रोध रौद्र रस का स्थायी भाव है।

46. नाटके कति सन्धयः भवन्ति-

(a) 10 (b) 8
(c) 5 (d) 3

Ans : (c) नाटकं पञ्चसन्धि समन्वितम् अर्थात् नाटक में पाँचों सन्धियों का समावेश होता है। ये निम्न है- मुखसन्धि, प्रतिमुखसन्धि, गर्भसन्धि, अवमर्शसन्धि तथा विमर्शसन्धि।

47. नाटके अङ्गीरसः भवति-

(a) शान्तः (b) करुणः
(c) हास्य (d) वीरः

Ans : (d) नाटक में वीर रस की प्रधानता होती है अतः वही अङ्गी रस होता है।

48. कस्य रसस्य चत्वारः प्रभेदाः सन्ति-

(a) शृङ्गारस्य (b) हासस्य
(c) करुणस्य (d) वीरस्य

Ans : (d) साहित्यदर्पण कार ने वीर रस के चार भेद बताये हैं-
(1) दानवीर (2) धर्मवीर (3) युद्धवीर (4) दयावीर।

49. गङ्गायां घोषः इति इदं वाक्यं कस्य उदाहरणं भवति-

(a) अभिधायाः
(b) रूढिपूर्वक लक्षणायाः
(c) रूपकालङ्कारस्य
(d) प्रयोजनवतीलक्षणायानः

Ans : (d) गङ्गायां घोषः यह प्रयोजनवती लक्षणा का उदाहरण है। इसका मतलब गङ्गा तटे घोष है अर्थात् गंगा के किनारे अहीरों की बस्ती।

50. साहित्यदर्पणकारमते काव्यगुणाः सन्ति-

(a) 10 (b) 8
(c) 5 (d) 3

Ans : (d) माधुर्यौजप्रसादाख्यास्त्रयस्ते- (1) माधुर्य (2) ओज तथा (3) प्रसाद नामक तीन ही गुण काव्यप्रकाशकार को अभिमत हैं।

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, दिसम्बर-2006

संस्कृत

व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

नोटः इस प्रश्नपत्र में पचास (50) बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के दो (2) अंक हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर दें।

सूचनाः अस्मिन् प्रश्नपत्रे पञ्चाशत् (50) बहुवैकल्पिकप्रश्नाः सन्ति। एकैकस्य प्रश्नस्य अङ्कद्वयं वर्तते। सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः।

1. शौनकशाखा केन वेदेन सम्पृक्ता?

(a) सामवेदेन (b) ऋग्वेदेन
(c) अथर्ववेदेन (d) यजुर्वेदेन

Ans : (c) शौनकशाखा अथर्ववेदेन सम्पृक्ताऽस्ति। अर्थात् शौनकशाखा अथर्ववेद से सम्बन्धित है। पतञ्जलि ने महाभाष्य में नवधाऽथर्वणो वेदः कहकर अथर्ववेद की नौ (9) शाखाओं का उल्लेख किया है, किन्तु वर्तमान में दो ही शाखाएँ प्राप्त होती हैं – (1) पैप्लादशाखा (2) शौनकीयशाखा।

2. गोपथब्राह्मणं कं वेदमवलम्बते?

(a) यजुर्वेदम् (b) ऋग्वेदम्
(c) सामवेदम् (d) अथर्ववेदम्

Ans : (d) अथर्ववेद की दो शाखाओं के अन्तर्गत गोपथब्राह्मण शौनकशाखा से सम्बन्धित है। अतः गोपथब्राह्मण का सम्बन्ध अथर्ववेद से है।

3. त्रिष्टुप्छन्दसि कति अक्षराणि सन्ति?

(a) द्वात्रिंशत् (b) एकादश
(c) चतुश्चत्वारिंशत् (d) षट्त्रिंशत्

Ans : (c) त्रिष्टुप् छन्द में 44 अक्षर होते हैं। कुछ प्रमुख छन्दों में अक्षरों की संख्या इस प्रकार है –

गायत्री छन्द	–	24 अक्षर
उष्णिक छन्द	–	28 अक्षर
अनुष्टुप् छन्द	–	32 अक्षर
बृहती छन्द	–	36 अक्षर
पंक्ति छन्द	–	40 अक्षर
त्रिष्टुप् छन्द	–	44 अक्षर

4. वरुणदेवः–

(a) द्युस्थानः (b) पृथिवीस्थानः
(c) अन्तरिक्षस्थानः (d) पातालस्थानः

Ans : (a) वरुणदेवः द्युस्थानीयः अस्ति अर्थात् वरुण द्युस्थानीय देवता हैं। यास्क ने निरुक्त में तीन प्रकार के देवताओं का वर्णन किया है–

द्युस्थानीय	–	द्यौः, वरुण, मित्र, सूर्य, विष्णु
अन्तरिक्ष स्थानीय	–	इन्द्र, रुद्र, वायु
पृथिवी स्थानीय	–	पृथिवी, अग्नि, बृहस्पति, सोम।

5. वेदाङ्गेषु शिक्षा उपमीयते :

(a) हस्तेन (b) पादेन
(c) चक्षुषा (d) घ्राणेन

Ans : (d) शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य अर्थात् वेदाङ्गों में शिक्षा को घ्राण (नाक) की सञ्ज्ञा दी गई है।

6. ''मा नो नि कः पुरुषन्ना नमस्ते'' वर्तते –

(a) सरमापणिसंवादे (b) यमयमीसंवादे
(c) उर्वशीपुरूरवस्संवादे (d) विश्वामित्रनदीसंवादे

Ans : (d) ''मा नो नि कः पुरुषन्ना नमस्ते'' इसका वर्णन विश्वामित्र नदी संवाद में मिलता है। विश्वामित्र नदी संवाद ऋग्वेद के तीसरे मण्डल के तैतीसवें (33 वें) सूक्त में प्राप्त होता है।

7. 'जलाष' इति विशेषणम्

(a) वरुणस्य (b) अश्विनोः
(c) रुद्रस्य (d) सोमस्य

Ans : (c) 'जलाषः' रुद्रदेवस्य विशेषणमस्ति अर्थात् जलाषः यह विशेषण रुद्र देव का है। रुद्र एक अन्तरिक्ष स्थानीय देव है।

8. ऋग्वेदस्य नवम् मण्डले देवतानाम –

(a) अग्निः शुचिः (b) अग्निः पावकः
(c) अग्नीषोमौ (d) पवमानसोमः

Ans : (d) ऋग्वेद के नवम् मण्डल के देवता का नाम पवमान सोम है। ऋग्वेद में 10 मण्डल, 1028 सूक्त एवं 10552 मन्त्रों का उल्लेख है।

9. उव्वटोऽस्ति भाष्यकारः –

(a) ऋग्वेदस्य (b) शुक्लयजुर्वेदस्य
(c) सामवेदस्य (d) अथर्ववेदस्य

Ans : (b) उव्वटो शुक्लयजुर्वेदस्य भाष्यकारोऽस्ति अर्थात् उव्वट शुक्लयजुर्वेद के भाष्यकार है तथा ऋग्वेद के स्कन्दस्वामी, सामवेद के माधव और अथर्ववेद के सायण भाष्यकार माने जाते हैं

10. शुनःशेपाख्यानं वर्तते–

(a) शतपथब्राह्मणे (b) ऐतरेयब्राह्मणे
(c) जैमिनीयब्राह्मणे (d) ताण्ड्यब्राह्मणे

Ans : (b) शुनः शेपाख्यानम् ऐतरेयब्राह्मणे वर्तते। शुनः शेपाख्यान का वर्णन ऋग्वेद के ऐतरेय ब्राह्मण में प्राप्त होता है।

11. ऋग्वेदस्य प्रथममण्डलस्य ऋषिरस्ति –

(a) वशिष्टः (b) विश्वामित्रः
(c) मधुच्छन्दाः (d) अगस्त्यः

Ans : (c) ऋग्वेद के प्रथममण्डल के ऋषि मधुच्छन्दा है। ऋग्वेद में दश मण्डल है तथा प्रत्येक मण्डल के अलग-अलग ऋषि हैं। प्रथम मण्डल में 191 सूक्त एवं 2006 मन्त्र हैं।

12. भैषज्यमन्त्राः लभ्यते–

(a) अथर्ववेद (b) सामवेदे
(c) यजुर्वेदे (d) ऋग्वेदे

Ans : (a) भैषज्यमन्त्राः अथर्ववेद लभ्यते अर्थात् भैषज्यमन्त्र अथर्ववेद में प्राप्त होते हैं। अथर्ववेद को लौकिक वेद की सञ्ज्ञा दी गई है,क्योंकि इसमें इहलौकिक बातों का वर्णन है।

13. पुरुषस्य स्वरूपं किम् ?

(a) अपरिणामि (b) परिणामि
(c) त्रिगुणात्मकम् (d) सक्रियम्

Ans : (a) पुरुषस्य स्वरूपमपरिणामि। यथा –
त्रिगुणमविवेकि विषयः सामान्यमचेतनं प्रसवधर्मि।
व्यक्तं तथा प्रधानं तद्विपरीतस्तथा च पुमान।।

14. पञ्चतन्मात्राणि कुतः प्रादुर्भवन्ति?

(a) प्रधानात् (b) महतः
(c) अहङ्कारात् (d) मनसः

Ans : (c) पञ्चतन्मात्राएँ अहङ्कार से उत्पन्न होते हैं। इसको इस प्रकार समझा जा सकता है –

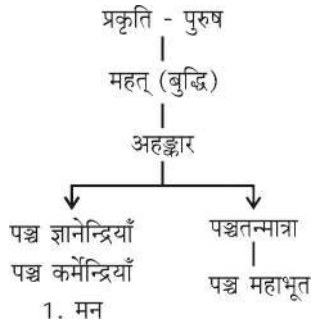

15. कैवल्यं कस्माद् भवति?

(a) विवेकख्यातेः (b) सत्ख्यातेः
(c) अनिर्वचनीयख्यातेः (d) अख्यातेः

Ans : (a) कैवल्यं विवेकख्यातेः भवति अर्थात् कैवल्य विवेकख्याति से होता है।

16. सदसद्भ्यामनिर्वचनीयं किम् ?

(a) ब्रह्म (b) जीवः
(c) ईश्वरः (d) अज्ञानम्

Ans : (d) सदसद्भ्यामनिर्वचनीयं अज्ञानम्। वेदान्तसार में अज्ञान को इस प्रकार बताया गया है – ''अज्ञानं तु सदसद्भ्यामनिर्वचनीयं त्रिगुणात्मकं ज्ञानविरोधि भावरूपं यत्किञ्चिदिति वदन्त्यहमज्ञ इत्याद्यनुभवात् ।

17. भूतानांकेभ्योऽशेभ्यः ज्ञानेन्द्रियाणि उत्पद्यन्ते?

(a) राजसेभ्यः (b) तामसेभ्यः
(c) सात्त्विकेभ्यः (d) सर्वेभ्यः

Ans : (c) आकाशादि पञ्चमहाभूतों के सात्त्विकांश से श्रोतादि पञ्चज्ञानेन्द्रियों की उत्पत्ति होती है।

18. वेदान्तसारमते लिङ्गशरीर घटकानि कति ?

(a) पञ्चदश (b) षोडश
(c) सप्तदश (d) अष्टादश

Ans : (c) सदानन्द प्रणीत वेदान्तसार में सप्तदश (17) लिङ्गशरीर के घटकों की चर्चा की गई है। जो इस प्रकार है – पञ्चज्ञानेन्द्रिय, पञ्चकर्मेन्द्रिय, पञ्चवायु और मन।

19. अज्ञाने कति गुणाः ?

(a) द्वौ (b) त्रयः
(c) चत्वारः (d) पञ्च

Ans : (b) अज्ञाने त्रयः गुणाः सन्ति।
स्रोत-सदानन्द-वेदान्तनुसार पृष्ठ संख्या 37

20. न्यायशास्त्रे साहचर्यनियमशब्देन किमुच्यते ?

(a) व्याप्तिः (b) उपाधिः
(c) सन्निकर्षः (d) अपवर्गः

Ans : (a) न्यायशास्त्रे 'साहचर्यनियमशब्देन' व्याप्तिः इति उच्यते। अर्थात् न्यायशास्त्र में साहचर्यनियम शब्द से व्याप्ति को बताया गया है।

21. इन्द्रियार्थसन्निकर्षः कतिविधः?

(a) पञ्चविधः (b) षड्विधः
(c) सप्तविधः (d) अष्टविधः

Ans : (b) इन्द्रियार्थसन्निकर्षः षड्विधः यथा – (1) संयोग (2) संयुक्तसमवाय (3) संयुक्तसमवेतसमवाय (4) समवाय (5) समवेतसमवाय (6) विशेषणविशेष्यभाव।

22. अनुमितिः कस्माद् अनन्तरं जायते?

(a) परामर्शात् (b) व्याप्तिज्ञानात्
(c) पदज्ञानात् (d) सादृश्यज्ञानात्

Ans : (d) अनुमितिः सादृश्यज्ञानात् अनन्तरं जायते। अर्थात् सादृश्यज्ञान से उत्पन्न होती है।

23. कारणं कतिविधं ?

(a) एकविधं (b) द्विविधं
(c) त्रिविधं (d) चतुर्विधं

Ans : (c) कारणं त्रिविधमस्ति अर्थात् कारण तीन के प्रकार होते हैं। जैसे – (1) समवायिकारण (2) असमवायिकरण (3) निमित्तकारण।

24. सादृश्यज्ञानकरणकं ज्ञानं किम् ?

(a) प्रत्यक्षम् (b) अनुमितिः
(c) शाब्दबोधः (d) उपमितिः

Ans : (d) सादृश्यज्ञानकरणकं ज्ञानम् उपमितिः।

25. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत –

(a)	गुणः	(1) यू स्त्याख्यौ
(b)	नदी	(2) अदेङ्
(c)	टि	(3) अलोऽन्त्यात्
(d)	उपधा	(4) अचोऽन्त्यादि

	a	b	c	d
(a)	1	2	3	4
(b)	4	3	2	1
(c)	2	1	4	3
(d)	2	1	3	4

Ans : (c) समीचीन तालिका इस प्रकार है –

(a) गुणः	(1) अदेङ्
(b) नदी	(2) यू स्याख्यौ
(c) टि	(3) अचोऽन्त्यादि
(d) उपधा	(3) अलोऽन्त्यात्पूर्वं

26. तुल्यास्यप्रयत्नं किं भवति?

(a) उपधा (b) सवर्णम्
(c) अपृक्तम् (d) वृद्धिः

Ans : (b) तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णं भवति अर्थात् जिन वर्णों का उच्चारण स्थान तथा प्रयत्न समान होते हैं। उनकी सवर्ण सञ्ज्ञा होती है।

27. एकाल्प्रत्ययः –

(a) अपृक्तम् (b) विभाषा
(c) गतिः (d) निष्ठा

Ans : (a) एकाल्प्रत्ययः अपृक्तं अर्थात् प्रत्यय को छोड़कर एक अल् (स्वर/व्यञ्जन) मात्र को अपृक्त कहते हैं। जैसे – सु का स् ति का त् इत्यादि।

28. ईदूदेदन्तं द्विवचनं –

(a) प्रातिपदिकम् (b) नदी
(c) सर्वणम् (d) प्रगृह्यम्

Ans : (d) ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम् अर्थात् ईकारान्त, ऊकारान्त तथा एकारान्त नित्य द्विवचन की प्रगृह्य सञ्ज्ञा होती है। जैसे –अमी ईशा।

29. अधोनिर्दिष्टेषु स्पर्शः –

(a) म् (b) य्
(c) इ (d) व्

Ans : (a) दिये गए विकल्पों में से 'म्' स्पर्श सञ्ज्ञक है क्योंकि 'कादयोमावशानाः स्पर्शाः' अर्थात् क् से म् पर्यन्त वर्ण स्पर्श सञ्ज्ञक होते हैं।

30. इचुयशानां किं स्थानम् ?

(a) दन्तः (b) मूर्धा
(c) मुखम् (d) तालु

Ans : (d) इचुयशानां तालुः अर्थात् इ, चवर्ग, य् और श् वर्णों का उच्चारण स्थान तालु होता है।

31. समीचीनां तालिकां चिनुत ?

(a) स्पर्शः	(1) शल्
(b) स्वरः	(2) कवर्णः
(c) जिह्वामूलीयम्	(3 अच्
(d) ऊष्मा	(4) जिह्वामूलम्

	a	b	c	d
(a)	2	3	4	1
(b)	1	2	3	4
(c)	4	3	2	1
(d)	3	2	1	4

Ans : (a) सही तालिका इस प्रकार है –

(a) स्पर्शः	–	(1) कवर्णः
(b) स्वरः	–	(2) अच्
(c) जिह्वामूलीयम्	–	(3) जिह्वामूलम्
(d) उष्मवर्णः	–	(4) शल् ।

32. समासशास्त्रे उपसर्जनं नाम –

(a) द्वितीयानिर्दिष्टम् (b) सप्तमीनिर्दिष्टम्
(c) प्रथमानिर्दिष्टम् (d) तृतीयानिर्दिष्टम्

Ans : (c) समासशास्त्रे प्रथमानिर्दिष्टम् उसर्जनं सञ्ज्ञा भवति। अर्थात् समास में जो पहले निर्दिष्ट हो उसकी उपसर्जन सञ्ज्ञा होती है तथा 'उपसर्जनं पूर्वम्' सूत्र से उसका पूर्व निपात होता है।

33. सप्तर्षयः – समासविधायकं सूत्रं किम् ?

(a) विशेषणं विशेष्येण बहुलम्
(b) दिक्संख्ये संज्ञायाम्
(c) चार्थे द्वन्द्वः
(d) दिङ्नामान्यन्तराले

Ans : (b) 'सप्तर्षयः' में 'दिक्संख्ये सञ्ज्ञायाम्' सूत्र से तत्पुरुष समास हुआ है। इसका लौकिक विग्रह सप्त च ते ऋषयः एवं अलौकिक विग्रह सप्तन् जस् ऋषि जस् होगा।

34. तथायुक्तं चानीप्सितम् इति सूत्रस्योदाहरणम् ?

(a) ओदनं पचति
(b) गां पयः दोग्धि
(c) अग्नेर्माणवकं वारयति
(d) ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति

Ans : (d) 'तथायुक्तं चानीप्सितम्' सूत्र का उदाहरण ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति है। इस सूत्र के अनुसार जिस प्रकार ईप्सित वस्तु की कर्मसञ्ज्ञा होती है। उसी प्रकार अनीप्सित पदार्थ की भी कर्मसञ्ज्ञा होती है।

35. सम्प्रदाने का विभक्तिः प्रवर्तते?

(a) चतुर्थी (b) पञ्चमी
(c) प्रथमा (d) द्वितीया

Ans : (a) सम्प्रदाने चतुर्थी विभक्ति भवति अर्थात् सम्प्रदान में चतुर्थी विभक्ति होती है। 'कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्' अर्थात् कर्त्ता दान क्रिया से जिसको सन्तुष्ट करना चाहता है उसकी सम्प्रदान सञ्ज्ञा होती है।

36. साधकतमं –

(a) कर्म (b) कर्ता
(c) अधिकरणं (d) करणं

Ans : (d) साधकतमं करणम् अर्थात् क्रिया की सिद्धि में जो सबसे अधिक सहायक होता है उसे करण कहते हैं।

37. 'न तितिक्षासममस्ति साधनम्' इदं वाक्यमस्ति–

(a) शिशुपालवधे (b) किरातार्जुनीये
(c) बुद्धचरिते (d) मेघदूते

Ans : (b) 'न तितिक्षासममस्ति साधनम्' यह वाक्य भारविकृत किरातार्जुनीयम् महाकाव्य का है। इसमें 18 सर्ग है। इसके नायक अर्जुन एवं प्रतिनायक किरात वेशधारी भगवान् शङ्कर है।

38. ''मृगयाऽघ्राय न भूभृतां हनताम्'' इदं वाक्यमस्ति –

(a) नैषधीयचरिते (b) बुद्धचरिते
(c) किरातार्जुनीय (d) रघुवंशे

Ans : (a) 'मृगयाऽघ्राय न भूभृतां हनताम्' यह सूक्ति नैषधीयचरित्रम् के द्वितीय सर्ग का 10वाँ श्लोक है।

39 ''गन्धर्वनगरलेखेव पश्यत एव नश्यति'' इदं वाक्यमस्ति

(a) दशकुमारचरिते (b) हर्षचरिते
(c) मुद्राराक्षसे (d) कादम्बर्याम्

Ans : (d) ''गन्धर्वनगरलेखेव पश्यत एव नश्यति'' यह वाक्य बाणभट्ट रचित कादम्बरी के शुकनासोपदेश से लिया गया है। इसमें शुकनास युवराज चन्द्रापीड को राज्याभिषेक के समय लक्ष्मी के गुण-दोषों को बता रहा है।

40. हर्षचरितस्य कर्ता अस्ति –

(a) अश्वघोषः (b) श्रीहर्षः
(c) बाणः (d) दण्डी

Ans : (c) बाणभट्ट की पाँच रचनाओं में हर्षचरितं का प्रमुख स्थान है। यह एक आख्यायिका ग्रन्थ है। इसमें राजा हर्षवर्धन से सम्बन्धित विषय का वर्णन है।

41. ''श्रिया दुरापः कथमीप्सितो भवेत्'' इदं वाक्यमस्ति–

(a) स्वप्नवासवदत्ते (b) मुद्राराक्षसे
(c) अभिज्ञानशाकुन्तले (d) मृच्छकटिके

Ans : (c) ''श्रिया दुरापः कथमीप्सितो भवेत्' यह वाक्य महाकवि कालिदास प्रणीत अभिज्ञानशाकुन्तलं का है। यह सात (7) अङ्कों में विभक्त विश्व प्रसिद्ध नाटक है। इसमें राजा दुष्यन्त एवं शकुन्तला की प्रणय गाथा का वर्णन है।

42. रत्नावली भवति –

(a) नाटकम् (b) प्रकरणम्
(c) नाटिका (d) प्रकरणिका

Ans : (c) रत्नावली नाटिका के अन्तर्गत आती है। इसके लेखक श्रीहर्षवर्धन है। यह चार (4) अङ्कों में विभक्त है। इसके नायक राजा उदयन एवं नायिका रत्नावली (सागरिका) है। इसमें भासकृत स्वप्नवासवदत्ता का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

43. गुणीभूतव्यङ्ग्यस्य प्रभेदाः कति?

(a) 8 (b) 15
(c) 24 (d) 36

Ans:(a) गुणीभूतव्यङ्ग्यस्य अष्टौ प्रभेदाः सन्ति अर्थात् गुणीभूतव्यङ्ग्य के आठ (8) प्रभेद होते हैं।

44. विश्वनाथस्य मते काव्यम्

(a) शब्दः (b) शब्दार्थौ
(c) वाक्यम् (d) पदावलिः

Ans : (c) विश्वनाथ के मत में रसात्मक वाक्य ही काव्य है। उन्होंने अपनी प्रसिद्ध काव्य ग्रन्थ साहित्यदर्पण में काव्य का लक्षण करते हुए इस प्रकार कहा है –

'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्'।

45. साहित्यदर्पणानुसारं शान्तरसस्य स्थायीभावोऽस्ति –

(a) शमः (b) निर्वेदः
(c) विवेकः (d) माया

Ans : (a) साहित्यदर्पण के अनुसार शान्त रस का स्थायिभाव शम है। नाटक में आठ (8) रस माने गये हैं लेकिन काव्यप्रकाशकार आचार्य मम्मट ने 'शान्तोऽपि नवमो रसः' कहकर शान्त को नवें रस के रूप में परिगणित किया है।

46. गणिका नायिका भवति–

(a) नाटके (b) प्रकरणे
(c) भागे (d) समवकारे

Ans : (b) प्रकरण में नायिका गणिका (वेश्या) होती है। जैसे शूद्रककृत मृच्छकटिकम् प्रकरण की नायिका वसन्तसेना प्रसिद्ध गणिका थी।

47. नाटके नायको भवति –

(a) धीरललितः (b) धृष्टः
(c) शठः (d) धीरोदात्तः

Ans : (d) नाटक में नायक धीरोदात्त कोटि का होता है। जैसे – उत्तररामचरितं में राम, शाकुन्तलं में दुष्यन्त धीरोदात्त नायक के अन्तर्गत आते हैं।

48. आत्मस्थःपरस्थश्चेति द्विविधो रसः

(a) हास्यः (b) भीभत्सः
(c) अद्भुतः (d) भयानकः

Ans : (a) आत्मस्थः परस्थश्चेति द्विविधो रसः – हास्यः।

49. अभिधापुच्छमिति व्यवह्रियते –

(a) अभिधा (b) लक्षणा
(c) व्यञ्जना (d) तात्पर्याख्यावृत्तिः

Ans : (b) लक्षणा अभिधापुच्छमिति व्यवह्रियते अर्थात् लक्षणा शब्दशक्ति अभिधापुच्छभूता होती है।

50. युग्मकं कव्यं भवति–

(a) गद्यम् (b) चम्पूः
(c) पद्यम् (d) नाटकम्

Ans : (b) चम्पू युग्मकं काव्यं भवति। चम्पूकाव्य युग्मक होता है क्योंकि इसमें गद्य-पद्य का समन्वयं होता है। गद्य-पद्य से मिश्रित काव्य को चम्पू काव्य कहते हैं।

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, जून-2007

संस्कृत

व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

सूचनाः अस्मिन् प्रश्नपत्रे **पञ्चाशत् (50)** बहुवैकल्पिकप्रश्नाः सन्ति। एकैकस्य प्रश्नस्य **अङ्कद्वयं (2)** वर्तते। सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः।

1. 'नासत्यौ' इति विशेषणं भवति :?

(a) अग्नेः (b) अश्विनोः
(c) वरुणस्य (d) सोमस्य

Ans : (b) अश्विनौ द्युस्थानीय युगल देवता हैं। इन्द्र, अग्नि तथा सोम के बाद अश्विनौ का नाम आता है। ऋग्वेद के लगभग 50 सूक्तों में तथा अन्य सूक्तों में अन्य देवताओं के साथ स्तुति की गयी है, नासत्या यह अश्विनौ का विशेषण है।

2. 'यो अश्वनोरन्तरग्निं जजान' -अनेन मन्त्रभागेन परामृश्यते

(a) विष्णुः (b) सविता
(c) बृहस्पतिः (d) इन्द्रः

Ans : (d) ''यो अश्वनोरन्तरग्निं जजान'' यह मन्त्रभाग इन्द्र सूक्त से सम्बद्ध है। इन्द्र का वर्णन लगभग 250 सूक्तों में किया गया है। इन्द्र के महान गुण-महान कार्यों को करने की शक्ति, अतुल पराक्रम और असुरों को युद्ध में जीतना आदि।

3. कठोपनिषदि नचिकेतसा पार्थितम्:

(a) हिरण्यादिकम् (b) वरत्रयम्
(c) स्त्रीरत्नम् (d) पुत्रपरिजनादिकम्

Ans : (b) कठोपनिषद् का सम्बन्ध कृष्णयजुर्वेद की कठ शाखा से है। इसमें यमराज द्वारा नचिकेता को तीन वर देने का वर्णन प्राप्त होता है।

4. ऋग्वेदस्य प्राचीनतमो भाष्यकारो अस्ति?

(a) सायणाचार्य (b) वेङ्कटमाधव
(c) स्कन्दस्वामी (d) रावणः

Ans : (c) ऋग्वेदस्य प्राचीनतमो भाष्यकारो स्कन्दस्वामी अस्ति। सायण आचार्य के अनुसार वेद इष्ट की प्राप्ति और अनिष्ट के परिहार के अलौकिक उपाय हैं। सायण, स्कन्दस्वामी, गुणविष्णु प्राचीन वेद भाष्यकार हैं तथा अरविन्द अर्वाचीन वेद भाष्यकार हैं।

5. ज्ञानश्रुतेरुपाख्यानं वर्तते :

(a) केनोपनिषदि (b) छान्दोग्योपनिषदि
(c) कठोपनिषदि (d) बृहदारण्यकोपनिषदि

Ans: (d) ज्ञानश्रुतेरूपाख्यानं बृहदारण्यकोपनिषदि वर्तते। बृहदारण्यक उपनिषद् शुक्लयजुर्वेद में प्राप्त होने वाला सबसे बड़ा उपनिषद् है यह 6 अध्यायों में विभक्त है। इसके प्रथम अध्याय में मृत्यु द्वारा सम्पूर्ण पदार्थ ग्राह्य किये जाने का वर्णन है।

6. ऋग्वेदस्य नामान्तरम्

(a) दशाध्यायी (b) दशतयी
(c) दशमण्डली (d) गानवेदः

Ans : (b) ऋग्वेद में दश मण्डल होने के कारण इसका नाम दशतयी है। ऋग्वेद की 21 शाखाएँ मानी गई है पतञ्जलि के अनुसार, इसमें 10 मण्डल 85 अनुवाक् एवं 1028 सूक्त हैं। इसमें प्रथम मण्डल के ऋषि मधुच्छन्दा (शतार्चिन) है द्वितीय के गृत्समद एवं छठे मण्डल के ऋषि भरद्वाज हैं।

7. यमयमीसंवादे यमी आसीत् यमस्य :

(a) कन्या (b) माता
(c) भगिनी (d) जाबा

Ans : (c) यम-यमी संवादसूक्त ऋग्वेद के दशम मण्डल का दशवाँ सूक्त (10/10) है। इसमें यमी यम की बहन है वह यम से विवाह एवं सहवास की प्रार्थना करती है लेकिन यम ऐसा करने से मना कर देता है।

8. गानस्य प्राधान्यमस्ति :

(a) सामवेदे (b) यजुर्वेदे
(c) अथर्ववेदे (d) ऋग्वेदे

Ans : (a) गान की प्रधानता सामवेद में है इसकी तीन शाखाएँ हैं- राणायनीय, कौथुमीय, जैमिनीय। सामवेद दो भागों में विभक्त है-
(1) पूर्वार्चिक
(2) उत्तरार्चिक

9. गोपथब्राह्मणस्य सम्बन्धोऽस्ति :

(a) सामवेदेन (b) अथर्ववेदेन
(c) यजुर्वेदेन (d) ऋग्वेदेन

Ans : (b) गोपथ ब्राह्मण अथर्ववेद का प्राप्त होने वाला एकमात्र ब्राह्मण ग्रन्थ है इसके ऋषि गोपथ हैं। यह पूर्वगोपथ एवं उत्तर गोपथ दो भागों में विभक्त है।

10. वेदाङ्गेषु व्याकरणं भवति :

(a) घ्राणम् (b) हस्तः
(c) श्रवणम् (d) मुखम्

Ans : (d) व्याकरण को वेदपुरुष का मुख कहा गया है- ''व्याकरणं मुखं स्मृतम्''।
महाभाष्यकार पतञ्जलि ने व्याकरण के 5 प्रयोजन बताये हैं- रक्षा, ऊह, आगम, लघु असन्देह।

11. आख्यातस्य लक्षणं वर्तते :

(a) शिक्षायाम् (b) ज्योतिषे
(c) छन्दसि (d) निरुक्ते

Ans : (d) यास्काचार्य विरचित निरुक्त में चार प्रकार के पदों की चर्चा की गई है- नाम, आख्यात, उपसर्ग और निपात।
''भावप्रधानम् आख्यातम्'' ऐसा आख्यात का लक्षण दिया गया है।

12. बालखिल्यसूक्तानि विद्यन्ते :

(a) ऋग्वेदे (b) सामवेदे
(c) अथर्ववेदे (d) यजुर्वेदे

Ans : (a) ऋग्वेद के अष्टम् मण्डल के 49वें सूक्त से 59वें सूक्त तक 11 सूक्त ''खिल सूक्त'' के नाम से जाने जाते हैं इसमें 80 मन्त्र हैं।

13. 'सतः सत् जायते' इति कस्य मतम्?

(a) बौद्धस्य (b) नैयायिकस्य
(c) सांख्यस्य (d) वेदान्तिनः

Ans : (c) ''सतः सत् जायते'' इति सांख्यस्य मतम्। 'सतः सत् जायते' यह मत सांख्याचार्यों का है। 'सतः असत् जायते' यह मत नैयायिको का है।

14. कर्तृत्व कुत्र विद्यते?

(a) पुरुषे (b) मनसि
(c) प्रकृतौ (d) अहङ्कारे

Ans : (c) कर्तृत्वं प्रकृतौ विद्यते। अर्थात् कर्तृत्व गुण प्रकृति का है। चेतन पुरुष के अकर्ता तथा प्रकृति के अचेतन होने के कारण दोनों के संयोग से अचेतन बुद्धि आदि चेतन सदृश हो जाती है।

15. बुद्धिसर्गः कतिविधः भवति?

(a) एकविधः (b) द्विविधः
(c) त्रिविधः (d) चतुर्विधः

Ans : (d) सांख्यकारिका में प्रत्यय सर्ग (बुद्धि सर्ग) के चार प्रकार बताए गये हैं।

विपर्यय	अशक्ति	तुष्टि	सिद्धि
5 भेद	28 भेद	9 भेद	8 भेद

16. कैवल्यं किमस्ति?

(a) नित्यसुखाभिव्यक्ति
(b) आत्यन्तिकदुःखनिवृत्तिः
(c) ऐकान्तिकदुःखनिवृत्तिः
(d) ऐकान्तिकात्यन्तिकदुःखनिवृत्तिः

Ans : (d) सांख्यकारिका में 25 तत्त्वों में महत् (बुद्धि) को ज्ञान का धर्म कहा गया है। इसकी उत्पत्ति प्रकृति से होती है और महत् तत्त्व से अहंकार की उत्पत्ति होती है और अहंकार से पञ्च तन्मात्राएँ उत्पन्न होती है।

17. अज्ञानस्य कतिविधा शक्तिर्भवति

(a) एकविधा (b) द्विविधा
(c) चतुर्विधा (d) अनेकविधा

Ans : (b) सदानन्द प्रणीत वेदान्तसार में अज्ञान के विषय में कहा गया कि ' **''अज्ञानं तु सदसदभ्यामनिर्वचनीयं त्रिगुणात्मकं ज्ञानविरोधि भावरूपं यत्किञ्चिदिति''।**
अतः अज्ञान की आवरण एवं विक्षेप नामक दो शक्तियाँ हैं।

18. जीवस्य कतिविधाः अवस्थाः भवन्ति

(a) त्रिविधा (b) चतुर्विधाः
(c) पञ्चविधा (d) षट्विधा

Ans : (a) वेदान्तसार में जीव की तीन अवस्था बताई गई है-
जागरण अवस्था - में जीव को वैश्वानर कहा गया।
स्वप्नावस्था - में जीव को तैजस् कहा गया।
सुषुप्ति अवस्था - में जीव को प्राज्ञ कहा गया है।

19. विवर्तो नाम किं विद्यते?

(a) कारणस्य समसत्ताकपरिणामः
(b) कारणस्य कार्यवस्था
(c) कारणात् विषमसत्ताकोत्पत्तिः
(d) कारणगुणात्मिका कार्योत्पत्तिः

Ans : (a) विवर्तवाद एक सिद्धान्त है इस सिद्धान्त के प्रतिपादक अद्वैत वेदान्ती हैं उनके अनुसार यह संसार विवर्त है अर्थात् जो है वह सत्य नहीं है 'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या' इनके अनुसार मिथ्या रूप से अन्यवस्तु के रूप में भाषित होना ही विवर्त है।
'अतत्त्वतोऽन्यथा प्रथा विवर्त इत्युदाहृतः'

20. पदार्थस्य किं लक्षणम्?

(a) सत्तावत्त्वम् (b) भावत्वम्
(c) अभिधेयत्वम् (d) प्रमेयत्वम्

Ans : (c) 'पदस्यार्थः पदार्थः' 'अभिधेयत्वं पदार्थत्वम्'
अभिधेय अर्थात् कार्य। वैशेषिक मतानुसार सात पदार्थ हैं। द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय तथा अभाव।

21. सामान्य पदार्थः नास्तीति कस्य मतम्?

(a) बौद्धस्य (b) नैयायिकस्य
(c) मीमांसकस्य (d) वैयाकरणस्य

Ans : (a) बौद्ध दर्शन के अनुसार जाति के स्थान पर अपोह स्वीकार किया गया है। 'तद्भिन्न भिन्नत्व ही अपोह है। न्याय, व्याकरण तथा मीमांसा तीनों सामान्य अर्थात् जाति को स्वीकार करते हैं।

22. विभुत्वं किमस्ति?

(a) अपरिच्छिन्नपरिमाणवत्वम्
(b) परिमाणरहितत्वम्
(c) सर्वमूर्तद्रव्यसंयोगित्वम्
(d) प्रत्यक्षयोग्यद्रव्यत्वम्

Ans : (c) 'सर्वमूर्तद्रव्य संयोगित्वं विभुत्वम्' जिसका परिमाण मूर्त रहता है सीमित रहता है वह मूर्त होता है अर्थात् परिच्छिन्न परिमाण वाला मूर्त है अर्थात् 'पदार्थमात्र वृत्तित्वम्' विभुत्वं ही सत्य हैं मूर्त द्रव्य पाँच है- आकाश, पृथ्वी, तेज, वायु और मन।

23. प्रामाण्यमनुव्यवसायेन गृह्यते इति कस्य मतम्?

(a) नैयायिकस्य (b) वेदान्तिनः
(c) प्रभाकरमीमांसकस्य (d) मुरारिमिश्रस्य

Ans : (a) प्रामाण्य को न्यायदर्शन में अनुव्यवसाय से ग्रहण करते हैं। जैसे घट को देखने पर घट का ज्ञान पहले हुआ था अब उसी पूर्व घट ज्ञान का पुनः ज्ञान हो गया है।

24. अव्याप्यवृत्तित्वं किमस्ति?

(a) सावच्छिन्नवृत्तिकत्वम्
(b) निरवच्छिन्नवृत्तिकत्वम्
(c) एकमात्रवृत्तित्वम्
(d) अनेकवृत्तित्वम्

Ans : (b) 'अव्याप्यवृत्तित्वं निरवच्छिन्नवृत्तिकत्वम्' व्याप्यवृत्ति अर्थात् जो सर्वत्र रहे अव्याप्त वृत्ति अर्थात् जो व्याप्त न करे व्याप्य भी व्यापक के अन्तर्गत होता है। निरवच्छिनवृत्तिकत्व ही अव्याप्यवृत्तिकत्व है।

25 नदीसंज्ञाविधायकं सूत्रम् :

(a) यूस्त्याख्यौ (b) अलोऽन्त्यापूर्वः
(c) इदूदेदद्विवचनम् (d) क्तक्तवतू

Ans : (a) नदी संज्ञा विधायक सूत्र ''यूस्त्याख्यौ नदी''है अर्थात् दीर्घ ईकारान्त ऊकारान्त नित्य स्त्रीलिङ्ग शब्दों की नदी संज्ञा होती है। यथा- गौरी, नदी, वधू, आदि।

26. एकाल् प्रत्ययस्य का संज्ञा?

(a) धि (b) सर्वनामस्थानम्
(c) गतिः (d) अपृक्तः

Ans : (d) अपृक्त एकाल् प्रत्ययः- एकाल् प्रत्ययो यः सोऽपृक्तसंज्ञं स्यात् ।
यथा - सखान् + स् में स् प्रत्यय एक अल् वाला है अतः इस स् की अपृक्त संज्ञा होगी।

27. समीचीनां तालिकां चिनुत :

(A) संहिता (i) अदेङ्
(B) गुणः (ii) अचोऽन्त्यादि
(C) पदम् (iii) परः संनिकर्षः
(D) टि (iv) सुप्तिङन्तम्

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(i)	(ii)	(iv)	(iii)
(b)	(iv)	(ii)	(iii)	(i)
(c)	(ii)	(iii)	(i)	(iv)
(d)	(iii)	(i)	(iv)	(ii)

Ans : (d) सही समीचीन तालिका इस प्रकार है -
संहिता - परः सन्निकर्षः
गुणः - अदेङ्
पदम् - सुप्तिङन्तम्
टि - अचोऽन्त्यादि

28. कर्मणा यमभिप्रैति स :

(a) करणम् (b) कर्म
(c) सम्प्रदानम् (d) अपादानम्

Ans : (c) ''कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्'' सम्प्रदान संज्ञा विधायक सूत्र हैं अर्थात् कर्ता दान क्रिया के कर्म द्वारा जिसको सन्तुष्ट करना चाहता है उसकी सम्प्रदान संज्ञा होगी।

29. 'अक्ष्णा काणः' -अत्र केन सूत्रेण विभक्तिः

(a) सहयुक्तेऽप्रधाने (b) हेतौ
(c) स्पृहेरीप्सितः (d) येनाङ्गविकारः

Ans : (d) ''येनाङ्गविकारः'' जिस विकृत अङ्ग से अङ्गी का विकार लक्षित हो, तो उस विकृत वाचक शब्द से तृतीया होती है।
यथा-अक्ष्णा काणः, कर्णेन बधिरः, पादेन खञ्जः, पृष्ठेन कुब्जः।

30. वैषयिकाधिकरणस्य उदाहरणम् :

(a) तिलेषु तैलम् (b) मोक्षे इच्छास्ति
(c) गङ्गायां घोषः (d) वने व्याघ्रः

Ans : (b) आधार तीन प्रकार के माने गये हैं-
उसमें औपश्लेषिक का उदाहरण - कटे आस्ते
वैषयिक का उदाहरण - मोक्षे इच्छास्ति
अभिव्यापक का उदाहरण - तिलेषु तैलम्।

31. 'यतश्च निर्धारणम्' -अनेन सूत्रेण विधीयते

(a) द्वितीया तृतीया वा (b) तृतीया चतुर्थी वा
(c) प्रथमा द्वितीया वा (d) षष्ठी सप्तमी वा

Ans : (d) ''यतश्च निर्धारणम्'' जाति गुण क्रिया संज्ञाभिः समुदायादेकदेशस्य पृथक्करणं निर्धारणं यतस्ततः षष्ठीसप्तम्यौ स्तः। अर्थात् जाति, गुण, क्रिया तथा संज्ञा नाम इन चार में से किसी के द्वारा जिस समुदाय से उसके एक देश का पृथक्करण हो उस समुदाय वाचक शब्द में षष्ठी या सप्तमी विभक्तियाँ हों।
यथा- नृणां नृषु वा ब्राह्मणः श्रेष्ठः।

32. 'अधिहरि- -अस्मिन् पदे कः समास?

(a) तत्पुरुषः (b) द्वन्द्वः
(c) कर्मधारयः (d) अव्ययीभावः

Ans : (d) 'अधिहरि' इस सामासिक पद का लौकिक विग्रह हरौ इति और अलौकिक विग्रह ''हरि ङि अधि'' है। यहाँ पर ''अव्ययं विभक्तिसमीपसमृद्धिवृद्ध्यर्थाभावात्ययासम्प्रति.....
.....सम्पत्तिसाकल्यान्तवचनेषु। इस सूत्र से अव्ययीभाव समास होगा।

33. समाहारद्वन्द्व सदैव प्रयुज्यते :

(a) पुल्लिङ्गे (b) स्त्रीलिङ्गे
(c) नपुंसकलिङ्गे (d) उभयलिङ्गे

Ans : (c) समाहार अर्थ में द्वन्द्व और द्विगु समास नित्य नपुसंकलिंग होते हैं। जैसे – पाणिपादम्, पञ्चपात्रम् इत्यादि।

34. 'पितरौ'- इत्यस्य पदस्य, विग्रहः

(a) पिता च कन्या च (b) माता च पिता च
(c) भ्राता च पिता च (d) स्वसा व पिता च

Ans : (b) ''पितरौ'' इस सामासिक पद का लौकिक विग्रह ''माता च पिता च'' और अलौकिक विग्रह ''मातृ सु पितृ सु'' होगा। यह एक शेष द्वन्द्व समास का उदाहरण है

35. कॉलिजनियमस्य उपयोगो भवति अस्मिन् :

(a) ददौ (b) दधौ
(c) चकार (d) करोति

Ans : (b) कॉलिजनियमस्य उपयोगो दधौ भवति।
इसका वर्णन भाषा विज्ञान में किया गया है।
स्रोत-कविलदेव द्विवेदी पृष्ठ संख्या-247

36. बाह्यप्रयत्नास्तु :

(a) पञ्चधा (b) दशधा
(c) एकादशधा (d) त्रयोदशधा

Ans : (c) आभ्यन्तर प्रयत्न 5 और बाह्यप्रयत्न 11प्रकार के माने गये हैं- आभ्यान्तर प्रयत्न – (i) स्पृष्ट (ii) ईषत्स्पृष्ट (iii) ईषद्विवृत (iv) विवृत (v) संवृत
बाह्यप्रयत्न 11 माने गये हैं- विवार,संवार, श्वास, नाद, घोष, अघोष, अल्पप्राण, महाप्राण, उदात्त, अनुदात्त और स्वरित।

37. 'अमी अश्वाः, इत्यत्र प्रगृह्यसंज्ञा- विधायकं सूत्रम् :

(a) ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम् (b) अदसो मात्
(c) निपात एकाजनाङ् (d) प्लुतप्रगृह्य अचि नित्यम्

Ans : (b) अमी अश्वाः में 'अदसो मात्' सूत्र से प्रगृह्य सञ्ज्ञा होगी तथा प्लुतप्रगृह्याऽचिनित्यम् सूत्र से प्रकृतिभाव होकर अमी अश्वाः रूप बनेगा।

38.'श्रेयसि केन तृप्यते' इत्यस्ति :

(a) बुद्धचरिते (b) शिशुपालवधे
(c) किरातार्जुनीये (d) नैधधमहाकाव्ये

Ans : (b) ''श्रेयसि केन तृप्यते'' यह सूक्ति माघकृत शिशुपालवधम् से ली गयी है। अर्थात् कल्याण के विषय में कौन तृप्त होता है। श्रीकृष्ण जी नारद से कह रहे हैं कि आपके दर्शन से कृतकृत्य होकर भी मैं आपके सारगर्भित वचन सुनना चाहता हूँ।

39. प्रकरणे अङ्कसंख्या भवति :

(a) सप्त (b) पञ्च
(c) चत्वारः (d) दश

Ans : (d) रूपक के दशभेदों में से प्रकरण नामक भेद में दश अङ्क होते हैं। यह इतिहास प्रसिद्ध या कल्पना प्रसूत होता है इसमें प्रायः शृंगार रस की प्रधानता होती है।

40. स्वप्नवासवदत्तस्य रचयिता कः?

(a) कालिदासः (b) शूद्रकः
(c) भासः (d) श्रीहर्षदेवः

Ans : (c) स्वप्नवासवदत्तम के लेखक भास है। यह 6 अङ्कों में विभक्त है। भास का समय 327ई. पूर्व स्वीकार किया जाता है भास के 13 नाटकों में इसका प्रमुख स्थान है। इसमें उदयन एवं वासवदत्ता की प्रणयगाथा का वर्णन है।

41. अभिज्ञानशाकुन्तले अङ्गी रसः कः?

(a) शृंगारः (b) वीररसः
(c) शातरसः (d) करुणरसः

Ans : (a) अभिज्ञानशाकुन्तलम् महाकवि कालिदास की प्रसिद्ध रचना है यह 7 अङ्कों में विभक्त है इसमें शृंगार अङ्गीरस है इसकी कथा का आधार महाभारत को आदि पर्व माना जाता है।

42. मुद्राराक्षसस्य रचयिता कः?

(a) शूद्रकः (b) विशाखदत्तः
(c) भट्टनारायणः (d) कालिदासः

Ans : (b) मुद्राराक्षसम् के लेखक विशाखदत्त हैं यह नाटक 7 अङ्कों में विभक्त है यह वीर रस प्रधान है इसका आधार ग्रन्थ विष्णुपुराण है विशाखदत्त का समय 400 ई.के आसपास है।

43. वीथ्यां प्रयुक्ता वृत्तिः

(a) भारती (b) सात्त्वती
(c) कैशिकी (d) आरभटी

Ans : (c) रूपक के दश भेदों में वीथी में कैशिकी वृत्ति है। इनमें सन्धि, तथा अङ्क भाण के समान होते हैं अर्थात् मुख और निर्वहण सन्धियाँ होती है।

44. रघुवंशमहाकाव्ये कति सर्गाः सन्ति?

(a) एकोनविंशतिः (b) अष्ट
(c) द्वाविंशतिः (d) विंशतिः

Ans : (a) रघुवंश में 19 सर्ग हैं।
रघुवंश महाकाव्य महाकवि कालिदास की रचना है। इसमें राजा दिलीप द्वारा नन्दिनी गाय की सेवा का वर्णन है।

45. मुख्यार्थवाधे सति भवति :

(a) अभिधाव्यापारः
(b) लक्षणाव्यापारः
(c) व्यञ्जनाव्यापारः
(d) तात्पर्यम्

Ans : (b) शब्द की तीन शक्तियाँ होती हैं- अभिधा, लक्षणा, व्यञ्जना उसमें से लक्षणा की परिभाषा-

मुख्यार्थबाधे तद्युक्तो ययाऽन्योऽर्थः प्रतीयते।
रूढे प्रयोजनाद्वाऽसौ लक्षणा शक्तिरर्पिता॥

46. .....लोकस्याराधनाय मुञ्चतो नास्ति में व्यथा इत्यस्ति :

(a) अभिज्ञानशाकुन्तले (b) उत्तररामचरिते
(c) मृच्छकटिके (d) महावीरचरिते

Ans : (b) स्नेहं दया च सौख्यं च यदि वा जानकीमपि।
आराधनाय लोकस्य मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा॥
यह श्लोक उत्तररामचरितम् नाटक से सम्बद्ध है यह नाटक 7 अंकों में विभक्त है।

47. किरातार्जुनीयमहाकाव्ये किरातः कः?

(a) अर्जुनः (b) शिवः
(c) कृष्णः (d) धर्मराजः

Ans : (b) किरातार्जुनीयम् एक महाकाव्य है जिसमें नायक अर्जुन एवं सहनायक शिव हैं। शिव को ही किरातवेषधारी कहा गया है।

48. करुणरसस्य स्थायी भावः :

(a) शमः (b) रतिः
(c) उत्साहः (d) शोकः

Ans : (d) करुण रस का स्थायी भाव शोक होता है। इसका वर्ण कपोत है और इसके देवता यम हैं।

49. व्यायोगे नायकः :

(a) धीरोदात्तः (b) धीरप्रशान्तः
(c) धीरललितः (d) धीरोद्धतः

Ans : (d) व्यायोग की कथावस्तु इतिहास प्रसिद्ध होती है। इसमें स्त्रियों की संख्या स्वल्प होती है। इसका नायक धीरोद्धत राजर्षि या दिव्य पुरुष होता है।

50. हर्षचरितम्

(a) कथा (b) आख्यायिका
(c) कथानिका (d) परिकथा

Ans : (b) हर्षचरितम् महाकवि बाण की प्रथम रचना है। ऐतिहासिक वृत्त पर आश्रित होने से यह 'आख्यायिका' है। इसमें आठ उच्छ्वास हैं।

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, दिसम्बर-2007

संस्कृत

व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

1. यास्कमते अग्निर्भवति?

(a) अन्तरिक्षस्थानः (b) पृथ्वीस्थानः
(c) द्युस्थानः (d) गृहस्थानः

Ans : (b) आचार्य यास्क ने तीन प्रकार के देवताओं का वर्णन निरुक्त में किया है-

अन्तरिक्षस्थानीय	–	इन्द्र, रुद्र, वायु
द्युस्थानीय	–	वरुण, मित्र, विष्णु, सवितृ
पृथ्वीस्थानीय	–	अग्नि, पृथ्वी, सोम

2. विष्णोस्त्रीणि पदानि पूर्णानि भवन्ति?

(a) उदकेन (b) अमृतेन
(c) मधुना (d) घृतेन

Ans : (c) विष्णोस्त्रीणि पदानि मधुना पूर्णानि भवन्ति।
विष्णु एक द्युस्थानीय देवता है। इनकी स्तुति 5 सूक्तों में की गई है। विष्णु के लिए उरुक्रम एवं उरुगाय भी कहा गया है, उरुगाय शब्द का प्रयोग ऋग्वेद में 21 बार किया गया है।

3. द्युस्थानीय सूक्तस्य देवता भवन्ति?

(a) वरुणः (b) इन्द्रः
(c) सोमः (d) अग्निः

Ans : (a) वरुण द्युस्थानीय देवता हैं ऋग्वेद में इनका 12 सूक्तों में वर्णन किया गया है। इन्हें वृणोति इति सतः ऐसा कहा गया है। इस सूक्त के देवता शुनः शेप हैं।

4. भैषज्यसूक्तानि वर्तन्ते?

(a) सामवेदे (b) ऋग्वेदे
(c) यजुर्वेदे (d) अथर्ववेदे

Ans : (d) भैषज्यसूक्त का सम्बन्ध अथर्ववेद से है। इसमें रोग, रोगों के लक्षण, निदान एवं जड़ी बूटियों इत्यादि का 144 सूक्तों में विवेचन किया गया है।

5. वंशीयमण्डलानि उपलभ्यन्ते?

(a) यजुर्वेदे (b) ऋग्वेदे
(c) सामवेदे (d) अथर्ववेदे

Ans : (b) वंशीयमण्डलानि ऋग्वेदे उपलभ्यन्ते। अर्थात् वंशीय मण्डलय ऋग्वेद में प्राप्त होता है। ऋग्वेद के दूसरे मण्डल से लेकर सप्तम मण्डल तक को वंश मण्डल के नाम से जाना जाता है। द्वितीय- सप्तम मण्डल तक का भाग ऋग्वेद का प्राचीनतम् अंश है जो वंशमण्डल के नाम से जाना जाता है।

6. वैदिककालनिर्णये ज्योतिषस्योपयोगः कृतः

(a) बेवरेण (b) मैक्समूलरेण
(c) न केनापि (d) तिलकेन

Ans : (d) बालगङ्गाधर तिलक ने वैदिककाल का निर्धारण करते हुए 4000-2500 ई.पू. स्वीकार करते हैं। वे ज्योतिष के आधार पर वैदिककाल का निर्धारण किये है।

7. हैमवत्या उपाख्यानमुपलभ्यते?

(a) केनोपनिषदि (b) कठोपनिषदि
(c) ईशोपनिषदि (d) बृहदारण्यके

Ans : (a) सामवेद से सम्बद्ध उपनिषद् केनोपनिषद् है इसको तवल्कारोपनिषद् भी कहा जाता है इसमें 4 खण्ड हैं इसके तृतीय व चतुर्थ खण्ड में उमा हेमवती के रोचक आख्यान द्वारा परब्रह्म की सर्व शक्तिमत्ता का वर्णन है।

8. रथरूपकं विद्यते?

(a) छान्दोग्ये (b) बृहदारण्यके
(c) श्वेताश्वतरे (d) कठे

Ans : (d) ''रथरूपकं'' का वर्णन कृष्णयजुर्वेद की कठ शाखा से सम्बद्ध है।
नोट- आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु।
बुद्धि तु सारथिं विद्धि मनः प्रगृहमेव च॥

9. ऋग्वेदस्य पदपाठस्य कर्ता आसीत्?

(a) सायणाचार्यः (b) स्कन्दस्वामी
(c) यास्कः (d) शाकल्यः

Ans : (a) ऋग्वेद के पदपाठ कर्ता आचार्य सायण थे। इन्होंने ऋग्वेद पर भाष्य लिखा, ऋग्वेद दो भागों-अष्टक क्रम एवं मण्डल क्रम में विभक्त है।

10. 'न वै स्त्रैणानि सख्यानि सन्ति' -इयमुक्तिर्भवति?

(a) विश्वामित्रस्य (b) सरमायाः
(c) उर्वश्याः (d) यम्याः

Ans : (c) 'न वै स्त्रैणानि सख्यानि सन्ति'' यह उर्वशी का कथन है पुरुरवा उर्वशी संवाद ऋग्वेद के दशम मण्डल का 95वाँ सूक्त है जिसमें पुरुरवा और उर्वशी की प्रणय गाथा का वर्णन है। इसमें कुल 18 मन्त्र हैं। ऋषि एवं देवता- पुरुरवा और उर्वशी हैं। छन्द-त्रिष्टुप् है और स्वर-धैवत् है। यम-यमी संवाद में 14 मन्त्र हैं।

11. वेदाङ्गेषु निरुक्तं भवति :

(a) मुखम् (b) श्रोत्रम्
(c) घ्राणम् (d) पादः

Ans : (b) वेदाङ्गों की संख्या 6 है- शिक्षा, कल्प व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष।
इनमें से निरुक्त को वेद रूपी पुरुष का श्रोत कहा गया है- ''निरुक्तं श्रोतमुच्यते''। इस निरुक्त में तीन काण्ड एवं 12 अध्याय हैं।
(1) नैघण्टुकाण्डम् (2) नैगमकाण्डम् (3) दैवतकाण्डम्

12. देवतानां स्थानानि वर्णितानि सन्ति?

(a) व्याकरणे (b) शिक्षायाम्
(c) कल्पे (d) निरुक्ते

Ans : (d) देवताओं के स्थान का वर्णन निरुक्त में किया गया है। ये तीन स्थानीय देवता हैं-

पृथ्वीस्थानीय	-	पृथ्वी, अग्नि, सोम
द्युस्थानीय	-	वरुण, मित्र, सवितृ, पूषा
अन्तरिक्ष स्थानीय	-	इन्द्र, रुद्र, वायु, (मरुत)

13. अहङ्कार कतिविधो भवति?

(a) एकविधः (b) द्विविधः
(c) त्रिविधः (d) चतुर्विधः

Ans : (b) अहङ्कार द्विविधः भवति। अर्थात् अहंकार दो प्रकार का होता है।

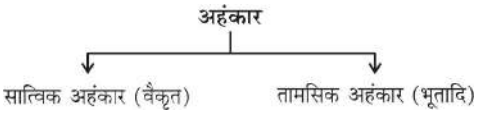

14. समन्वयात् किं सिद्धयति?

(a) प्रकृतिः (b) पुरुषः
(c) गुणाः (d) कैवल्यम्

Ans : (a) समन्वयात् प्रकृतिलयः सिद्धयति।

15. वैराग्यात् किं भवति?

(a) प्रकृतिलयः (b) बुद्धिलयः
(c) अहङ्कारलयः (d) भूतलयः

Ans : (a) वैराग्य प्रकृतिलय होता है जो इस कारिका से स्पष्ट है।

वैराग्यात् प्रकृतिलयः संसारो भवति राजसाद्रागात् ॥
ऐश्वर्यादविधातो विपर्ययात् तद्विपर्यासः॥

16. ज्ञानं कस्य धर्मः?

(a) पुरुषस्य (b) प्रकृतेः
(c) अहङ्कारस्य (d) बुद्धे

Ans : (d) ज्ञान बुद्धि का धर्म है। अर्थात् निश्चय करने वाला तत्त्व बुद्धि है। धर्म, ज्ञान, वैराग्य तथा ऐश्वर्य इसके सात्विक रूप हैं इनके विपरीत अर्थात् अधर्म, अज्ञान, अवैराग्य या राग तथा अनैश्वर्य इसके तामस रूप हैं।

17. केवलं शब्दादिगुणत्रयं कुत्र अभिव्यज्यते?

(a) पञ्चीकृतवायौ (b) पञ्चीकृताप्सु
(c) पञ्चीकृततेजसि (d) पञ्चीकृतपृथिव्याम्

Ans : (c) वेदान्तसार में वर्णित पञ्चीकरण सिद्धान्त में पञ्चीकृततेजसि में केवल शब्दादि गुणत्रय दृष्टिगोचर होते हैं। यहाँ तेज (अग्नि) में शब्द, स्पर्श और रूप गुण विशेषरूप से विद्यमान होते हैं।

18.लिङ्गशरीरस्य कति अवयवाः सन्ति?

(a) पञ्चदश (b) षोडश
(c) सप्तदश (d) अष्टादश

Ans : (c) लिङ्ग शरीर सूक्ष्म शरीर के सत्रह अवयव निम्न हैं-

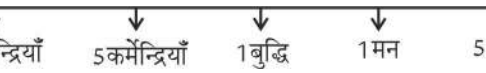

19. अद्वैतवेदान्तमते मुक्तिः?

(a) ब्रह्मज्ञानप्राप्तिः (b) ब्रह्मसादृश्यप्राप्तिः
(c) ब्रह्मसायुज्यम् (d) ब्रह्मनिष्ठः

Ans : (d) अद्वैतवेदान्त मतानुसार जीवनमुक्ति वह है जो अपने स्वरूपभूत अखण्ड ब्रह्म का साक्षात्कार हो जाने पर अज्ञान और उसके कार्य सञ्चित कर्म, संशय, विपर्यय आदि के भी बाधित हो जाने पर सम्पूर्ण बन्धनों से रहित ब्रह्मनिष्ठ (ब्रह्मवेत्ता) है।

20. विशेषगुणः कुत्र द्रव्ये नास्ति?

(a) आकाशे (b) वायौ
(c) मनसि (d) आत्मनि

Ans : (a) तर्क संग्रह के अनुसार 'विशेषास्तु अनन्ताः अर्थात् विशेष अनन्त होते हैं। तर्कसङ्ग्रहकार के अनुसार पदार्थ कुल सात है द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय, अभाव। विशेष नामक पदार्थ आकाश नामक द्रव्य में नहीं होता है। जबकि वायु को मन में तथा आत्मा में विशेष नामक पदार्थ सन्निहित रहता है।

21. लौकिकसन्निकर्षःकतिविधः?

(a) द्विविधः (b) त्रिविधः
(c) षड्विधः (d) चतुर्विधः

Ans : (c) इन्द्रियों का वस्तुओं के साथ सम्बन्ध सन्निकर्ष कहलाता है यह लौकिक सन्निकर्ष 6 प्रकार का होता है।
(1) संयोग (2) संयुक्तसमवाय (3) संयुक्तसमवेत समवाय (4) समवाय (5) समवेतसमवाय (6) विशेषणविशेष्यभाव सन्निकर्ष।

22. प्रमाणं द्विविधमिति कस्य मतम् ?

(a) वैशेषिकस्य (b) नैयायिकस्य
(c) मीमांसकस्य (d) सांख्यस्य

Ans : (a) प्रमाणं द्विविधमिति वैशेषिकस्य मतम्। अर्थात् वैशेषिक के अनुसार प्रमाण दो ही माने गये हैं–
1. प्रत्यक्ष 2. अनुमान
नैयायिक चार प्रकार के प्रमाण को मानते हैं- प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द। सांख्य तीन प्रमाण को मानते हैं- प्रत्यक्ष, उपमान, शब्द (आगम)

23. पारिमाण्डल्यं नाम किम् ?

(a) परमाणुः (b) अणुपरिमाणम्
(c) ब्रह्माण्डम् (d) त्रसरेणुः

Ans : (b) "अणुपरिमाण" को ही 'परिमाण्डल्यं' नाम से भी जाना जाता है। जबकि परमाणु नित्य एवं सूक्ष्म तत्त्वज्ञान का आधारास्तम्भ मात्र है। 'ब्रह्माण्ड' जगत शक्ति ज्ञान मात्र है।

24. पीलुपाकवादिनः के सन्ति?

(a) नैयायिकाः (b) बौद्धाः
(c) वैशेषिकाः (d) जैनाः

Ans : (c) पीलुपाकवादिनः वैशेषिकाः सन्ति। अर्थात् वैशेषिक पीलुपाकवाद सिद्धान्त के समर्थक हैं इन्होंने दो प्रमाण को स्वीकार किया है–
1. प्रत्यक्ष 2. अनुमान

25. अर्थवदधातुरप्रत्यय?

(a) संहिता (b) प्रातिपदिकम्
(c) गतिः (d) वृद्धिः

Ans : (b) प्रातिपदिक संज्ञा विधायक सूत्र "अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् । अर्थात् धातु, प्रत्यय, प्रत्ययान्त को छोड़कर अर्थवान शब्दस्वरूप की प्रातिपदिक संज्ञा होती है।

26. तुल्यास्यप्रयत्नं .....किमुच्यते?

(a) निष्ठा (b) पदम्
(c) सवर्णम् (d) सन्धिः

Ans : (c) ''तुल्यास्य प्रयत्नं सवर्णम्''। कण्ठ, तालु आदि उच्चारण स्थान तथा आभ्यन्तर प्रयत्न जिन वर्णों के समान हों वे वर्ण परस्पर सवर्ण संज्ञक होते हैं।
यथा-'त' तथा ''ध'' का उच्चारण स्थान दन्त है। अतः ये सवर्णी हैं।

27. पदस्य किं लक्षणम्?

(a) सन्धियुक्तम् (b) योग्यताकांक्षासतियुक्तम्
(c) समासयुक्तम् (d) सुप्तिङन्तम्

Ans : (d) पद ''संज्ञा विधायक सूत्र'' सुप्तिङन्तम् पदम्'' सुबन्तं तिङ्न्तं च पदसंज्ञं स्यात् । अर्थात् सुबन्त और तिङ्न्त की पद संज्ञा होती है। सुप् प्रत्यय (सु, औ, जस् आदि) और तिङ् (तिप् तस्, झि) प्रत्यय जिनके अन्त में हो उनकी पद संज्ञा होती है।
यथा - भू + तिप् = भवति।

28. निष्ठापदेन उच्येते :

(a) ल्युट्ण्वुलौ (b) क्तक्तवतू
(c) ण्वुल्-तृचौ (d) अल्पधत्री

Ans : (b) निष्ठा संज्ञा विधायक सूत्र 'क्तक्ततू निष्ठा' एतौ निष्ठा संज्ञौ स्तः। अर्थात् क्त और क्तवतु प्रत्यय की निष्ठा संज्ञा होती है क्त का त, क्तवतु का तवत् शेष बचता है।
जैसे -स्तुतः , स्तुतवान्।

29. 'मुनि' इति पदस्य का संज्ञा?

(a) टि (b) घि
(c) गति (d) नदी

Ans : (b) 'मुनि' पद की घि संज्ञा होती है। घि संज्ञा विधायक सूत्र ''शेषो घ्यसखि'' है शेष इति स्पष्टार्थम्। अर्थात् सखि शब्द को छोड़कर नदी संज्ञक से भिन्न ह्रस्व इकारान्त तथा उकारान्त शब्दों की घि संज्ञा होती है।

30. समीचीनां तालिकां चिनुत :

(A)	नदी	(i)	गतिश्च
(B)	उपधा	(ii)	ईदूदेद्द्विवचनम्
(C)	गतिः	(iii)	यू स्त्याख्यौ
(D)	प्रगृह्यम्	(iv)	अलोऽन्त्यात् पूर्व

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(iii)	(ii)	(i)	(iv)
(b)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)
(c)	(iv)	(ii)	(iii)	(i)
(d)	(i)	(iv)	(ii)	(iii)

Ans : (b) सही सुमेलित तालिका इस प्रकार है।

नदी	-	यू स्त्याख्यौ
उपधा	-	अलोऽन्त्यात्पूर्व
गतिः	-	गतिश्च
प्रगृह्यम्	-	ईदूदेद्द्विवचनम्

31. 'कर्तुरीप्सिततमं' कारकं किमुच्यते?

(a) करणम् (b) सम्प्रदानम्
(c) कर्म (d) अपादानम्

Ans : (c) कर्तुरीप्सिततमं कर्म।
कर्तुः क्रियया आप्तुमिष्टतमं कारकं कर्म संज्ञं स्यात् । अर्थात् कर्ता अपनी क्रिया के द्वारा जिसे सर्वाधिक प्राप्त करना चाहता है तो उस कारक की कर्म संज्ञा होती है।

32. क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः' -तत्र का विभक्तिः?

(a) चतुर्थी (b) तृतीया
(c) द्वितीया (d) पञ्चमी

Ans : (a) ''क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः''। अर्थात् क्रुध्, द्रुह, ईर्ष्या, असूय धातुओं तथा इनके समान अर्थ वाली धातुओं के प्रयोग में कोपभाजन सम्प्रदान कारक कहलाता है और उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है।

33. 'विशेषसंज्ञाविनिर्मुक्तः'- कः समासः?

(a) बहुव्रीहिः (b) द्विगुः
(c) केवलः (d) कर्मधारयः

Ans : (c) समास पाँच प्रकार का होता है- उसमें से केवल समास ऐसा समास है जिसे किसी विशेष नाम से अभिहित न किया गया हो। विशेषसञ्ज्ञाविनिर्मुक्तः केवल समासः।
यथा- भूतपूर्वः।

34. 'अनुरूपम्' इत्यस्य पदस्य विग्रहः वर्तते :

(a) रूपस्य प्रति (b) रूपस्य योग्यम्
(c) रूपस्य सादृश्यम् (d) रूपस्य पश्चात्

Ans : (b) अनुरूपम् इस सामासिक पद का लौकिक विग्रह ''रूपस्य योग्यम्'' और अलौकिक विग्रह 'रूप ङस् अनु' इसमें ''अव्ययं विभक्ति .....साकल्यान्त वचनेषु सूत्र से अव्ययीभाव समास होगा।

35. ऋटुरषाणमुच्चारणस्थानं किम्?

(a) तालु (b) कण्ठः
(c) ओष्ठः (d) मूर्धा

Ans : (d) ऋटुरषाणाम् मूर्धा अर्थात् ऋ, ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण् र् और ष् का उच्चारण स्थान मूर्धा है। जबकि जिह्वामूलीय का उच्चारणस्था जिह्वामूल होता है।

36. दन्त्येषु अन्तर्भवति :

(a) क् (b) प्
(c) ल् (d) म्

Ans : (c) ल् का उच्चारण स्थान दन्त होता है। ''ऌतुलसानां दन्ताः'' अर्थात् ऌ, त्, थ्, द्, ध्, न्, ल् और स् का उच्चारण स्थान दन्त होता है। जबकि ''एदैतो कण्ठतालु'' अर्थात् ए और ऐ का उच्चारण स्थान कण्ठतालु होता है।

37. 'कादयो मावसानाः' वर्णाः :

(a) स्पर्शाः (b) अन्तःस्थाः
(c) अनुनासिकाः (d) अस्पर्शाः

Ans : (a) कादयो मावसानास्पर्शाः वर्णाः। आभ्यन्तर प्रयत्न 5 प्रकार के माने गये हैं- स्पृष्ट, ईषत्स्पृष्ट, ईषद्विवृत, विवृत, संवृतम् ।
तत्रस्पृष्टं स्पर्शानाम् (अर्थात् क् से म् पर्यन्त वर्णों का प्रयत्न स्पृष्ट होता है।

38. रत्नावल्याः रचयिता कः?

(a) श्रीहर्षः (b) हर्षवर्धनः
(c) भासः (d) बाणः

Ans : (a) हर्षवर्धन विरचित रत्नावली नाटिका 4 अंकों में विभक्त है इसके प्रथम श्लोक में भगवान् शिव की स्तुति की गई है- पादाग्रस्तुतया मुहुःस्तनभरेणानीतया नम्रतां शम्भो.....क्षिप्तान्तरे पातुवः।

39. ''सञ्चारिणी दीपशिखेव रात्रौ'' इति रघुवंशमहाकाव्ये अस्मिन्संदर्भे वर्णितं भवति :

(a) दिलीपस्य गोसेवा (b) रामवनगमनम्
(c) सीताविसर्जनम् (d) इन्दुमती स्वयंवरः

Ans : (d) सञ्चारिणी दीपशिखेव रात्रौ, यं यं व्यतीतायपतिम्बरा सा। यह श्लोक रघुवंशमहाकाव्यम् के षष्ठम् सर्ग में वर्णित इन्दुमती स्वयंवर के सन्दर्भ में वर्णित है।

40. अभिज्ञानशाकुन्तले विदूषकः

(a) माधव्य (b) वसन्तकः
(c) मैत्रेयः (d) शार्ङ्गरवः

Ans : (a) ''अभिज्ञानशाकुन्तलम्'' का विदूषक (माधव्य) माढव्य है। अभिज्ञानशाकुन्तलम् महाकवि कालिदास की रचना है। यह नाटक सात अंकों में विभक्त है। इसका आधारग्रन्थ महाभारत का आदिपर्व है।

41. 'सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम्' इति वाक्यस्य कर्ता:

(a) कालिदासः (b) भारविः
(c) माघः (d) श्रीहर्षः

Ans : (b) सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम्'' इस वाक्य के कर्ता महाकवि भारवि हैं इनकी प्रसिद्ध रचना किरातार्जुनीयम् महाकाव्य बृहत्त्रयी के अन्तर्गत आती है तथा यह 18 सर्ग में विभक्त है।

42. रूपकाणां भेदाः

(a) त्रयः (b) चत्वारः
(c) पञ्च (d) दश

Ans : (d) रूपक के दश भेद स्वीकार किया गया है। यथा –
नाटकमथ प्रकरणं भाण व्यायोग समवकार डिमाः।
ईहामृगाङ्कवीथ्यः प्रसहनमिति रूपकाणि दश।।
अर्थात् – नाटक, प्रकरण, भाण, व्यायोग, समवकार, डिम, अङ्क, वीथी, प्रहसन ईहामृग ।

43. प्रहसनस्य उदाहरणम् :

(a) प्रियदर्शिका (b) प्रतिज्ञायौगन्धरायणम्
(c) मत्तविलासः (d) मृच्छकटिकम्

Ans : (c) रूपक के दश भेदों में से प्रहसन तीन प्रकार का होता है-
(1) शुद्ध प्रहसन - पाखण्डी विप्र आदि
(2) वैकृत प्रहसन - कामुक आदि
(3) संकीर्ण प्रहसन - वीथी के अङ्गों से मिश्रित
प्रहसन का उदाहरण ''मत्तविलास'' है।

44. वीभत्सरसस्य स्थायी भावः

(a) शोकः (b) हासः
(c) भयः (d) जुगुप्सा

Ans : (d) वीभत्स रस का स्थायी भाव जुगुप्सा होता है। इसका वर्ण नील है और इसके देवता महाकाल हैं।
जबकि शान्त रस का स्थायी भाव शम होता है।

45. करुणरसस्य वर्णः

(a) श्वेतः (b) श्यामः
(c) नीलः (d) कपोतः

Ans : (d) करुण रस का स्थायी भाव शोक होता है इसका वर्ण कपोतवर्ण एवं इसके देवता यम हैं।
जबकि शृंगार रस का वर्ण श्याम एवं हास्य रस का वर्ण शुक्ल होता है।

46. वाक्यं रसात्मकं काव्यमित्युक्तम् :

(a) कुन्तकेन (b) विश्वनाथेन
(c) दण्डिना (d) भरतेन

Ans : (b) आचार्य विश्वनाथ ने काव्य को परिभाषित करते हुए कहा है- ''वाक्यं रसात्मक काव्यं'' अर्थात् रसात्मक वाक्य ही काव्य हैं।

47. विश्वनाथमतानुसारेण काव्ये रसो भवति :

(a) आत्मा (b) अवयवसंस्थानम्
(c) आभूषणम् (d) शरीरम्

Ans : (a) सन्धिविग्रहिक आचार्य विश्वनाथ ने रसात्मक वाक्य को काव्य माना है। ''रस एवात्मा साररूपतया जीवन धायको यस्य'' अर्थात् रस ही आत्मा है। जिसका ऐसा वाक्य जिसका प्राणभूत (आत्मा) रस है, उस वाक्य को रसात्मक कहते हैं।

48. साक्षात्सङ्केतितार्थस्य बोधिकाः

(a) अभिधा (b) लक्षणा
(c) व्यञ्जना (d) तात्पर्यम्

Ans : (a) सन्धिविग्रहिक आचार्य विश्वनाथ कविराज ने शब्द की तीन शक्तियाँ बताई है-
(i) अभिधा (ii) लक्षणा (iii) व्यञ्जना
उसमें से अभिधा का लक्षण देते हैं- तत्र संकेतितार्थस्य बोधनादग्रिमाऽभिधा। उसी अभिधा में इस बात को कहते हैं कि- संकेतो गृह्यते जाति गुणद्रव्यक्रियासु च। अर्थात् सङ्केत जाति, गुण द्रव्य एवं क्रिया में गृहीत होता है।

49.'एको रसः करुण एव निमित्तभेदात्' इति केनोक्तम् :

(a) कालिदासेन (b) भवभूतिना
(c) भासेन (d) वाल्मीकिना

Ans : (b) ''एको रसः करुण एव निमित्त भेदात्'' यह तमसा के द्वारा कहा गया है। महाकवि भवभूति विरचित 'उत्तररामचरितम्' सात अंकों में विभक्ति है। इस श्लोक के माध्यम से भवभूति करुण रस को ही प्रधान मानते हैं, बाकी सभी रस निमित्त मात्र हैं। इसलिए इनके नाटकों में करुण रस की बहुलता देखने को मिलती है।

50. मृच्छकटिके कति अङ्काः सन्ति :

(a) पञ्चदश (b) सप्त
(c) दश (d) पञ्च

Ans : (c) मृच्छकटिकम् रूपक के दश भेदों में से प्रकरण नामक भेद है। इसके नायक चारुदत्त एवं नायिका वसन्तसेना हैं। प्रधान रस शृंगार है, गुण प्रसाद है, वृत्ति कौशिकी है। यह 10 अंकों में विभक्त है। इसके प्रथम अङ्क का नाम -अलङ्कारन्यास
दूसरे एवं तीसरे अंक का नाम- द्युतकर संवाहक एवं सन्धिच्छेद है।

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, जून-2008

संस्कृत

व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

Note : This paper contains Fifty (50) objective type questions, each question carrying two (2) marks. Attempt all the questions.

नोट : इस प्रश्नपत्र में पचास (50) बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के दो (2) अंक हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर दें।

सूचना: अस्मिन् प्रश्नपत्रे पञ्चाशत् (50) बहुवैकल्पिकप्रश्नाः सन्ति। एकैकस्य प्रश्नस्य अङ्कद्वयं (2) वर्तते। सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः।

1. 'ऐतरेयब्राह्मणम्' केन वेदेन सम्पृक्तम्।

(a) सामवेदेन (b) यजुर्वेदेन
(c) ऋग्वेदेन (d) अथर्ववेदेन

Ans : (c) ऋग्वेद से सम्बन्धित ब्राह्मण ग्रन्थ दो हैं-
(1) ऐतरेय ब्राह्मण (2) शांखायन या कौषीतकि ब्राह्मण ऐतरेय ब्राह्मण के रचयिता 'महिदास ऐतरेय हैं इसमें 40 अध्याय हैं 8 पञ्चिकायें तथा आठों पंचिकाओं में पाँच-पाँच अध्याय हैं।

2. सामसंज्ञा भवति

(a) ऋचाम् (b) गानानाम्
(c) ब्रह्मणानाम् (d) उपनिषदाम्

Ans : (b) जिस वेद में गेय मन्त्रों का विशिष्ट प्रकार से संकलन किया गया है उसे सामवेद कहते हैं।
''सामसंज्ञा गानानां भवति''।

3. यास्कमतेन कति भावविकाराः?

(a) पञ्च (b) षड्
(c) सप्त (d) अष्ट

Ans : (b) यास्क विरचित निरुक्त में वार्ष्यायण ऋषि ने क्रिया के 6 भाव विकारों की विवेचना की है-
(1) जायते (2) अस्ति (3) विपरिणमते (4) वर्धते (5) अपक्षीयते (6) विनश्यति

4. **'यम-यमीसम्वादः ऋग्वेदस्य कस्मिन् मण्डले वर्तते?**

(a) दशममण्डले (b) पञ्चममण्डले
(c) नवममण्डले (d) अष्टममण्डले

Ans : (a) यम-यमी संवाद ऋग्वेद के (10/10) दशवें मण्डल का 10वाँ सूक्त है। कठोपनिषद् कृष्णयजुर्वेद की कठ शाखा से सम्बन्धित है। लाट्यायन श्रौतसूत्र का सम्बन्ध सामवेद से है और माण्डूक्योपनिषद् अथर्ववेद का उपनिषद् है।

5. ऋग्वेदे कति अष्टकाः सन्ति

(a) दश (b) सप्त
(c) नव (d) अष्टौ

Ans : (d) ऋग्वेद के अष्टक क्रम में 8 अष्टक 64 अध्याय और 2006 वर्ग हैं। इसमें मन्त्रों की संख्या $10580\frac{1}{2}$ मन्त्र हैं।

6. कौथुमशाखा अस्ति

(a) सामवेदस्य (b) यजुर्वेदस्य
(c) अथर्ववेदस्य (d) ऋग्वेदस्य

Ans : (a) कैथुमशाखा सामवेद की शाखा है। सामवेद संहिता में साम का अर्थ है गान। इसका ऋत्विक् उद्गाता तथा देवता सूर्य है। वर्तमान् में राणायनीय, कौथुमीय, जैमिनीय ये तीन शाखाएँ उपलब्ध हैं। सामवेद दो भागों में विभक्त है-
(1) पूर्वार्चिक
(2) उत्तरार्चिक

7. अनुष्टुप् छन्दसि प्रतिपादं कत्यक्षराणि सन्ति।

(a) पञ्च (b) अष्ट
(c) दश (d) द्वादश

Ans : (b) छन्द को वेदरूपी पुरुष के पाद की संज्ञा से अभिहित किया गया है। इसमें निम्नलिखित छन्द एवं उसके चरण और अक्षर की विवेचना है-

छन्द	चरण	अक्षर
गायत्री	तीन चरण	24
अनुष्टुप्	चार चरण	32
उष्णिक्	तीन चरण	28
वृहती	चार चरण	36
पंक्ति	चार चरण	40

8. नित्याः खलु वेदा इति केषायभिमतम्।

(a) मोक्षमूलस्य
(b) जैकोबीमहोदयस्य
(c) वेबरस्य
(d) प्राचीन भारतीय परम्परायाः

Ans : (d) 'नित्याः खलु वेदा' इति प्राचीन भारतीय परम्परायाः अभिमतम् ।
अर्थात् 'नित्याः खलु वेदा' यह मत प्राचीन भारतीय परम्परा को मान्य है।

9. ऋग्वेदस्य कस्मिन् मण्डले सोमस्य स्तुतिः दृक्पथमुपयाति?

(a) द्वितीयमण्डले (b) पञ्चममण्डले
(c) दशममण्डले (d) नवममण्डले

Ans : (d) ऋग्वेद के नवममण्डल में सोम की स्तुति की गई है। सोम पृथ्वीस्थानीय देवता हैं। जिनकी स्तुति 144 सूक्तों में की गई हैं तथा अन्य मण्डलों में 6 सूक्तो में स्तुति की गई है।

10. ''नाभानेदिष्ठोपाख्यानम्'' कस्मिन् ब्राह्मणे समुपलभ्यते।

(a) ऐतरेयब्राह्मण (b) शतपथ ब्राह्मणे
(c) गोपथ ब्राह्मणे (d) तैत्तिरीय ब्राह्मणे

Ans : (a) ''नाभानेदिष्ठोपाख्यानम्'' ऐतरेय ब्राह्मणे समुपलभ्यते। ऐतरेय ब्राह्मण के रचयिता महिदास ऐतरेय हैं इसमें कुल 40 अध्याय हैं। ऐतरेय ब्राह्मण के 33वें अध्याय में प्राप्त होने वाला 'शुनः शेप' अख्यान है।

11. ''स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्'' इतिवचनं कस्यामुपनिदि विराजते?

(a) केनोपनिषदि (b) कठोपनिषदि
(c) तैत्तिरीयोपनिषदि (d) मुण्डकोपनिषदि

Ans : (c) ''स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्'' अर्थात् वेदों के पढ़ने पढ़ाने में प्रमाद नहीं करना चाहिए यह तैत्तिरीय उपनिषद् के प्रथम वल्ली के एकादश अनुवाक् का है।

12. को नाम आरण्यकस्य मुख्यविषयः?

(a) ज्ञानम् (b) उपासनादिकम्
(c) गानम् (d) स्तुतिः

Ans : (a) चतुर्धा विभाजन में आरण्यक को 'अरण्ये भवः' इस संज्ञा से अभिहित किया गया है इसे ज्ञान का मुख्य विषय माना गया है।

13. सांख्यैः स्वीकृतानि तत्वानिः

(a) 20 (b) 25
(c) 15 (d) 11

Ans : (b) साङ्ख्य में 25 तत्त्वों की सत्ता को स्वीकार्य किया गया है इन 25 तत्त्वों में पुरुष, प्रकृति, महत्तत्त्व, अहङ्कार, मन, पञ्च ज्ञानेन्द्रिय, पञ्चकर्मेन्द्रिय, पञ्चमहाभूत तथा पञ्च तन्मात्राएँ शामिल हैं।

14. सांख्यैः गुणा .....इति वर्णिता।

(a) सुख-दुःख-मोहात्मका (b) इष्टानिष्टोभयात्मका
(c) प्रीत्यप्रीति विषादात्मका (d) सुख-दुख-रागात्मका

Ans : (a) सांख्य में गुण प्रीति अप्रीति विषादात्मक है प्रकाशन, प्रवर्तन (सञ्चालन) तथा नियमन (नियन्त्रण) इनके प्रयोजन या कार्य हैं तथा एक दूसरे के सहचारी है।

15. सांख्यस्वीकृतानि प्रमाणानिः

(a) 4 (b) 5
(c) 3 (d) 2

Ans : (c) सांख्य में तीन प्रमाण माने गये हैं-
(i) प्रत्यक्ष (ii) अनुमान (iii) शब्द (आगम)
दृष्टमनुमानमाप्तवचनम् च सर्वप्रमाणसिद्धत्वात् ।
त्रिविधं प्रमाणमिष्टं प्रमेयसिद्धिः प्रमाणाद्धि ।।
इसमें से अनुमान प्रमाण-पूर्ववत् शेषवत् तथा सामान्यतो दृष्ट रूप से तीन प्रकार का होता है।

16. पुरुष-प्रकृत्योः संसर्गः .....वर्णितः।

(a) जडाजडवत् (b) मूक-बधिर-वत्
(c) अन्धमालावत् (d) पङ्ग्वन्धवत्

Ans : (d) साङ्ख्य में प्रकृति को अचेतन, एवं अन्धी कहा गया है लेकिन प्रधान की संज्ञा दी गई है जबकि पुरुष पङ्गुवत् एवं निष्क्रिय है। प्रकृति एवं पुरुष का पङ्ग्वन्धवतन्याय से सिद्ध होना बताया गया है जो इस कारिका में उद्धृत हैं-
पुरुषस्य दर्शनार्थं कैवल्यार्थं तथा प्रधानस्य।
पङ्ग्वन्धवदुभयोरपि संयोगस्तत्कृतः सर्गः।।
नोट - इसमें पङ्गुवद पुरुष वर्तते।

17. बुद्धिः ..... सहिता विज्ञानमय कोशोभवति

(a) कर्मेन्द्रियैः (b) ज्ञानेन्द्रियैः
(c) अन्तःकरणैः (d) सूक्ष्मशरीरैः

Ans : (b) वेदान्तसार में तीन कोश का विवेचन किया गया है।
बुद्धि + पञ्च ज्ञानेन्द्रिय = विज्ञानमयकोश - ज्ञानशक्तिकर्तृरूप।
मन + पञ्च ज्ञानेन्द्रियाँ = मनोमयकोश - इच्छाशक्तिकरणरूप।
पञ्च प्राण + पञ्च कर्मेन्द्रियाँ = प्राणमयकोश - क्रियाशक्तिकार्यरूप।

18. अध्यासः

(a) कार्यरूपः (b) स्मृतिरूपः
(c) कारणरूपः (d) नित्यरूपः

Ans : (b) अध्यासः स्मृतिरूपः।
अर्थात् अध्यास स्मृति रूप होता है।

19. द्रव्य प्रत्यक्षे सर्वदा सन्निकर्षः

(a) समवायः (b) तादात्म्यम्
(c) संयोगः (d) संयुक्त-समवायः

Ans : (c) अन्नंभट्ट के तर्कसङ्ग्रह में लौकिक सन्निकर्ष 6 प्रकार के बताए गये हैं।
(1) संयोग (2) संयुक्तसमवाय (3) संयुक्तसमवेतसमवाय (4) समवाय (5) समवेतसमवाय (6) विशेषणविशेष्यभाव सन्निकर्ष
इसमें से द्रव्य के प्रत्यक्ष होने पर संयोग सन्निकर्ष होता है।

20. न्याये कतिपदार्थाः स्वीकृताः

(a) 7 (b) 4
(c) 9 (d) 16

Ans : (d) न्याये सप्त पदार्थाः स्वीकृताः अर्थात् न्याय में '16' पदार्थों को स्वीकार किया गया है। जो इस प्रकार है-प्रमाण, प्रमेय, संशय, प्रयोजन, दृष्टान्त, सिद्धान्त, अवयव, तर्क, निर्णय, वाद, जल्प, वितण्डा, हेत्वाभास, छल, जाति, निग्रहस्थान आदि।

21. तद्वति तत्प्रकारकं ज्ञानं भवति-

(a) अययार्थ (b) यथार्थः
(c) स्मृतिः (d) विपर्ययः

Ans : (b) अनुभव दो प्रकार का होता है-
(1) यथार्थ अनुभव (2) अयथार्थ अनुभव
तद्वति तत्प्रकारकं ज्ञानं यथार्थम्।
यथा- रजत में यह चाँदी है ऐसा ज्ञान ही प्रमा है।

22. कार्यनियतपूर्व वृत्तित्वम्

(a) कारणत्वम् (b) कार्यत्वम्
(c) करणत्वम् (d) अकारणत्वम्

Ans : (a) कारण के लक्षण में ''कार्यनियतपूर्ववृत्तित्वम् कारणत्वम् । अर्थात् कारण कार्य से पहले आता है। कारण को पूर्ववर्ती माना गया है परन्तु सभी पूर्ववर्तियों को कारण नहीं माना गया है। पूर्ववर्ती दो प्रकार का है- नियतपूर्ववर्ती, अनियतपूर्ववर्ती।

23. समीचीनां तालिकां चिनुतः

(A) संयुक्त-समवेतसमवायः (i) मनस्
(B) विशेषणता (ii) गुणः
(C) समवायः (iii) तमस्
(D) संयोग (iv) घटरूपत्वम्

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(b)	(iv)	(iii)	(i)	(ii)
(c)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(d)	(iii)	(ii)	(i)	(iv)

Ans : (a) सही सुमेलित तालिका इस प्रकार है।

संयुक्त समवेतसमवायः	- घटरूपत्वम्
विशेषणता	- तमस्
समवायः	- गुणः
संयोगः	- मनस्

24. सम्यग्ज्ञानवान् शरीरं .....इव धारयति

(a) मूढवत् (b) चक्रभ्रमिवत्
(c) जडवत् (d) पिशाचवत्

Ans : (b) सम्यग् ज्ञानवान् शरीरं चक्रभ्रमिवत् इव धारयति।

25. यू स्त्र्याख्यौ .....भवति।

(a) धि (b) नदी
(c) समासः (d) उपधा

Ans : (b) यूस्त्र्याख्यौ नदी संज्ञा भवति
''यूस्त्र्याख्यौ नदी''= दीर्घ ईकारान्त ऊकारान्त नित्य स्त्रीलिङ्ग शब्दों की नदी संज्ञा होती है।
यथा- गौरी, नदी, वधू, आदि।

26. सर्वनामस्थानसंज्ञाविधायकं सूत्रम् .....

(a) स्वादिष्वसर्वनामस्थाने (b) सुडनपुंसकस्य
(c) सर्वनामस्थने चासम्बुद्धौ (d) सर्वादीनिसर्वनामानि

Ans : (b) सर्वनामस्थान संज्ञा विधायक सूत्र सुडनपुंसकस्य है। नपुसंकलिङ्ग को छोड़कर अर्थात् पुल्लिङ्ग एवं स्त्रीलिङ्ग में सुट् अर्थात् सु, औ, जस्, अम्, औट् ये प्रत्ययों की सर्वनामस्थान संज्ञा होती है।

27. अन्त्यादलः पूर्वो वर्णः .....

(a) उपधा (b) विभाषा
(c) उपसर्गः (d) टि

Ans : (a) अन्त्यादलः पूर्वोवर्णः उपधा सञ्ज्ञा भवति। अर्थात् अन्तिम अल् के ठीक पहले वर्ण की उपधा सञ्ज्ञा होती है। 'अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा' सूत्र से स्पष्ट है कि अन्तिम अल् (प्रत्याहार) से पूर्व वर्ण की उपधा संज्ञा होती है।

28. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत।

(a) निष्ठा (i) अपृक्तम्
(b) आत् ऐच् (ii) क्तवतु
(c) ईकारान्तं द्विवचनं (iii) वृद्धिः
(d) एकाल् प्रत्ययः (iv) प्रगृह्यम्

Ans : (c) सही समीचीन तालिका इस प्रकार है-

निष्ठा	-	क्तक्तवतू
आत् ऐच्	-	वृद्धिः
ईकारान्तं द्विवचनं	-	प्रगृह्यम्
एकाल् प्रत्ययः	-	अपृक्तम्

29. स्वतन्त्रः .....

(a) कर्ता (b) करणम्
(c) उत्तमः (d) कारकम्

Ans : (a) कर्तृ संज्ञा विधायक सूत्र ''स्वतन्त्रः कर्ता है''। क्रियायां स्वातन्त्रेण विवक्षितोऽर्थः कर्ता स्यात् । क्रिया के उत्पादन में स्वतन्त्र रूप से विवक्षित अर्थ कर्ता होता है।

30. जपमनु प्रावर्षत् .....अत्र द्वितीया केन सूत्रेण?

(a) अनुर्लक्षणे (b) कर्मप्रवचनीययुक्ते
(c) कर्मणि द्वितीया (d) लक्षणेत्थंभूताख्यान

Ans : (b) 'जपमनु प्रावर्षत्' इस वाक्य में अनु की 'अनुर्लक्षणे' सूत्र से कर्मप्रवचनीय सञ्ज्ञा हुई और 'कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया' सूत्र से जपम् में द्वितीया विभक्ति हुयी है।

31. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिका चिनुत।

(A) ग्रामदायाति (i) आख्यातोपयोगे
(B) पुष्पेभ्यः स्पृहयति (ii) ध्रवमपायेऽपादानम्
(C) पुत्रेण सहागतः (iii) स्पृहेरीप्सितः
(D) उपाध्यायादधीते (iv) सहयुक्तेऽप्रधाने

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(b)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
(c)	(ii)	(iii)	(i)	(iv)
(d)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)

Ans : (b) सही सुमेलन इस प्रकार है-

ग्रामादायाति	-	ध्रुवमपायेऽपादानम्
पुष्पेभ्यः स्पृहयति	-	स्पृहेरीप्सितः
पुत्रेण सहागतः	-	सहयुक्तेऽप्रधाने
उपाध्यायादधीते	-	आख्यातोपयोगे

32. अधिहरि .....कः समासः ?

(a) अव्ययीभावः (b) द्वन्द्वः
(c) कर्मधारयः (d) तत्पुरुषः

Ans : (a) अधिहरि में 'अव्ययीभाव समास' है। ''अधिहरि'' इस सामासिक पद का लौकिक विग्रह हरौ इति तथा अलौकिक विग्रह ''हरि ङि अधि'' होगा।

यहाँ अव्ययंविभक्ति समीप .....साकल्यान्त वचनेषु सूत्र से अव्ययीभाव समास होगा।

33. अधस्तनानां समीचीनां तालिकां चिनुत।

(A)	कर्मधारयः	(i)	पीताम्बरः
(B)	अव्ययीभावः	(ii)	त्रिभुवनम्
(C)	द्विगुः	(iii)	निर्मक्षिकम्
(D)	बहुव्रीहिः	(iv)	कृष्णसर्पः

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(i)	(iii)	(ii)	(iv)
(b)	(iii)	(i)	(iv)	(ii)
(c)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)
(d)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)

Ans : (d) सही सुमेलित तालिका इस प्रकार है-

कर्मधारयः	-	कृष्णसर्पः
अव्ययीभावः	-	निर्मक्षिकम्
द्विगुः	-	त्रिभुवनम्
बहुव्रीहिः	-	पीताम्बरः

34. अधो निर्दिष्टेषु वियोगात्मकभाषा .....

(a) संस्कृतम् (b) ग्रीक्

(c) लेटिन् (d) हिन्दी

Ans : (d)

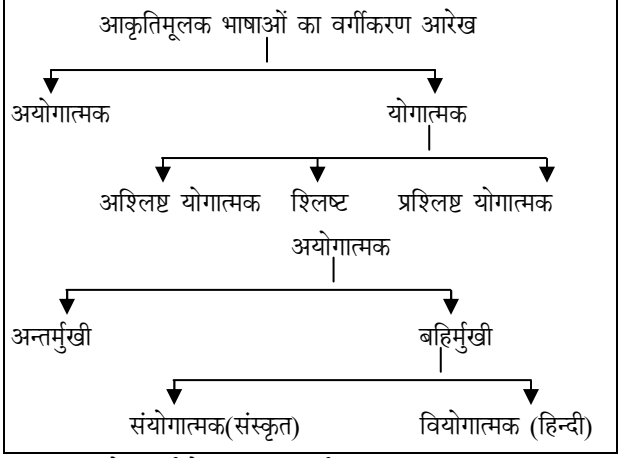

35. अधो निर्दिष्टेषु कण्ठ्यवर्णः .....

(a) ग् (b) ट्

(c) ज् (d) इ

Ans : (a) अधोलिखित में से ग् का उच्चारण स्थान कण्ठ है।

''अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः'' अर्थात् अ, क्, ख्, ग्, घ्, ङ् ह और विसर्ग (:) का उच्चारण स्थान कण्ठ है।

36. एतेषु संवृतस्वरः कः?

(a) ए (b) उ

(c) अ (d) न

Ans : (c) यत्न दो प्रकार के होते हैं– (1) आभ्यन्तर (2) बाह्य। इनमें से आभ्यन्तर प्रयत्न 5 प्रकार का होता है –(1) स्पृष्ट (2) ईषत्स्पृष्ट (3) ईषत्विवृत (4) विवृत (5) संवृत। इनमें से ह्रस्व 'अ' का प्रयोग दशा में संवृत प्रयत्न होता है किन्तु प्रक्रिया दशा में विवृत ही होता है।

37. 'आपरितोषाद्विदुषां नसाधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम्' इति वाक्यं वर्तते-

(a) भासस्य (b) भवभूते

(c) भारवेः (d) कालिदासस्य

Ans : (d) '' आ परितोषाद् विदुषां न साधु मन्ये प्रयोग विज्ञानम्''। अर्थात् जब तक विद्वान् सन्तुष्ट न हो जाए तब तक मैं अपने अभिनय कौशल को सफल नहीं समझता यह अभिज्ञानशाकुन्तलं के प्रथम अंक में वर्णित सूत्रधार का कथन है।

38. 'प्रबोधचन्द्रोदयः' -

(a) चम्पूकाव्यम् (b) गद्यकाव्यम्

(c) पद्यकाव्यम (d) रूपकम्

Ans : (d) प्रबोधचन्द्रोदय की रचना कृष्णमिश्र ने की थी। यह रूपक के भेद नाटक (प्रतीकात्मक) काव्यविधा के है यह 6 अंकों में विभक्त है इसमें अङ्गी रस शान्त है।

39. 'छायाङ्क' अस्मिन् नाटके निबद्धमस्ति-

(a) अभिज्ञानशाकुन्तले (b) उत्तररामचरिते

(c) मुद्राराक्षसे (d) प्रतिमानाटके

Ans : (b) महाकवि भवभूति विरचित उत्तररामचरितम् नाटक में 7 अंक हैं इसके प्रत्येक अंक के नाम इस प्रकार हैं-

प्रथम अंक	-	चित्रदर्शन
द्वितीय अंक	-	पञ्चवटी प्रवेश
तृतीय अंक	-	छायाङ्क
चतुर्थ अंक	-	कौशल्याजनकयोग
पञ्चम् अंक	-	कुमारविक्रमो
षष्ठम् अंक	-	कुमार प्रत्यभिज्ञान
सप्तम अंक	-	सम्मेलन (गर्भाङ्क)

40. समीचीना तालिकां चिनुत।

(A)	ऋतुसंहारम्	(i)	चारित्रिककाव्यम्
(B)	भजगोविन्दम्	(ii)	महाकाव्यम्
(C)	राजतरङ्गिणी	(iii)	खण्डकाव्यम्
(D)	नैषधीयचरितम्	(iv)	स्तोत्रकाव्यम्

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(iv)	(i)	(iii)	(ii)
(b)	(i)	(iii)	(ii)	(iv)
(c)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)
(d)	(i)	(ii)	(iv)	(iii)

Ans : (c) सही सुमेलित तालिका इस प्रकार है-

ऋतुसंहारम्	-	खण्डकाव्यम्
भजगोविन्दम्	-	स्तोत्रकाव्यम्
राजतरङ्गिणी	-	चारित्रिककाव्यम्
नैषधीयचरितम्	-	महाकाव्यम्

41. 'स्तनयुगमश्रुस्रातं समीपतरवर्तिहृदयशोकाग्नेः।
चरित विमुक्ताहारं व्रतमिव भवतो रिपुस्त्रीणाम् ॥
इति श्लोकः निबद्धः वर्तते-

(a) रघुवंशे (b) हर्षचरिते
(c) दशकुमारचरिते (d) कादम्बर्यां

Ans : (d) स्तनयुगमश्रुस्रातं समीपतरवर्तिहृदयशोकाग्नेः चरित विमुक्ताहारं व्रतमिव भवतो रिपुस्त्रीणाम् ।
यह श्लोक महाकवि बाणभट्ट प्रणीत कादम्बरीकथा मुखम् से सम्बन्धित है।

42. 'प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः 'इति वचनं वर्तते

(a) वनेचरस्य (b) युधिष्ठिरस्य
(c) नारदस्य (d) दौपद्याः

Ans : (a) महाकवि भारवि विरचित 'किरातार्जुनीयम्' नामक महाकाव्य में 18 सर्ग हैं इसके प्रथम सर्ग में वनेचर द्वारा समस्त वृत्तान्त को बताने के बाद यह पंक्ति कही गयी है- परप्रणीतानि वचांसि चिन्वतां, प्रवत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः।

43. 'शरीरभाजां भवदीयदर्शनं व्यनक्ति कालत्रितयेऽपि योग्यताम्' इदं वाक्यमस्ति-

(a) माघे (b) किरातार्जुनीये
(c) नैषधे (d) कुमारसंभवे

Ans : (a) शरीरभाजां भवदीय दर्शनं, व्यनक्ति कालत्रितयेऽपि योग्यताम् । यह कथन महाकवि माघ विरचित 'शिशुपालवधम्' में भगवान् श्रीकृष्ण के मुख से नारदजी के दर्शन के महत्त्व के सन्दर्भ में कहा गया है।

44. 'मालतीमाधव' नाटकस्य इतिवृत्तं वर्तते-

(a) प्रसिद्धम् (b) उत्पाद्यम्
(c) कविकल्पितम् (d) चरित्रिकम्

Ans : (c) 'मालतीमाधवम्' महाकवि भवभूति का प्रकरण ग्रन्थ है जो 10 अंकों में विभक्त है तथा शृंगार रस प्रधान नाटक है इसका इतिवृत्त कविकल्पित है।

45. 'उपसंहृति' नाम

(a) अवस्थाविशेषः
(b) अर्थोपक्षेपकविशेषः
(c) रूपकविशेषः
(d) सन्धिविशेषः

Ans : (d) नाट्य में 5 सन्धियों का उल्लेख मिलता है- (1) मुख (2) प्रतिमुख (3) गर्भ (4) विमर्श (5) निर्वहण या उपसंहृति
उपसंहृति का लक्षण-''बीजवन्तो मुखाद्यार्था .....निर्वहण हि तत्।

46. 'चूलिका' तावत्

(a) अर्थोपक्षेपकः (b) सन्धि
(c) अवस्था (d) रूपकम्

Ans : (a) अर्थोपक्षेपक 5 प्रकार के माने गये हैं-
(1) विष्कम्भक (2) प्रवेशक (3) चूलिका (4) अंकास्य (5) अंकावतार
इनमें से-अन्तर्जवनिकासंस्थैश्चूलिकार्थस्य सूचना यह चूलिका का लक्षण है।

47. अद्भुतरसस्य स्थायिभावः भवति-

(a) हासः (b) उत्साहः
(c) विस्मयः (d) जुगुप्सा

Ans : (c) अद्भुत रस का स्थायी भाव विस्मय है तथा वर्ण पीत है और इसके देवता गन्धर्व हैं जो इस श्लोक में निहित है-
अद्भुतो विष्मयस्थायिभावो गन्धर्वदैवतः ।
पीतवर्णो वस्तु लोकातिगानालम्बनं मतम् ॥

48. 'स्मितम्'

(a) शृङ्गाररसभेदः (b) हास्यरसभेदः
(c) वीररसभेदः (d) शान्तिरसभेदः

Ans : (b) हास्य रस के ये 6 भेद हैं-
(1) स्मित (2) हसित (3) विहसित (4) उपहसित (5) अपहसित (6) अतिहसित
ये 6 हास्य भेद प्रहसन नामक रूपक के भेद में पाये जाते हैं।

49. संकेत कुत्र गृह्यते-

(a) जाता (b) व्यक्तौ
(c) जातिविशिष्टव्यक्तौ (d) जातिव्यक्त्याकृतिषु

Ans : (c) सङ्केत जातिविशिष्टव्यक्तौ गृह्यते। शब्द की तीन शक्तियाँ होती है उसमें से संकेतिक अर्थ का बोध कराने वाली शक्ति अभिधा कहलाती है। यह संकेत चतुर्विध उपाधियों में ही मान्य है-
ये 4 हैं- जाति, गुण, द्रव्य, क्रिया।

50. कस्य काव्यलक्षणं खण्डितं विश्वनाथेन?

(a) मम्मटस्य (b) भामहस्य
(c) राजशेखरस्य (d) दण्डिनः

Ans : (a) आचार्य मम्मट के काव्यलक्षण- ''तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि'' का खण्डन आचार्य विश्वनाथ ने किया।
विश्वनाथ का काव्यलक्षण- ''वाक्यं रसात्मकं काव्यं'' है।

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, दिसम्बर-2008

संस्कृत

व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

Note : This paper contains fifty (50) objective-type questions carrying two (2) marks. Attempt all of them.

नोट : इस प्रश्न पत्र में पचास (50) बहु-विकल्पीय प्रश्न है। प्रत्येक प्रश्न के दो (2) अंक हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर दें।

सूचना : अस्मिन् प्रश्नपत्रे **पञ्चाशत् (50)** बहु-वैकल्पिक प्रश्नाः सन्ति। एकैकस्य प्रश्नस्य **अङ्कद्वयं** वर्तते।

सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः।

1. गोपथब्राह्मणं केन वेदेन साकं सम्बद्धं वर्तते।

(a) यजुर्वेदेन (b) सामवेदेन
(c) अथर्ववेदेन (d) ऋग्वेदेन

Ans : (c) गोपथ ब्राह्मण का सम्बन्ध अथर्ववेद से है इसके कोई भी आरण्यक नहीं हैं। अन्य वेदों के ब्राह्मण ग्रन्थ निम्न हैं-

शतपथ ब्राह्मण	-	शुक्लयजुर्वेद
तैत्तिरीय ब्राह्मण	-	कृष्णयजुर्वेद
ऐतरेय ब्राह्मण	-	ऋग्वेद

2. 'गृहपतिः' इति विशेषणं कस्य देवस्य प्रसिद्धम् ।

(a) इन्द्रस्य (b) सवितुः
(c) अश्विनोः (d) अग्नेः

Ans : (d) अग्नि सूक्त ऋग्वेद के प्रथम मण्डल का प्रथम सूक्त है। **अग्नि के विशेषण-**गृहपति, विश्वपति, दमूनस्, घृतलोम, दूत कहा गया है और इसे माता, पिता, पुत्र, भ्राता व मनुष्य का मित्र भी कहा गया है।

3. ''नाहं वेद भ्रातृत्वं नो स्वसृत्वम्'' इति मन्त्रपादः कुत्र विराजते।

(a) यमयमीसंवादे (b) सरमापणिसंवादे
(c) विश्वामित्रनदीसंवादे (d) पुरूरवा-उर्वशीसंवादे

Ans : (b) ''नाहं वेद भ्रातृत्वं नो स्वसृत्वम्''
यह मन्त्रांश ऋग्वेद के दशं मण्डल का 108वाँ सूक्त सरमा पणि संवाद से सम्बद्ध है।

4. वेदाङ्गेषु ज्योतिषमुपमीयते?

(a) हस्तेन (b) मुखेन
(c) पादेन (d) चक्षुषा

Ans : (d) ज्योतिष को वेद पुरुष के नेत्रों के रूप में स्वीकार किया गया है।
''ज्योतिषामयनं चक्षुः''
आजकल वेदाङ्ग ज्योतिष नामक एक ही ग्रन्थ प्राप्त होता है इसके दो प्रतिनिधि ग्रन्थ हैं -

आर्च ज्योतिष	-	ऋग्वेद से सम्बद्ध
यजुष् ज्योतिष	-	यजुर्वेद से सम्बद्ध

5. ''अन्धं तमः प्रविशन्ति'' इति वचनं कस्यामुपनिषदि वर्तते?

(a) कठोपनिषदि (b) ईशोपनिषदि
(c) केनोपनिषदि (d) मुण्डकोपनिषदि

Ans : (b) अन्धं तमः प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते।
ततो भूय इव ते तमो य विद्यायां रताः।।
यह मन्त्र शुक्लयजुर्वेद की माध्यन्दिन शाखा का 40 वें अध्याय से सम्बद्ध ईशावास्योपनिषद् का है।

6. नैरुक्तमत कति देवताः ?

(a) तिस्रः (b) पञ्च
(c) चतस्रः (d) षट्

Ans : (a) यास्काचार्य विरचित निरुक्त में 12 अध्याय तथा 2 अध्याय परिशिष्ट के रूप में हैं, परिशिष्ट सहित कुल 14 अध्याय हैं। इसमें तीन काण्ड हैं- (1) नैघण्टुक (2) नैगम (3) दैवत
उसमें से दैवत काण्ड में तीन प्रकार के देवताओं का वर्णन है-

(i) अन्तरिक्ष स्थानीय	-	इन्द्र, रुद्र, वायु
(ii) पृथ्वी स्थानीय	-	पृथ्वी, सोम, अग्नि
(iii) द्युस्थानीय	-	वरुण, मित्र, विष्णु, सवितृ ।

7. चरणव्यूहानुसारम् अथर्ववेदस्य कतिशाखाः?

(a) षट् (b) सप्त
(c) नव (d) दश

Ans : (c) चरणव्यूह के अनुसार अथर्ववेद की 9 शाखा उपलब्ध थी- पिप्पलाद, तौद (स्तौद), मौद, शौनकीय, जाजल, जलद, ब्रह्मवेद, देवदर्श और चारणवैद्य।
अतः स्पष्ट है कि अब विलुप्त हुई मौद शाखा का सम्बन्ध अथर्ववेद से है। जबकि सामवेद की शाखा कौथुमीयशाखा, राणायनीय, जैमिनीय है।

8. कस्य स्थानस्य देव इन्द्रः?

(a) द्युस्थानस्य (b) अन्तरिक्षस्थानस्य
(c) अश्विनोः सूक्तस्य (d) अग्निसूक्तस्य

Ans : (b) इन्द्र अन्तरिक्ष स्थानीय देवता हैं। उसमें निरुक्त के दैवत काण्ड में तीन प्रकार के देवताओं का वर्णन है-

(i) अन्तरिक्ष स्थानीय	-	इन्द्र, रुद्र, वायु
(ii) पृथ्वी स्थानीय	-	पृथ्वी, सोम, अग्नि
(iii) द्युस्थानीय	-	वरुण मित्र, विष्णु, सवितृ

9. सामवेदसम्बद्धानि कति ब्राह्मणानि सन्ति-

(a) दश (b) अष्टौ
(c) पञ्च (d) एकादश

Ans : (b) सामवेद में 9 ब्राह्मण ग्रन्थ प्राप्त होते हैं लेकिन दिये गये विकल्प के अनुसार 8 ही हैं।

(1) पञ्चविंश (ताण्ड्य)	(2) षड्विंश	(3) छान्दोग्य
(4) सामविधान	(5) आर्षेय	(6) जैमिनीय
(7) वंश	(8) देवता अध्याय	(9) संहितोपनिषद्

10. 'देवानां चक्षुः सुभगा वहन्ती' मंत्राशोऽयं कुत्र प्राप्तः?

(a) इन्द्रसूक्तस्य (b) उषस् सूक्तस्य
(c) अश्विनोः सूक्तस्य (d) अग्निसूक्तस्य

Ans : (b) 'देवानां चक्षुः सुभगा वहन्ती' यह मत्रांश उषस् सूक्त से सम्बन्धित है।

11. यज्ञकालनिर्णयार्थं कस्य वेदाङ्गस्योपयोगः?

(a) कल्पस्य (b) ज्योतिषस्य
(c) शिक्षायाः (d) निरुक्तस्य

Ans : (b) यज्ञकाल का निर्धारण के लिए ज्योतिष वेदाङ्ग का उपयोग किया जाता है।
ज्योतिष को वेद पुरुष के नेत्रों के रूप में स्वीकार किया गया है।
''ज्योतिषामयनं चक्षुः''
आजकल वेदाङ्ग ज्योतिष नामक एक ही ग्रन्थ प्राप्त होता है इसके दो प्रतिनिधि ग्रन्थ हैं -

आर्च ज्योतिष	-	ऋग्वेद से सम्बद्ध
यजुष् ज्योतिष	-	यजुर्वेद से सम्बद्ध

12. अथर्ववेदे कति काण्डानि सन्ति

(a) विंशतिः (b) दश
(c) षट् (d) अष्टादश

Ans : (a) अथर्ववेद में 20 काण्ड 730 सूक्त लगभग 6000 मंत्र हैं, 'आग्नीघ्र' नामक ऋत्विक् ब्रह्मा की गणों में आते हैं अर्थात् अथर्ववेद के ऋत्विक ब्रह्मा हैं।

13. अध्यासं पण्डिताः इतिमन्यन्ते।

(a) माया (b) प्रकृतिः
(c) अविद्या (d) ज्ञानम्

Ans : (a) अध्यासं पण्डिताः माया इति मन्यते।
माया भाव रूप है सत् नहीं उसे भाव रूप कहने से तात्पर्य है कि वह अभाव रूप नहीं है।

14. वेदान्ते 'अथ' शब्दस्य अर्थो भवति-

(a) मङ्गलः (b) अधिकारः
(c) आनन्तर्यः (d) निरर्थकः

Ans : (c) वेदान्तसार में 'अथ' आनन्तर्य अर्थ में हुआ हैं अमरकोष में अथ शब्द के अर्थों को बताया गया है।
(1) मङ्गल, अनन्तर, प्रारम्भ, प्रश्न एवं कात्स्न्र्य अर्थात् पूर्णता।

15. सदानन्दस्य गुरोः नाम-

(a) आत्मानन्दः (b) सदानन्दः
(c) रामानन्दः (d) अद्वयानन्दः

Ans : (d) सदानन्द योगीन्द्र का वेदान्तसार अद्वैतवेदान्त का ग्रन्थ है। अद्वैतवेदान्त का मूलाधार मुख्यतः उपनिषद् एवं श्रुतियाँ हैं। जिन पर महर्षि कृष्णद्वैपायन व्यास द्वारा रचित ब्रह्मसूत्र आधृत हैं।
सदानन्द के गुरू का नाम अद्वयानन्द था।

16. शब्दसाक्षात्कारे सन्निकर्षः।

(a) संयोगः (b) समवायः
(c) विशेषणता (d) संयुक्त-विशेषणता

Ans : (b) शब्द के साक्षात्कार होने पर समवायसन्निकर्ष होता है अर्थात् कान से शब्द का प्रत्यक्ष ही समवाय सन्निकर्ष है।
नोट- सन्निकर्ष छः प्रकार का होता है।
संयोग, संयुक्तसमवाय, संयुक्तसमवेतसमवाय, समवाय, समवेत समवाय, विशेषणविशेष्यभाव।

17. न्याये स्वीकृतागुणाः -

(a) 12 (b) 20
(c) 25 (d) 24

Ans : (d) न्याय वैशेषिक मतानुसार 24 गुणों को स्वीकार किया गया है।
वे 24 गुण इस प्रकार हैं- रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, संख्या, परिमाण, पृथक, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व, गुरुत्व, द्रव्यत्व, स्नेह, शब्द, बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, धर्म, अधर्म, संस्कार।

18. प्रागभाव प्रतियोगिभवति -

(a) कारणम् (b) कार्यम्
(c) करणम् (d) अन्योन्याभावः

Ans : (b) प्रागभाव प्रतियोगि कार्यं भवति। अभाव 4 प्रकार का है- प्रागभाव, प्रध्वंसाभाव, अत्यन्ताभाव, अनोन्याभाव। इसमें से प्रागभाव का प्रतियोगी कार्य होता है। अर्थात् वस्तु की उत्पत्ति के पूर्व का कारण में उसका अभाव। यथा- (मिट्टी में घड़े का अभाव)।

19. अनादि सान्तः भवति -

(a) प्रागभावः (b) अन्योन्याभावः
(c) ध्वंसाभावः (d) अव्यन्ताभावः

Ans : (a) अनादिसान्तः प्रागभावः भवतिः। अर्थात् अनादिसान्त प्रागभाव होता है।
अभाव 4 प्रकार का है- प्रागभाव, प्रध्वंसाभाव, अत्यन्ताभाव, अन्योन्याभाव। इसमें से प्रागभाव का प्रतियोगी कार्य होता है। अर्थात् वस्तु की उत्पत्ति के पूर्व का कारण में उसका अभाव। यथा- (मिट्टी में घड़े का अभाव)

20. तन्तवः पटस्य भवति।

(a) निमित्त-कारणम्
(b) असमवायि-कारणम्
(c) समवायिकारणम्
(d) सहकारि-कारणम्

Ans : (c) तर्कसङ्ग्रह में कारण के तीन प्रकार बताए गये हैं-
समवायी कारण
असमवायी कारण
निमित्त कारण
इसमें से तन्तु का पट के बीच समवायी कारण है क्योंकि तन्तु पट में समवाय सम्बन्ध से रहता है।

21. सांख्यानुसारं प्रकृतिः..... इव।

(a) माता (b) गृहिणी
(c) सुता (d) नर्तकी

Ans : (d) प्रकृति को नर्तकी कहा गया है। सांख्यकारिका में 25 तत्वों की विवेचना की गई है जिसमें कुछ पदार्थ प्रकृति तथा कुछ विकृति रूप में एवं कुछ दोनों रूपों में प्राप्त होते हैं, जिसमें प्रकृति को जड़ माना गया है और अन्धी की संज्ञा दी गई और जब इसका पुरुष से संयोग होता है तो वह चेतनावती हो जाती है इन दोनों के संयोग को ही 'पङ्ग्वन्धवत्' की संज्ञा दी गई है।

22. समीचीनां तालिकां चिनुत।

(A) आत्मा (i) गुणः
(B) शब्द (ii) अभावः
(C) तमस् (iii) द्रव्यम्
(D) परत्व (iv) जातिः

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(iii)	(ii)	(i)	(iv)
(b)	(i)	(iii)	(ii)	(iv)
(c)	(iii)	(i)	(ii)	(iv)
(d)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)

Ans : (c) सही तालिका इस प्रकार है-

आत्मा	-	द्रव्यम्
शब्दः	-	गुणः
तमस्	-	अभावः
परत्वम्	-	जातिः

23. समीचीनां तालिकां चिनुत।

(A) विश्वनाथः (i) अर्थसंग्रहः
(B) अन्नंभट्टः (ii) सांख्यकारिका
(C) ईश्वरकृष्णः (iii) तर्कसंग्रहः
(D) लौगाक्षिभास्करः (iv) कारिकावली

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(b)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(c)	(iv)	(iii)	(i)	(ii)
(d)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)

Ans : (a) सही सुमेलित तालिका इस प्रकार है-

विश्वनाथः	-	कारिकावली
अन्नंभट्ट	-	तर्कसङ्ग्रह
ईश्वरकृष्णः	-	साङ्ख्यकारिका
लौगाक्षिभास्कर	-	अर्थसङ्ग्रह

24. सदानन्दमतेन ब्रह्म इति।

(a) ज्ञानम् (b) विज्ञानम्
(c) अवस्तु (d) वस्तु

Ans : (d) सदानन्द योगीन्द्र मतानुसार ब्रह्म वस्तु है।
वस्तुः सच्चिदानन्दानन्ताद्वयं ब्रह्म।
अज्ञानादिसकलजडसमूहोऽवस्तु।

25. वर्णानामतिशयितः सन्निधिः संज्ञः स्यात् ।

(a) प्रातिपदिकम् (b) नदी
(c) संहिता (d) उपसर्जनम्

Ans : (c) ''परः सन्निकर्षः संहिता'' अर्थात् वर्णों के अतिशय सामीप्य की संहिता सञ्ज्ञा होती है।
जैसे- सुधी + उपास्यः
इसमें सुधी के ईकार और उपास्य के उकार के अत्यधिक सामीप्य के कारण यहाँ संहिता संज्ञा हुई है। जबकि ''अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्'' सूत्र से धातु प्रत्यय और प्रत्ययान्त के अतिरिक्त कोई भी शब्द जो अर्थयुक्त हो, वह प्रातिपदिक होता है। ''शेषो घ्यसखि'' सूत्र से घि संज्ञा ''अलोऽन्त्यातपूर्व उपधा'' सूत्र से उपधा संज्ञा और ''क्तक्तवतू निष्ठा'' से निष्ठा संज्ञा होती है।

26. सखिभिन्नस्य इवर्णोवर्णान्तस्य संज्ञा।

(a) नदी (b) निष्ठा
(c) कृत् (d) घि

Ans : (d) ''शेषो घ्यसखि'' सूत्र के अनुसार सखि शब्द को छोड़कर नदी संज्ञक से भिन्न ह्रस्व इकारान्त तथा उकारान्त शब्दों की घि संज्ञा हो। यथा- हरि, रवि आदि।

27. निषेधविकल्पयोः संज्ञा।

(a) उपधा (b) विभाषा
(c) परिभाषा (d) प्रातिपदिकम्

Ans : (b) विभाषा संज्ञा विधायक सूत्र ''न वेति विभाषा'' निषेध विकल्पयोर्विभाषा संज्ञा स्यात् । अर्थात् निषेध और विकल्प को विभाषा कहा जाता है।

28. ईदूदेदन्तं द्विवचनं

(a) प्रकृतिभावः (b) निष्ठ
(c) प्रगृह्यम् (d) विभाषा

Ans : (c) प्रगृह्य संज्ञा विधायक सूत्र ''ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्'' अर्थात् ई,ऊ,ए जिनके अन्त में हो ऐसे द्विवचन पदो की संज्ञा प्रगृह्य होती है-
यथा- हरी एतौ, विष्णू इमौ, गङ्गे अमू

29. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत।

(A) क्तक्तवतू (i) सवर्णम्
(B) तुल्यास्यप्रयत्नं (ii) गुणः
(C) अदेङ (iii) टि
(D) अचोऽन्त्यादि (iv) निष्ठा

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(iv)	(iii)	(i)	(ii)
(b)	(iv)	(i)	(ii)	(iii)
(c)	(i)	(iv)	(iii)	(ii)
(d)	(iii)	(ii)	(iv)	(i)

Ans : (b) सही समीचीन तालिका इस प्रकार है-

क्तक्तवतू	-	निष्ठा
तुल्यास्यप्रयत्नं	-	सवर्णम्
अदेङ	-	गुणः
अचोऽन्त्यादि	-	टि

30. अपादानादिविशेषैः अविवक्षितं कारकं

(a) अपादानम् (b) कर्म

(c) करणम् (d) किमपि न

Ans : (b) 'अकथितं च' सूत्र यह विधान करता है कि ''अपादानादिविशेषैरविवक्षितं कारकं कर्म संज्ञं स्यात्'' अर्थात् जब कारक की अपादान इत्यादि विशेष संज्ञा न करनी हो तो उसकी कर्म संज्ञा होती है।

31. क्रियासिद्धौ प्रकृष्टोपकारकं कारकं

(a) करणम् (b) अपादानम्

(c) तादर्थ्यम् (d) उपकारकम्

Ans : (a) ''साधकतमं करणम्'' क्रिया सिद्धौ प्रकृष्टोपकारकं करणसंज्ञं स्यात् । अर्थात् क्रिया की सिद्धि में जो सबसे अधिक सहायक होता है उसकी करण संज्ञा होती है।

32. जटाभिः तापसः - अत्र तृतीया केन सूत्रेण?

(a) कर्तृकरणयोस्तृतीया (b) इत्थंभूतलक्षणे

(c) येनाङ्गविकारः (d) हेतौ

Ans : (b) ''जटाभिः तापसः यहाँ तृतीया विभक्ति ''इत्थंभूतलक्षणे'' सूत्र से हुआ है।
जब कोई चिह्नविशेष से पहचाना जाता है तो उस चिह्न विशेष में तृतीया विभक्ति होती है।

33. सर्पिषः ज्ञानम् अत्र षष्ठी केन सूत्रेण?

(a) ज्ञोऽविदर्थस्य करणे

(b) षष्ठी शेषे

(c) अधीगर्थदयेशां कर्मणि

(d) कर्तृकर्मणोः कृति

Ans : (a) ''सर्पिषो ज्ञानम्'' यह ''ज्ञोऽविदर्थस्य करणे' का उदाहरण है।
नोट - ज्ञानेतज्ञानार्थस्य करणे शेषत्वेन विवक्षिते षष्ठी स्यात् । अर्थात् ज्ञानभिन्नार्थक ज्ञा धातु के करण में षष्ठी होती है।

34. अधो निर्दिष्टेषु तालव्यवर्णः

(a) ज् (b) ख्

(c) ङ् (d) म्

Ans : (a) दिए गये विकल्पों में ज् का उच्चारण स्थान तालु है। ''इचुयशानां तालुः'' अर्थात् -इ च् छ् ज् झ् य् और श् का उच्चरण स्थान तालु होता है।

35. अधो निर्दिष्टेषु संयोगात्मकभाषा

(a) अंग्रेजी (b) संस्कृतम्

(c) हिन्दी (d) बंगाल

Ans : (b) दिए गये विकल्पों में संयोगात्मक भाषा संस्कृत है।
योगात्मक भाषाएं उनको कहते हैं जिनमें प्रकृति प्रत्यय सम्बन्ध तत्त्व का संयोग विभिन्न प्रकार से हो सकता है योगात्मक भाषाएँ कहलाती हैं।

36. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत।

(A) सहरि		(i) तत्पुरुषः
(B) कण्ठेकालः		(ii) द्वन्द्वः
(C) पाणिपादम्		(iii) अव्ययीभावः
(D) अनश्वः		(iv) बहुव्रीहिः

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(i)	(ii)	(iv)	(iii)
(b)	(iii)	(ii)	(i)	(iv)
(c)	(ii)	(iv)	(iii)	(i)
(d)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)

Ans : (d) सहरि - अव्ययीभाव समास
कण्ठेकालः - बहुव्रीहिः
पाणिपादम् - द्वन्द्व समास
अनश्वः - नञ् तत्पुरुष समास

37. 'सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः' इति वाक्यं वर्तते-

(a) भर्तृहरेः (b) भासस्य

(c) कालिदासस्य (d) भवभूतेः

Ans : (c) असंशयं क्षत्रपरिग्रहक्षमा, यदार्यमस्यामभिलाषि मे मनः सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणन्तः करणप्रवृत्तयः। यह श्लोक 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' का है। यह महाकवि कालिदास का प्रसिद्ध नाटक है, यह 7 अंकों में विभक्त है।

38. 'मथुराविजयम्' नाम काव्यं अन्तर्भवति-

(a) लघुकाव्येषु (b) चारित्रककाव्येषु

(c) गद्यकाव्येषु (d) तोत्रकाव्येषु

Ans : (b) ''मथुराविजयम्'' नामक काव्य चारित्रिककाव्येषु अन्त र्भवति।

39. वरतन्तुशिष्यस्य कुत्सस्य वृत्तान्तमस्मिन् काव्ये निबद्धं वर्तते-

(a) कुमारसंभवे (b) रघुवंशे

(c) माघे (d) किराजार्जुनीये

Ans : (b) वरतन्तुशिष्यस्य कौत्सस्य वृत्तान्तं रघुवंशमहाकाव्ये निबद्धं वर्तते।
अर्थात् वरतन्तु के शिष्य कौत्स का वृत्तान्त 'रघुवंशमहाकाव्यम्' में वर्णित है।
यह काव्य 19 सर्गों में विभक्त है।

40. समीचीनां तालिकां चिनुत।

(A) मुरारिः		(i) मुद्राराक्षसम्
(B) शूद्रक		(ii) प्रतिमानाटकम्
(C) भास		(iii) मृच्छकटिकम्
(D) विशाखदत्तः		(iv) अनर्घराघवम्

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)
(b)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(c)	(ii)	(i)	(iv)	(iii)
(d)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)

Ans : (b) सही सुमेलित तालिका इस प्रकार है-

मुरारिः	-	अनर्घराघवम्
शूद्रकः	-	मृच्छकटिकम्
विशाखदत्तः	-	मुद्राराक्षसम्
भासः	-	प्रतिमानाटकम्

41. अनिर्वर्णनीयं परकलत्रम्' इति वाक्यं भवति-

(a) भरतस्य (b) दुष्यन्तस्य

(c) युधिष्ठिरस्य (d) रघोः

Ans : (b) अभिज्ञानशाकुन्तलम् के पञ्चम अंक में राजा द्वारा कहा गया कि पर स्त्री की ओर ध्यान से देखना उचित नहीं है ''अनिर्वर्णनीयम् परकत्रम्''

42. मुद्राराक्षसनाटकस्य कथावस्तु भवति-

(a) प्रसिद्धम् (b) उत्पादद्यम्

(c) कविकल्पितम् (d) चारित्रकम्

Ans : (a) विशाखदत्त द्वारा रचित ''मुद्राराक्षसम्' संस्कृत साहित्य का अद्वितीय नाटक है। यह 7 अंकों में विभक्त है। यह वीर रस प्रधान नाटक है एवं इसके नायक चाणक्य तथा प्रतिनायक राक्षस है। कृतककोपवृत्तान्त का उल्लेख इसी नाटक में है। यह इतिहास प्रसिद्ध है।

43. 'प्राप्त्याशा' नाम -

(a) सन्धिविशेषः

(b) अवस्थाविशेषः

(c) रूपकविशेषः

(d) अनुभावविशेषः

Ans : (b) दशरूपकम् में 5 कार्यावस्थाओं का उल्लेख है- आरम्भ, यत्न, प्रप्त्याशा, नियताप्ति, फलागम। इसमें से प्राप्त्याशा का लक्षण किया जा रहा है- उपायोपायशंकाभ्याम् प्राप्त्याशा प्राप्ति सम्भव अतः विकल्प B सही है। आते हैं।

44. अश्वघोषस्य कृतिरियम् -

(a) हर्षचरितम् (b) नलचरितम्

(c) नैषधीयचरितम् (d) बुद्धचरितम्

Ans : (d) अश्वघोष ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए बुद्धचरित' नामक महाकाव्य की रचना की इसमें अङ्गी रस शान्त है इसमें बुद्ध के जन्म से लेकर महानिर्वाण तक की कथा वर्णित है।

45. करुणरसस्य स्थायिभावः कः?

(a) शोकः (b) शमः

(c) हासः (d) उत्साहः

Ans : (a) करुण रस का स्थायी भाव शोक हैं इसका वर्ण कपोतवर्ण है एवं इसके देवता यम हैं।

46. पताकाप्रकरीभेदात् द्विधा भवति-

(a) प्राकरणिकम् (b) प्रासङ्गकम्

(c) प्रधानम् (d) चारित्रकम्

Ans : (b) कथावस्तु दो प्रकार का होता है-
(1) आधिकारिक कथावस्तु (2) प्रासंगिक कथावस्तु
इसमें से प्रासङ्गिक कथावस्तु दो प्रकार का होता है।

(1) पताका	**(2) प्रकरी**
अनुबन्ध सहित दूर तक चलने वाली पताका है।	एक देश में रहने वाली प्रकरी है।

47. हास्यरसप्रभेदाः सन्ति-

(a) त्रयः (b) चत्वारः

(c) पञ्च (d) षट्

Ans : (d) हास्य रस के 6 प्रकार हैं- स्मित, हसित, विहसित, उपहसित, अपहसित, अतिहसित।
ये प्रायः प्रहसन नामक रूपक के भेद में प्राप्त होते हैं।

48. अर्थोपक्षेपकाः उपयुज्यन्ते-

(a) रूपकेषु (b) काव्येषु

(c) प्रकरणग्रन्थेषु (d) धर्मशास्त्रेषु

Ans : (a) अर्थोपक्षेपकाः रूपकेषु उपयुज्यन्ते।
अर्थोपक्षेपक पाँच प्रकार का होता है - (1) विष्कम्भक (2) प्रवेशक (3) चूलिका (4) अङ्कस्य (5) अङ्कावतार
इन पाँचों के द्वारा सूच्य वस्तु का प्रतिपादन करना चाहिए।

49. 'गौर्वाहीकः' इत्युदाहरणं-

(a) जहल्लक्षणायाः

(b) अजहल्लक्षणायाः

(c) सारोपालक्षणायाः

(d) साध्यससानालक्षणायाः

Ans : (c) आचार्य मम्मट ने लक्षणा के 6 भेद माने हैं लक्षणा तेन षड्विधा'' - पहले लक्षणा के शुद्धा और गौणी दो भेद पुनः शुद्धा लक्षणा के दो भेद- उपादानलक्षणा, लक्षणलक्षणा। गौर्वाहीकः यह सारोपा लक्षणा का उदाहरण है।

50. तात्पर्यार्थमङ्गीकुर्वन्ति -

(a) अन्विताभिधानवादिनः

(b) अभिहितान्वयवादिनः

(c) नरुक्तिकाः

(d) शब्दब्रह्मवादिनः

Ans : (b) तात्पर्यार्थोऽपि केषुचित् अर्थात् पार्थसारथि मिश्र आदि अभिहितान्वयवादी मीमांसको के मत में तीन प्रकार के वाच्यादि अर्थों के अतिरिक्त चौथे प्रकार का तात्पर्यार्थ भी होता है।

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, जून-2009

संस्कृत

व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

Note : This paper contains Fifty (50) objective type questions, each question carrying two (2) marks. Attempt all the questions.

नोट : इस प्रश्नपत्र में पचास (50) बहु-विकल्पीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के दो (2) अंक हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर दें।

सूचनाः अस्मिन् प्रश्नपत्रे **पञ्चाशत् (50)** बहुवैकल्पिकप्रश्नाः सन्ति। एकैकस्य प्रश्नस्य **अङ्कद्वयं (2)** वर्तते। सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः।

1. 'आवाहनं देवानां वहनञ्च हविषाम्' इत्यस्तिः

(a) अग्निकर्म (b) विष्णुकर्म
(c) रुद्रकर्म (d) इन्द्रकर्म

Ans : (a) 'आवाहनं देवानां वहनञ्च हविषाम्' यह कर्म अग्नि का है अग्नि देवताओं को बुलाता है तथा हवि को वहन करने वाला है। यह प्रथम मण्डल के प्रथम सूक्त अग्निसूक्त से लिया गया है।

'अग्निर्होता कविवतुः सत्यश्चित्रश्रवस्तमः।
देवो देवोभिरागमत् ।'

2. 'रसानुप्रदानं वृत्रवधः 'इत्यस्ति :

(a) बृहस्पतिकर्म (b) रुद्रकर्म
(c) सवितृकर्म (d) इन्द्रकर्म

Ans : (d) 'रसानुप्रदानं वृत्रवध कर्म इन्द्र का है- इन्द्र ने ही वृत्र या अहि को मारकर सात नदियों को प्रवाहित किया था। ऋग्वेद के द्वितीय मण्डल का 12वाँ सूक्त इन्द्र सूक्त है इसके तृतीय मन्त्र में यह प्राप्त होता है।

'यो हत्वाहि मरिणात्सप्त सिन्धू -योगा उदाजदपधा वलस्य।'
.....सजनास इन्द्रः 12/12/31

3. काण्वसंहिता वर्तते :

(a) कृष्णयजुर्वेदस्य (b) सामवेदस्य
(c) शुक्लयजुर्वेदस्य (d) अथर्ववेदस्य

Ans : (c) काण्वसंहिताशुक्लयजुर्वेदस्य वर्तते। शुक्लयजुर्वेद की दो संहिताएँ प्रसिद्ध हैं (1) काण्वसंहिता तथा (2) वाजसनेयिसंहिता या माध्यन्दिनसंहिता। कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीय, कठ, मैत्रायणी तथा कपिष्ठल संहिता प्रसिद्ध हैं, सामवेद की जैमिनीय तथा राणायनीय संहिता अथर्ववेद की पैप्पलाद तथा शौनकीयसंहिता प्रसिद्ध हैं।

4. **संख्यया स्वराङ्कनं भवति :**

(A) यजुर्वेदे (B) सामवेदे
(C) अथर्ववेदे (D) ऋग्वेदे

Ans : (b) सामवेद में संख्या के द्वारा स्वराङ्कन होता है जबकि यजुर्वेद में हाँथ के द्वारा स्वराङ्कन होता है इसी प्रकार से ऋग्वेद में भी हाँथ से ही स्वराङ्कन होता है।

5. 'स्वाध्यायान्मा प्रमदः' वर्तते :

(A) ईशोपनिषदि (B) कठोपनिषदि
(C) तैत्तिरीयोपनिषदि (D) ऐतरेयोपनिषदि

Ans : (c) 'स्वाध्यायान्मा प्रमदः', यान्यस्माकं सुचरितानि तानि त्वया उपास्यानि, धर्मं चर, सत्यं वद इत्यादि वाक्य तैत्तिरीयोपनिषद् में वर्णित है।

6. 'पुरुरवा उर्वशी' -संवादो वर्तते :

(a) ऋग्वेदस्य दशममण्डले
(b) अथर्ववेदस्य नवमकाण्डे
(c) शतपथब्राह्मणस्य प्रथमकाण्डे
(d) यजुर्वेदस्य पञ्चदशाध्याये

Ans : (a) पुरुरवा तथा उर्वशी संवाद ऋग्वेद के दशम मण्डल के 95वें सूक्त में वर्णित हैं इसमें कुल 18 मन्त्र हैं इसमें पुरुरवा तथा उर्वशी की प्रेमकथा वर्णित है, पुरुरवा एक मनुष्य है तथा उर्वशी एक अप्सरा है।

7. सरमापाणिसूक्तस्य छन्दो वर्तते :

(a) त्रिष्टुप् (b) जगती
(c) बृहती (d) विराड्गायत्री

Ans : (a) सरमापणि संवाद सूक्त ऋग्वेद के दशवें मण्डल का 108वाँ सूक्त है इसमें त्रिष्टुप् छन्द है। और स्वर दैवत है।

8. बालगङ्गाधर तिलकानुसारं ऋग्वेदस्य कालः ख्रीस्तपूर्व वर्ततेः

(a) 6000 (b) 8000
(c) 2500 (d) 3500

Ans : (a) बालगङ्गाधर तिलक ने ज्योतिषगणना के आधार पर ऋग्वेद का रचनाकाल 6000 ई.पू. से 4000 ई.पू. स्वीकार किया है। जैकोबी 4500 ई.पू. स्वीकार करते हैं। मैक्डोनाल्ड ऋग्वेद का रचनाकाल 1300 ई.पू. मानते हैं तथा मैक्समूलर ऋग्वेद का रचनाकाल 1200ई.पू. स्वीकार करते हैं।

9. माध्यन्दिनीयसंहितायामुदात्तस्वरस्य अङ्कनं भवति :

(a) अधः (b) उपरिष्टात्
(c) तिर्यक् (d) किमपि न

Ans : (d) शुक्लयजुर्वेद की माध्यन्दिन संहिता में उदात्त स्वर अनङ्कित होता है। अनुदात्त स्वर वर्ण के नीचे प्रदर्शित रहता है तथा स्वरित स्वर वर्ण के ऊपर अंकित रहता है जैसे –

उदात्त = क
अनुदात्त = क̲
स्वरित = क̄

10. मन्त्रब्राह्मणयोः सम्मिश्रणं वर्तते :

(a) ऋग्वेदे (b) कृष्णयजुर्वेदे
(c) सामवेदे (d) अथर्ववेदे

Ans : (b) मन्त्र तथा ब्राह्मण दोनों का मिला हुआ भाग कृष्ण यजुर्वेद कहलाता है जबकि ऋग्वेद में मन्त्रों का संकलन है तथा सामवेद में उन ऋग्वेदीय संकलित मन्त्रों का गान है।

11. शुक्लयजुर्वेदमाध्यन्दिनसंहितायां मन्त्रसंख्या वर्तते :

(a) 1975 (b) 2000
(c) 1852 (d) 1900

Ans : (a) शुक्ल यजुर्वेद की माध्यन्दिन संहिता में 1975 मन्त्र हैं। माध्यन्दिन संहिता या वाजसनेयिसंहिता तथा काण्वसंहिता शुक्लयजुर्वेद की संहिताएँ हैं।

12. शिक्षाग्रन्थेषु प्रतिपाद्यते :

(a) वेदार्थनिर्णयधर्मः (b) कालज्ञानम्
(c) उच्चारणधर्मः (d) शब्दसाधुत्वम्

Ans : (c) शिक्षा ग्रन्थ प्रत्येक वेदों को जानने के लिये साधन हैं इसे प्रातिसाख्य ग्रन्थ भी कहा जाता है इसमें वर्ण, स्वर, मात्रा, बल, साम, सन्तान ये शिक्षा नाम से कहे जाते हैं। जैसे ऋग्वेद का ऋक् प्रातिसाख्य है।

13. सत्कार्यवादे उत्पत्तेः पूर्वं कार्यं भवतिः

(a) सदसत् (b) अव्यक्तरूपेण सत्
(c) उभयरूपेण सत् (d) व्यक्तरूपेण सत्

Ans : (b) सांख्यदर्शन सत्कार्यवाद को स्वीकार करता है। कार्य उत्पत्ति के पूर्व दृष्ट न होने से भी सत् है तथा उत्पत्ति के पश्चात् भी सत् हो जाता है अतः उत्पत्ति पूर्व भी कार्य सत् रहता है इसलिये इसे अव्यक्तरूपेण सत् कहा जाता है। जैसे- तिल से तेल निकलता है तो पहले से तिल में तेल विद्यमान था।

14. सांख्यदर्शने पृथिव्याः प्रादुर्भावः अस्तिः

(a) रसतन्मात्रात् (b) गन्धतन्मात्रात्
(c) शब्दतन्मात्रात् (d) स्पर्शतन्मात्रात्

Ans : (b) सांख्यदर्शन में पृथ्वी की उत्पत्ति गन्धतन्मात्रा से होती है। पञ्चतन्मात्रों से क्रमशः पञ्च महाभूतों की उत्पत्ति होती है, जैसे- शब्द तन्मात्रा से आकाश, रूपतन्मात्रा से तेज, रसतन्मात्रा से जल, स्पर्शतन्मात्रा से वायु तथा गन्धतन्मात्रा से पृथ्वी का प्रादुर्भाव होता है।

15. त्रिविधं प्रमाणं विद्यते :

(a) न्यायदर्शने (b) वेदान्तदर्शने
(c) मीमांसादर्शने (d) सांख्यदर्शने

Ans : (d) सांख्यदर्शन में तीन प्रमाणों को स्वीकार किया गया है- प्रत्यक्ष प्रमाण, अनुमान प्रमाण तथा आप्त प्रमाण।
'त्रिविधं प्रमाणमिष्टं प्रमेयसिद्धिः प्रमाणद्धि'।
न्याय में चार प्रमाणों को तथा मीमांसा एवं वेदान्त में छः प्रमाणों को स्वीकार किया गया है।

16. त्रिकालमाभ्यन्तरं करणम् :

(a) सदानन्दमते (b) केशवमिश्रमते
(c) ईश्वरकृष्णमते (d) जैमिनिमते

Ans : (c) ईश्वरकृष्ण की सांख्यकारका के 33वें कारिका में 'त्रिकालमाभ्यन्तरं करणम्' का वर्णन मिलता है।

17. अद्वैतवेदान्ते जीवब्रह्मणोः स्वरूपम् :

(a) जीवब्रहमैक्यम् (b) जीव एव पुरुषः
(c) जीव एव अज्ञानम् (d) जीव एव ईश्वरः

Ans : (a) अद्वैत वेदान्त में चार अनुबन्ध बताये गये हैं (1) अधिकारी (2) विषय (3) सम्बन्ध (4) प्रयोजन। इस शास्त्र का विषय जीव तथा ब्रह्म की एकता है जो शुद्ध, बुद्ध, नित्य तथा ब्रह्मस्वरूप है एवं शुद्ध चैतन्य है।

18. अध्यारोपलक्षणमस्ति :

(a) जीवेब्रह्मआरोपः (b) अवस्तुनिवस्त्वारोपः
(c) वस्तुनि अवस्त्वावोरोप (d) न किमपि

Ans : (c) वस्तुन्यवस्त्वारोपः अध्यारोपः। अर्थात् जीव जिस प्रकार से बँधता है वह प्रक्रिया अध्यारोप है तथा जिस प्रक्रिया से मुक्त होता है वह अपवाद है। वस्तु पर अवस्तु का आरोप ही अध्यारोप है जैसे रज्जु में सर्प को आरोपित करना ही अध्यारोप है तथा रज्जु में सर्प का भ्रम दूर होना अपवाद है।

19. अनुबन्धः अस्ति :

(a) द्विविधः (b) त्रिविधः
(c) चतुर्विधः (d) पञ्चविधः

Ans : (c) वेदान्तसार में चार प्रकार के अनुबन्ध बताये गये हैं (1) अधिकारी, (2) विषय (3) सम्बन्ध (4) प्रयोजन। साधन चतुष्टय सम्पन्न अधिकारी होता है, जीव तथा ब्रह्म का ऐक्य विषय है, बोध्यबोधक भाव सम्बन्ध है तथा अज्ञान की निवृत्ति ही प्रयोजन है।

20. सदसद्भ्याम् अनिर्वचनीयमस्तिः

(a) ज्ञानम् (b) ज्ञानाज्ञाने
(c) अज्ञानम् (d) न किमपि

Ans : (c) अज्ञान को वेदान्तसार में अनिर्वचनीय कहा गया है। अनिर्वचनीय अर्थात् कुछ कहा नहीं जा सकता। यह अज्ञान दृष्ट होने से व्यवहार में सत् है तथा जब इस अज्ञान की निवृत्ति हो जाती है तो यह असत् हो जाता है अर्थात् पारमार्थिक सत्ता में यह असत् है। इसी अज्ञान से ही सृष्टि होती है।

21. न्यायदर्शने प्रमाणानि सन्तिः

(a) त्रीणि (b) चत्वारि
(c) पञ्च (d) षट्

Ans : (b) न्यायदर्शन में चार प्रमाणों को स्वीकार किया गया है। (1) प्रत्यक्ष (2) अनुमान (3) उपमान (4) शब्द प्रमाण।
'प्रत्यक्षानुमानोपमानशब्दभेदाच्चतुर्विधम्'

22. 'गगनारविन्दं सुरभि' अत्र कः हेत्वाभासः?

(a) आश्रयसिद्धः (b) स्वरूपासिद्धः
(c) व्याप्यत्वासिद्धः (d) विरुद्धः

Ans : (a) न्यायदर्शन में पाँच प्रकार के हेत्वाभास कहे गये हैं ये हेतु नहीं होते अपितु हेतु की भाँति भासित होते हैं 'हेतुवद् आभासन्ते इति हेत्वाभासः'।
(1) असिद्ध (2) अनैकान्तिक (3) विरुद्ध (4) प्रकरणसम् (5) कालात्ययापदिष्ट ये पाँच भेद हैं। इनमें से असिद्ध हेत्वाभास 3 प्रकार का होता है (क) आश्रयासिद्ध (ख) स्वरूपासिद्ध (ग) व्याप्यत्वासिद्ध। गगनारविन्दे सुरभि अरविंदत्वात् सरोजारविन्दवत्' यह आश्रयासिद्ध का उदाहरण है।

23. न्यायानुसारं प्रमेयाः सन्तिः

(a) दश (b) एकादश
(c) द्वादश (d) त्रयोदश

Ans: (c) न्यायमत के अनुसार प्रमेय 12 हैं। 'आत्मशरीरेन्द्रियार्थबुद्धि मनः प्रवृत्तिदोषभावफलदुःखापवर्गास्तु प्रमेयम्। (1) आत्मा (2) शरीर (3) इन्द्रिय (4) अर्थ (5) बुद्धि (6) मन (7) प्रवृत्ति (8) दोष (9) प्रत्यभाव (10) फल (11) दुःख (12) अपवर्ग।

24. वेमादिकं पटस्य अस्ति :

(a) समवायिकारणम् (b) असमवायिकारणम्
(c) निमित्तकारणम् (d) किमपि न

Ans : (c) न्याय दर्शन में तीन कारण बताये गये हैं समवायि कारण जैसे- पट का समवायि कारण तन्तु है, असमवायिकारण जैसे- तन्तु संयोग पट का असमवायिकारण है तथा तुरी वेमादि पट के प्रति निमित्त कारण होते हैं।

25. एकाल्प्रत्ययः

(a) कृत् (b) सन्
(c) अपृक्तम् (d) तिङ्

Ans : (c) एकाल् रूप जो प्रत्यय होता है वह अपृक्तसंज्ञक होता है अर्थात् उसकी अपृक्तसंज्ञा होती है। जैसे सु प्रत्यय में स् की अपृक्त संज्ञा होती हैं यह 'अपृक्तं एकाल् प्रत्ययः' (1/2/41) सूत्र से होता है।

26. क्तक्तवतू किमुच्यते :

(a) गतिः (b) निष्ठा
(c) गुणः (d) सवर्णम्

Ans : (b) क्त तथा क्तवतु की निष्ठा संज्ञा होती है यह भूतकाल में सभी धातुओं से होते हैं इसका सूत्र है 'क्तक्तवतू निष्ठा' (1/1/26) जैसे कृतः, पठितः, कृतवान्, पठितवान् इत्यादि।

27. विभाषायाः किं लक्षणम्?

(a) सुप्तिङन्तम् (b) सामर्थ्यम्
(c) परःसन्निकर्षः (d) नवेति

Ans : (d) 'नवेति विभाषा'- (1/1/44) न, तथा वा शब्द के अर्थ की विभाषा संज्ञा होती है अर्थात् विभाषा का अर्थ विकल्प से होता है। जहाँ पर विकल्प से होने और न होने दोनों की सम्भावना रहती है वहाँ पर विभाषा सञ्ज्ञा होती है।

28. नदीसंज्ञया उल्लिख्येते :

(a) ण्वुल्तृचौ (b) स्वौ
(c) उडयौ (d) यूस्त्र्याख्यौ

Ans : (d) 'यूस्त्र्याख्यौ नदी'– नित्य स्त्रीलिङ्ग दीर्घ ईकारान्त और ऊकारान्त शब्द नदीसंज्ञक होते हैं जैसे- बहुश्रेयसी।

29. अदेङ् इत्यस्य का संज्ञा :

(a) भ (b) टि
(c) गुणः (d) घु

Ans : (c) 'अदेङ् गुणः' सूत्र के अनुसार अत् एङ् गुण सञ्ज्ञक होते हैं। अर्थात् अ,ए, और ओ की गुण सञ्ज्ञा होती है।

30. समीचीनां तालिकां चिनुत :

(A)	प्रातिपदिकम्	(i)	आदैच्
(B)	वृद्धिः	(ii)	सुप्तिङन्तम्
(C)	पदम्	(iii)	अचोऽन्त्यादि
(D)	टि	(iv)	अर्थवदधातुरप्रत्ययः

	(A)	(B)	(C)	(D)
(a)	(ii)	(iii)	(i)	(iv)
(b)	(iii)	(i)	(iv)	(ii)
(c)	(iv)	(i)	(ii)	(iii)
(d)	(i)	(iv)	(iii)	(ii)

Ans : (c)

अर्थवदधातुरप्रत्ययः	-	प्रातिपदिकम्
वृद्धिः	-	आदैच्
सुप्तिङन्तम्	-	पदम्
अचोन्त्यादि	-	टि

31. साधकतमं कारकं किमुच्यते :

(a) कर्म (b) अधिकरणम्
(c) करणम् (d) अपादानम्

Ans : (c) साधकतम कारक की करण संज्ञा होती है। **'साधकतमं करणम्'**= क्रिया की सिद्धि में प्रकृष्ट रूप से उपकारक करण कहलाता है।

32. 'अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति' अत्र का विभक्तिः

(a) द्वितीया (b) पञ्चमी
(c) सप्तमी (d) तृतीया

Ans : (b) 'अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति' (1/4/28) इस सूत्र के द्वारा- जब कोई अपने को किसी से छिपाता है तो जिससे छिपाता है वह अपादान होता है जैसे 'मातुर्निलीयते कृष्णः'। यहाँ पर कृष्ण अपने को माता से छिपाता है इसलिए माता में अपादान कारक हुआ है।

33. संख्यापूर्वः कः समासः?

(a) केवलः (b) तत्पुरुषः
(c) द्विगुः (d) बहुव्रीहिः

Ans : (c) संख्यापूर्वो द्विगुः (2/1/52) इस सूत्र से तद्धितार्थोत्तरपद समाहारे च सूत्र में कथित त्रिविध समास में यदि संख्यावाचक शब्द पूर्व पद में हो तो ऐसे समास की द्विगु संज्ञा होती है।

34. उपकृष्णम् इत्यस्य पदस्य विग्रहः वर्तते :

(a) कृष्णस्य सादृश्यम् (b) कृष्णस्य पश्चात्
(c) कृष्णस्य समीपम् (d) कृष्णं प्रति

Ans : (c) उपकृष्णम् का लौकिक विग्रह 'कृष्णस्य समीपम्' है तथा अलौकिक विग्रह कृष्ण ङस् उप है। यहाँ पर समीप अर्थ में अव्ययीभाव समास हुआ है।

35. अकुहविसर्जनीयानाम् उच्चारणस्थानं किम्?

(a) मूर्धा (b) ओष्ठः
(c) कण्ठः (d) तालु

Ans : (c)

अकुहविसर्जनीयानाम्-		कण्ठः
इचुयशानाम्	-	तालुः
ऋटुरषाणाम्	-	मूर्धा
उपूपध्मानीयानाम्	-	ओष्ठौ

36. मूर्धन्यो भवति :

(a) प् (b) ड् (c) ल् (d) ल्

Ans : (b) डकार का उच्चारण मूर्धा से होता है।
ऋ ट् ठ् ड् ढ् ण् र् तथा ष् का उच्चारण स्थान मूर्धा है। 'ऋटुरषाणां मूर्धा'।

37. यरलवाः वर्णाः

(a) स्पृष्टा (b) अन्तःस्थाः
(c) ईषत्स्पृष्टा (d) अनुनासिकाः

Ans : (b) य् व् र् ल् अन्तस्थ कहे जाते हैं।
क् से म् तक वर्ण स्पृष्ट कहे जाते हैं।
ञ् म् ङ् ण् न् वर्ण अनुनासिक कहलाते हैं।
स् ष् श् तथा ह् वर्ण ईषत्स्पृष्ट कहे जाते हैं।

38. हितोपदेशस्य रचयिता अस्ति :

(a) नारायणः (b) विष्णुशर्मा
(c) दण्डी (d) बाण

Ans : (a) हितोपदेश के रचयिता नारायण पण्डित कहे जाते हैं। जबकि विष्णुशर्मा पञ्चतन्त्र के, दण्डी -दशकुमारचरितम् के एवं बाण कादम्बरी तथा हर्षचरितम् के रचयिता हैं।

39. नाटकस्य उदाहरणं भवति :

(a) मृच्छकटिकम् (b) मालतीमाधवम्
(c) वेणीसंहारः (d) त्रिपुरविजयः

Ans : (c) वेणीसंहार छः अंक का नाटक है। मृच्छकटिकम् प्रकरण ग्रन्थ है इसमें 10 अंक है तथा मालतीमाधवम् भवभूति का 10 अङ्कों का प्रकरण ग्रन्थ है।

40. प्रतिमानाटकस्य रचयिता वर्तते :

(a) कालिदासः (b) भवभूतिः
(c) भट्टनारायणः (d) भासः

Ans : (d) प्रतिमानाटक के रचयिता भास हैं यह 7 अंकों का नाटक ग्रन्थ है। इसकी कथा रामायण से ली गयी है। भास ने कुल 13 नाटक लिखे हैं।

41. 'अज्ञातहृदयेष्वेवं' वैरीभवति सौहृदम् इति वाक्यस्य कर्ता वर्तते -

(a) भारविः (b) कालिदासः
(c) माघः (d) श्रीहर्षः

Ans : (b) अज्ञातहृदयेष्वेवं वैरीभवति सौहृदम्'
यह वाक्य महाकवि कालिदास विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् से उद्धृत है। कालिदास उपमा के लिए प्रसिद्ध है यथा –

उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्
दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयोगुणाः।

42. 'रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्' इत्युक्तं :

(a) कुन्तकेन (b) जगन्नाथेन
(c) आनन्दवर्धनेन (d) मम्मटेन

Ans : (b) 'रमणीयार्थप्रतिपादकः शब्दः काव्यम्' यह उक्ति आचार्य जगन्नाथ की है रमणीय अर्थ अर्थात् मनोहर अर्थ को प्रतिपादित करने वाला शब्द ही काव्य है। इसी प्रकार मम्मट ने काव्य का लक्षण किया है- 'तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि'।

43. आनन्दवर्धनाचार्यमतानुसारं काव्यस्यात्मा भवतिः

(a) ध्वनिः (b) रसः
(c) रीतिः (d) अलङ्कारः

Ans : (a) आचार्य आनन्दवर्धन काव्य की आत्मा के रूप में ध्वनि को स्वीकार किये हैं। विश्वनाथ ने रस को काव्य की आत्मा माना है, वामन ने रीति को काव्य की आत्मा कहा है, भामह, दण्डी आदि आचार्यो ने अलङ्कार को काव्य की आत्मा के रूप में प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया है।

44. करुणरसस्य स्थायी भावः वर्तते :

(a) भयम् (b) क्रोधः
(c) जुगुप्सा (d) शोकः

Ans : (d) करुण रस का स्थायी भाव शोक है जबकि भयानक रस का स्थायी भाव भय है, रौद्र रस का स्थायी भाव क्रोध है तथा वीभत्स रस का स्थायीभाव जुगुप्सा है।

45. 'मदेन भाति कलभः प्रतापेन महीपतिः' इति वाक्यं कस्यालङ्कारस्योदाहरणं भवति :

(a) उपमालङ्कारस्य (b) दीपकालङ्कारस्य
(c) अर्थान्तरन्यासालङ्कारस्य (d) दृष्टान्तालङ्कारस्य

Ans : (d) 'मदेन भाति कलभः प्रतापेन महीपतिः' जिस प्रकार से हाथी का मदमत्त बच्चा प्रतापी होता है उसी प्रकार प्रताप से राजा शोभित हो रहे हैं इसमें दृष्टान्त अलंकार है। 'दृष्टान्त तु सधर्मस्य वस्तुनः प्रतिबिम्बिनम्' यहाँ पर प्रताप रूप धर्म राजा में प्रतिबिम्बित हो रहा है।

46. 'सौन्दर्यमलङ्कारः' इति प्रतिपादितम् :

(a) रुय्यकेन (b) रुद्रटेन
(c) भामहेन (d) वामनेन

Ans : (d) आचार्य वामन रीति को काव्य की आत्मा मानते हैं सौन्दर्य को अलङ्कार मानते हैं वामन इस अलङ्कार शास्त्र को सौन्दर्य शास्त्र के रूप में देखते हैं।

47. विश्वनाथः अस्ति :

(a) रसवादी (b) अलङ्कारवादी
(c) ध्वनिवादी (d) वक्रोक्तिवादी

Ans : (a) आचार्य विश्वनाथ रसवादी कवि के रूप में जाने जाते हैं इनके अनुसार काव्य की आत्मा रस है। वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' जबकि भामह आदि अलंकारवादी हैं, आनन्दवर्धन ध्वनिवादी हैं कुन्तक वक्रोक्तिवादी हैं।

48. भरतेनोक्ताः अलङ्काराः सन्ति :

(a) चत्वारः (b) विंशतिः
(c) पञ्च (d) सप्त

Ans : (a) आचार्य भरत ने चार प्रकार के अलङ्कारों को स्वीकार किया था। (1) उपमा (2) रूपक (3) दीपक (4) यमक

उपमा, रूपकं चैव दीपकं तथा।
अलंकारास्तु ज्ञेयाश्चत्वारो नाकाश्रयाः॥

49. 'गङ्गायां घोषः' इत्यत्र वर्तते :

(a) उपादानलक्षणा (b) गौणी लक्षणा
(c) प्रयोजनवती लक्षणा (d) सारोपा लक्षणा

Ans : (c) 'गङ्गायां घोषः' इत्यत्र 'प्रयोजनवती लक्षणा' वर्तते शब्द शक्ति काव्यशास्त्रों में तीन प्रकार की कही गयी हैं
(1) अभिधा (2) लक्षणा (3) व्यञ्जना।

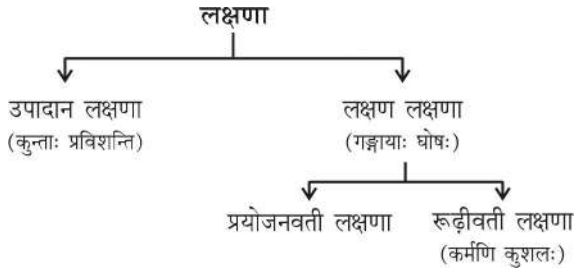

50. व्यक्तिविवेकस्य रचयिता वर्तते :

(a) अभिनवगुप्तः (b) भट्टनायकः
(c) भट्टतौतः (d) महिमभट्टः

Ans : (d) व्यक्ति विवेक नामक काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ के रचयिता आचार्य महिमभट्ट हैं।

यूजीसी नेट/जेआरएफ परीक्षा, दिसम्बर-2009

संस्कृत

व्याख्या सहित द्वितीय प्रश्न-पत्र का हल

Note : This paper contains Fifty (50) objective type questions, each question carrying two (2) marks. Attempt all the questions.

सूचना: अस्मिन् प्रश्नपत्रे पञ्चाशत् (50) बहुवैकल्पिकप्रश्नाः सन्ति। एकैकस्य प्रश्नस्य अङ्कद्वयं (2) वर्तते। सर्वे प्रश्नाः समाधेयाः।

1. कः द्युस्थानीयो देवः -

(a) वायुः (b) सूर्यः
(c) इन्द्रः (d) रुद्रः

Ans : (b) सूर्य द्युस्थानीय देवता है, इन्द्र तथा रुद्र अन्तरिक्ष स्थानीय देवता हैं तथा वायु पृथ्वीस्थानीय देवता के रूप में स्वीकृत किये गये हैं।

2. दशतयीशब्देन उच्यते -

(a) ऋग्वेदः (b) यजुर्वेदः
(c) सामवेदः (d) अथर्ववेदः

Ans : (a) वेद के चार भाग हैं ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद। ऋग्वेद में 10 मण्डल होने के कारण इसे दशतयी नाम से भी जाना जाता है।

3. निरुक्तानुसारं मुख्यतः कति देवताः -

(a) चतस्रः (b) पञ्च
(c) तिस्रः (d) द्वे देवते

Ans : (c) निरुक्तकार आचार्य यास्क के अनुसार मुख्य रूप से 'तीन' प्रकार के देवता हैं- (1) पृथ्वीस्थानीय देवता (2) अन्तरिक्षस्थानीय देवता तथा (3) द्युस्थानीय देवता।

4. मैत्रायणीसंहिता वर्तते -

(a) ऋग्वेदस्य (b) यजुर्वेदस्य
(c) सामवेदस्य (d) अथर्ववेदस्य

Ans : (b) चारों वेदों के पृथक्-पृथक् संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक तथा उपनिषद् हैं। मैत्रायणी संहिता, तैत्तिरीय संहिता, कठ संहिता तथा कपिष्ठल संहिता कृष्णयजुर्वेद की संहिताएँ हैं, तथा माध्यन्दिन संहिता, काण्व संहिता शुक्लयजुर्वेद की है।

5. कति लक्षणात्मकः ब्राह्मणग्रन्थो भवति -

(a) दश (b) द्वादश
(c) पञ्च (d) एकादश

Ans : (a) शबर स्वामी के अनुसार ब्राह्मण ग्रन्थों में दश प्रकार से ब्राह्मण लक्षण हैं। हेतुनिर्वचनं निन्दा प्रशंसा संशयो विधिः। पर क्रिया पुराकल्पो व्यवधारण कल्पना।। उपमान दशैवैते विधयो ब्राह्मणस्यतु। एतद्वै सर्ववेदेषु नियतं विधि लक्षणम्।
(1) हेतु (2) निर्वचन (3) निन्दा (4) प्रशंसा (5) संशय (6) विधि (7) परकृति (8) पुराकल्प (9) व्यवधारणकल्पना (10) उपमान

6. विश्वामित्रनदीसंवादो वर्तते -

(a) ऋग्वेदस्य दशममण्डले
(b) ऋग्वेदस्य तृतीयमण्डले
(c) यजुर्वेदस्य पञ्चमाध्याये
(d) अथर्ववेदस्य द्वितीयकाण्डे

Ans : (b) विश्वामित्र-नदी संवाद-सूक्त ऋग्वेद के तृतीय मण्डल का 33वाँ सूक्त हैं इस सूक्त में विपाशा (व्यास) तथा शुतुद्रि या सतलज नदियों का विश्वामित्र ऋषि के साथ संवाद है।

7. 'आत्मनस्तु कामाय सर्वं प्रियं भवति' इति समुक्तम् -

(a) कठोपनिषदि (b) बृहदारण्यकोपनिषदि
(c) मुण्डकोपनिषदि (d) छान्दोग्योपनिषदि

Ans : (b) 'आत्मनस्तु कामाय सर्वं प्रियं भवति' यह मन्त्र शुक्ल यजुर्वेदीय उपनिषद् बृहदारण्यकोपनिषद् में कहा गया है यह छः अध्यायों में विभक्त है तथा आकार की दृष्टि से विशाल है।

8. उपनिषदा प्रतिपाद्यते -

(a) कर्मकाण्डम् (b) ज्ञानकाण्डम्
(c) यन्त्रज्ञानम् (d) वास्तुज्ञानम्

Ans : (b) भारतीय दर्शनों में छः आस्तिक दर्शन तथा तीन नास्तिक दर्शन प्रसिद्ध हैं। आस्तिक दर्शनों में मीमांसा दर्शन के दो भाग हैं कर्मकाण्डपरक भाग पूर्वमीमांसा तथा ज्ञानकाण्डपरक भाग उत्तर मीमांसा के नाम से जाने जाते हैं उपनिषद् तथा अद्वैतवेदान्त ज्ञानकाण्ड के अन्तर्गत स्वीकृत है।

9. वेदस्यापौरुषेयत्त्वं स्वीकारोति -

(a) वेबरः (b) मोक्षमूलरः
(c) विल्सनः (d) जैमिनिः

Ans : (d) वेद अपौरुषेय हैं यह आचार्य 'जैमिनि' ने कहा है 'अपौरुषेयं वाक्यं वेदः स च विधिमन्त्रनामधेयं निषेधार्थवादभेदात् पञ्चविधः यह वाक्य लौगाक्षिभास्कर कृत अर्थसङ्ग्रह में निहित है।

10. मैक्समूलरमत्तानुसारमृग्वेदस्य कालो वर्तते -

(a) 1200 ई.पू. (b) 3000 ई.पू.
(c) 5000 ई.पू. (d) 4000 ई.पू.

Ans : (a) इंग्लैण्ड की 'सेक्रेड बुक्स आफ दी ईस्ट' नामक ग्रन्थ के अन्तर्गत मैक्समूलर द्वारा सम्पादित ऋग्वेद की शाकलशाखा का प्रकाशन हुआ था यह ग्रन्थ 1859 ई. में प्रकाशित हुआ था इसमें मैक्समूलर ने ऋग्वेद का रचनाकाल 1200 ई.पू. सिद्ध करने का प्रयास किया है।

11. ऋग्वेदसंहितायामष्टकसंख्या अस्ति -

(a) दश (b) द्वादश
(c) अष्टौ (d) चतुष्षष्टिः

Ans : (c) वेदों के चार भाग हैं ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद। ऋग्वेद का विभाजन दो प्रकार से मिलता है। (1) मण्डल क्रम (2) अष्टकक्रम। अष्टक क्रम में 8 अष्टक हैं प्रत्येक अष्टक 8-8 अध्यायों में विभाजित किया गया है इसलिये कुल मिलाकर 64 अध्याय हुए।

12. वेदाङ्गेषु छन्दः उपमीयते-

(a) पादाभ्याम् (b) चक्षुषा
(c) मुखेन (d) श्रोत्रेण

Ans : (a) वेदाङ्गो की संख्या छः है। शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त छन्द तथा ज्योतिष।

छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथोच्यते।
ज्योतिषामायनं चक्षुर्निरूक्तं श्रोत्रमुच्यते।।
शिक्षाघाणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम् ।
तस्मात् साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते।।

इस श्लोक के अनुसार छन्द को वेद का पाद कहा गया है।

13. उपादानग्रहणात् इत्येतेन पुष्यते -

(a) सत्कार्यवादः (b) पुरुषसिद्धिः
(c) प्रकृतिसिद्धिः (d) सृष्टिप्रक्रिया

Ans : (a) सांख्यदर्शन में सत्कार्यवाद को स्वीकार किया गया है-

असदकरणादुपादानग्रहणात् सर्वसम्भवाभावात् ।
शक्तस्यशक्यकरणात् कारणभावाच्च सत्कार्यम् ॥

उपादान ग्रहणात् से सत्कार्यवाद को कहा गया है।

14. जन्ममरणकरणानाम् इत्येतेन सिद्धम् -

(a) प्रकृतिस्वरूपम् (b) गुणस्वरूपम्
(c) दुःखस्वरूपम् (d) पुरुषबहुत्त्वम्

Ans : (d) सांख्य दर्शन में प्रकृति तथा पुरुष की सत्ता की बात कही गयी है पुरुष बहुल इस दर्शन की प्रमुख विशेषता है।

जननमरणकरणां प्रतिनियमादयुगपद् प्रवृत्तेश्च।
पुरुषबहुत्वं सिद्धं त्रैगुण्यविपर्ययाच्चैव॥
साँख्य कारिका

अर्थात् जनन मरण करणानां से पुरुषबहुत्व कहा गया है।

15. कर्तृत्त्वं धर्मः अस्ति

(a) पुरुषस्य (b) अहंकारस्य
(c) मूलप्रकृतेः (d) ज्ञानेन्द्रियाणाम्

Ans : (a) सांख्यदर्शन के अनुसार इस संसार के कर्ता तथा भोक्ता दोनों नित्य रूप में स्थित हैं कर्ता तथा भोक्ता दोनों पुरुष हैं तथा भोग्य प्रकृति है।

16. चैतन्यम् अस्ति

(a) प्रकृतेः (b) पुरुषस्य
(c) गुणत्रयस्य (d) महाभूतानाम्

Ans : (b) चेतनता पुरुष का धर्म है जबकि प्रकृति जड़ है यह मत साँख्यमतानुयायियों का है पुरुष तीनों गुणों से रहित है भोक्ता है तथा कैवल्य के लिये प्रवृत्त होता है।

17. जीवन्मुक्तिः अस्ति

(a) जैनदर्शने (b) बौद्धदर्शने
(c) चार्वाकदर्शने (d) वेदान्तदर्शने

Ans : (d) वेदान्त दर्शन में मुक्ति दो प्रकार की होती है-
(1) जीवन्मुक्ति (2) विदेहमुक्ति। जीवन्मुक्ति में शरीर रहते हुए भी जीव मुक्त हो जाता है तथा विदेह मुक्ति में शरीर के साथ जब ज्ञानी की मुक्ति होती है वह विदेह मुक्ति है।

18. व्यानः वायुर्वर्तते

(a) हदि (b) नाभिमण्डले
(c) कण्ठदेशे (d) सर्वशरीरगः

Ans : (d) वेदान्तदर्शन में पञ्चवायु का वर्णन है – प्राण, आपान, व्यान, उदान तथा समान। प्राण वायु नासाग्रवर्ती होती है। आपानवायु वायु आदि स्थान में रहती है, व्यान वायु सम्पूर्ण शरीर में रहती है, उदान वायु कण्ठ स्थान में रहती है तथा समान वायु शरीर के मध्य भाग में रहती है।

19. वेदान्तसारस्य कर्त्ता अस्ति

(a) ईश्वरकृष्णः (b) सदानन्दः
(c) सुरेश्वराचार्यः (d) शंकराचार्यः

Ans : (b) वेदान्तसार के कर्ता योगीन्द्र सदानन्द हैं, सांख्यकारिका के कर्ता ईश्वरकृष्ण हैं, नैष्कर्म्यसिद्धि के कर्ता सुरेशाचार्य हैं तथा ब्रह्मसूत्र पर अद्वैत वेदान्त रूप भाष्य आचार्य शङ्कर ने लिखा है।

20. अनुबन्धः अस्ति

(a) पञ्च (b) त्रयः
(c) चत्वारः (d) द्वौ

Ans : (c) वेदान्तसार के अनुसार चार प्रकार के अनुबन्ध होते हैं-
(1) अधिकारी (2) विषय (3) सम्बन्ध (4) प्रयोजन।

21. प्रत्यक्षं ज्ञानमस्ति

(a) योगार्थसन्निकर्षजम् (b) इन्द्रियार्थसन्निकर्षजम्
(c) पदार्थसन्निकर्षजम् (d) तत्त्वार्थसन्निकर्षजम्

Ans : (b) न्यायमत के अनुसार प्रमाणों की संख्या चार है।
इन्द्रियार्थसन्निकर्षजन्य ज्ञान को प्रत्यक्ष कहते हैं यहाँ पर इन्द्रियार्थ अर्थात् सभी पञ्च ज्ञानेन्द्रियों के विषयों से है।

22. तन्तुपटयोः अस्ति सम्बन्धः

(a) समवायिसम्बन्धः (b) असमवायिसम्बन्धः
(c) निमित्तसम्बन्धः (d) न कोऽपि सम्बन्धः

Ans : (a) न्याय मतानुसार कारण तीन प्रकार के बताये गये हैं-
(1) समवायिकारण
(2) असमवायिकारण
(3) निमित्तकारण
तन्तु का पट के साथ समवायिसम्बन्ध से रहता है तथा तन्तु पट का समवायिकारण है।

23. हेत्वाभासः कतिविधिः ?

(a) चतुर्विधः (b) पञ्चविधः
(c) द्विविधः (d) त्रिविधः

Ans : (b) हेत्वाभास पाँच प्रकार के बताये गये हैं जो हेतु नहीं हैं केवल हेतु के जैसे लगते हैं वे हेत्वाभास कहलाते हैं। यथा –'हेतुवद् आभासन्ते इति हेत्वाभासः। ये निम्न है–
(1) असिद्ध (2) विरुद्ध (3) अनैकान्तिक (4) प्रकरणसम (5) कालात्यापदिष्ट।

24. न्यायमते प्रमाणानि सन्ति?

(a) षट् (b) चत्वारि
(c) पञ्च (d) त्रीणि

Ans : (b) न्यायमत के अनुसार चार प्रकार के प्रमाण हैं
(1) प्रत्यक्ष, (2) अनुमान (3) उपमान (4) शब्द प्रमाण
सांख्य में तीन प्रमाण तथा मीमांसा में छः प्रमाण स्वीकृत हैं।

25. क्तक्तवतूप्रत्ययोः संज्ञा अस्ति

(a) टि (b) धि
(c) नदी (d) निष्ठा

Ans : (d) 'क्तक्तवतू निष्ठा' अर्थात् क्त तथा क्तवतु प्रत्ययों की निष्ठा सञ्ज्ञा होती है। निष्ठा सञ्ज्ञक भूतकाल के अर्थ में सभी धातुओं से होते है।
जैसे – हसितः, हसितवान्, कृतः, कृतवान्।

26. ईदूदेद्द्विवचनं भवति

(a) प्रातिपदिकम् (b) सुप्
(c) प्रगृह्यम् (d) तद्धितः

Ans : (c) ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम् (1/1/11) सूत्र के अनुसार ईकारान्त द्विवचन, ऊकारान्त द्विवचन और एकारान्त द्विवचन प्रगृह्य संज्ञक होते हैं। जैसे-हरी एतौ, विष्णू इमौ, गङ्गे अमू।

27. इचुयशानां किं स्थानम्?

(a) दन्तः (b) मूर्धा
(c) तालु (d) ओष्ठी

Ans : (c) इचुयशानां – तालु
ऌतुलसानां – दन्त
ऋटुरषाणां – मूर्धा
उपूपध्मानीयानां – ओष्ठः
इ च् वर्ग तथा य्, श् का उच्चारण स्थान तालु है।

28. पदम् अस्ति

(a) योग्यताकाङ्क्षासत्तियुक्तम् (b) सुप्तिङन्तम्
(c) समासयुक्तम् (d) सन्धियुक्तम्

Ans : (b) सुप्तिङन्तम् पदम् (1/4/14) सुबन्त और तिङन्त की पद संज्ञा होती है सुप् अर्थात् सु से लेकर सुप् तक 21 प्रत्यय जिस शब्द में लगते हैं वे पद सुबन्त कहलाते हैं इसी प्रकार जिस धातु में तिप् से लेकर महिङ् तक के 18 प्रत्यय लगते हैं वे तिङन्त कहलाते हैं।

29. 'सह साकं सार्धम्' इतियोगे किं कारकम्?

(a) कर्त्ता (b) कर्म
(c) करणम् (d) सम्प्रदानम्

Ans : (c) सहयुक्तेऽप्रधाने (2/3/19) सूत्र के अनुसार सह के योग में अप्रधान की करण संज्ञा होती है जैसे – 'पुत्रेण सह पिता आगतः' एवं सहसाकंसार्द्धंसमंयोगेऽपि। अर्थात् सह, साकं, सार्द्धं, समं के योग में भी तृतीया होती है।

30. एकाल्प्रत्ययः किम्?

(a) घि (b) नदी
(c) उपधा (d) अपृक्तम्

Ans : (d) अपृक्तं एकाल प्रत्ययः (1/2/41) सूत्र के अनुसार एक अल् रूप जो प्रत्यय होता है वह अपृक्त कहलाता है अर्थात् उसकी अपृक्त संज्ञा होती है जैसे- सु में अवशिष्ट भाग स् बचता है, उसकी अपृक्त संज्ञा होती है।

31. कादयोमावसानाः सन्ति

(a) स्पर्शाः (b) अर्धस्वराः
(c) तालव्याः (d) मूर्धन्याः

Ans : (a) क् से लेकर म् पर्यन्त वर्णों की स्पर्श संज्ञा होती है। अर्थात् क वर्ग च वर्ग ट वर्ग, त वर्ग, तथा प वर्ग की स्पर्श संज्ञा होती है। इनका आभ्यन्तर प्रयत्न स्पृष्ट होता है।

32. भारतीय-आर्यभाषायाः अवस्था सन्ति

(a) चतस्रः (b) पञ्च
(c) तिस्रः (d) षट्

Ans : (c) भारतीय आर्यभाषा की तीन अवस्थाओं का वर्णन विद्वानों ने किया है-

प्राचीन भारतीय आर्यभाषा	- 1500 ई.पू. से 500 ई.पू.
मध्यकालीन आर्यभाषा	- 500 ई.पू. से 1000 ई.
आधुनिक भारतीय आर्यभाषा	- 1000 ई. से अद्यावधिपर्यन्तम्

33. परः सन्निकर्षः अस्ति

(a) वृद्धिः (b) प्रातिपदिकम्
(c) सर्वनामस्थानम् (d) संहिता

Ans : (d) परः सन्निकर्षः संहिता (1/4/109) सूत्र के अनुसार वर्णों की अत्यन्त सन्निधि संहितासंज्ञक होती है अर्थात् वर्णों की अत्यन्त समीपता को संहिता कहते हैं। जैसे- राम+अवतार में राम के म् के बाद जो अ आता है वह अवतार के अ के समीप है अतः दोनों की संहिता संज्ञा होती है।

34. 'पञ्चानां गङ्गानां समाहारः' इत्यत्र समासः अस्ति

(a) द्विगुः (b) तत्पुरुषः
(c) अव्ययीभाव (d) बहुव्रीहिः

Ans : (c) 'पञ्चगङ्गम्' पद का लौकिक विग्रह है पञ्चानां गङ्गानां समाहारः तथा अलौकिक विग्रह पञ्चन् आम् गङ्गा आम् होगा। इस अवस्था में नदीभिश्च (2/1/20) सूत्र से अव्ययीभाव समास हुआ। जब संख्यावाचक सुबन्त शब्द का नदीवाचक सुबन्त शब्दों के साथ समास होता है तो वह अव्ययीभाव कहलाता है।

35. मूर्धन्येषु अन्तर्भवति

(a) य् (b) ल्
(c) ष् (d) ह

Ans : (c) षकार का अन्तर्भाव मूर्धन्य में होता है
यकार का अन्तर्भाव - अन्तस्थ में होता है
लकार का अन्तर्भाव- दन्त में होता है
हकार का अन्तर्भाव- कण्ठ में होता है

36. उपयुक्तां तालिकां चिनुत

(a) अपृक्तम्		(i) अदेङ्
(b) वृद्धिः		(ii) इग्यणः
(c) गुणः		(iii) एकाल प्रत्ययः
(d) सम्प्रसारणम्		(iv) आदैच्

	(a)	(b)	(c)	(d)
(A)	(iii)	(iv)	(i)	(ii)
(B)	(ii)	(i)	(iii)	(iv)
(C)	(iv)	(iii)	(ii)	(i)
(D)	(ii)	(iii)	(iv)	(i)

Ans : (a) अपृक्तमेकाल् प्रत्ययः
वृद्धिरादैच्
अदेङ्गुणः
इग्यणः सम्प्रसारणम्।

37. 'पुष्पेभ्यः स्पृहयति' अत्र केन सूत्रेण विभक्तिः?

(a) कर्तृकर्मणोः कृति (b) अपादाने पञ्चमी
(c) चतुर्थी सम्प्रदाने (d) स्पृहेरीप्सितः

Ans : (d) 'पुष्पेभ्यः स्पृहयति' अर्थात् पुष्प की स्पृहा करता है। 'स्पृहेरीप्सितः (1/4/36) सूत्र के द्वारा स्पृह् धातु के योग में इप्सित अर्थात् चाहा गया पदार्थ सम्प्रदान सञ्ज्ञक होता है तथा सम्प्रदाने चतुर्थी सूत्र से सम्प्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति होती है।

38. हर्षचरितस्य रचयिता अस्ति -

(a) बाणभट्टः (b) श्रीहर्षः
(c) दण्डी (d) हर्षदेवः

Ans : (a) हर्षचरित के रचयिता बाणभट्ट हैं, दण्डी दशकुमार चरितम् के रचयिता हैं, श्री हर्ष- नैषधीयचरितम् के रचयिता हैं। हर्षचरित बाणभट्ट द्वारा लिखित आख्यायिका है।

39. 'वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः' - इत्यस्ति-

(a) शिशुपालवधे (b) बुद्धचरिते
(c) किरातार्जुनीये (d) नैषधीयचरिते

Ans : (c) 'वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः' यह सूक्ति महाकवि भारवि द्वारा लिखित किरातार्जुनीयम् महाकाव्य के प्रथम सर्ग के 8वें श्लोक से ली गयी है।

40. 'अर्थो हि कन्या परकीय एव' - इति वाक्यस्य कर्त्ता वर्तते-

(a) कालिदासः (b) माघः
(c) श्रीहर्षः (d) भारविः

Ans : (a) अर्थो हि कन्या परकीय एव तामद्य सम्प्रेष्य परिग्रहीतुः
जातो ममायं विशदः प्रकामं प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा।।
यह श्लोक महाकवि कालिदास विरचित अभिज्ञानशाकुन्तम् नाटक के चतुर्थ अंक के 22वें श्लोक से लिया गया है।

41. पदलालित्याय सुप्रसिद्धः कविरस्ति-

(a) भारविः (b) कालिदासः
(c) दण्डी (d) भवभूतिः

Ans : (c) उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्।
दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयोगुणाः।।
इस श्लोक से स्पष्ट हो जाता है कि आचार्य दण्डी का पदलालित्य प्रसिद्ध है।

42. प्रतीयमानार्थस्य प्रतिपादिका शक्तिर्भवति-

(a) व्यञ्जना (b) लक्षणा
(c) अभिधा (d) तात्पर्या

Ans : (a) शक्ति तीन प्रकार की होती है (1) अभिधा (2) लक्षणा (3) व्यञ्जना। अभिधा शक्ति साक्षात् संकेतित अर्थ का बोध कराती है जब अभिधा अर्थ छोड़ देती है तो वहाँ पर लक्षणा शक्ति द्वारा अर्थ निकलता है तथा प्रतीयमान अर्थ का प्रतिपादन व्यञ्जना शक्ति से होता है।

43. शान्तरसस्य स्थायी भावः वर्तते-

(a) शोकः (b) शमः
(c) उत्साहः (d) भयम्

Ans : (b) शान्त रस का स्थायीभाव -शम है।
करुण रस का स्थायी भाव - शोक है।
वीर रस का स्थायी भाव - उत्साह है।
भयानक रस का स्थायी भाव- भय है।

44. सौन्दरानन्दमहाकाव्यस्य रचयिता वर्तते-

(a) शङ्कराचार्यः (b) कालिदासः
(c) अश्वघोषः (d) हर्षदेवः

Ans : (c) अश्वघोष के दो महाकाव्य प्रसिद्ध हैं (1) बुद्धचरितम् यह चतुर्दश सर्गों में प्राप्त है तथा (2) सौन्दरानन्द महाकाव्य।

45. 'डिम' इति रूपके अङ्का भवन्ति-

(a) 5 (b) 6
(c) 10 (d) 4

Ans : (d) रूपक या नाटक 10 प्रकार के होते है। (1) नाटक (2) प्रकरण (3) भाण (4) व्यायोम (5) समवकार (6) डिम (7) ईहामृग (8) वीथी (10) प्रहसन।
डिम में चार अंक होते हैं जैसे- त्रिपुरदाह

46. प्रकरणस्य उदाहरणं भवति-

(a) मुद्राराक्षसम् (b) मृच्छकटिकम्
(c) मालविकाग्निमित्रम् (d) वेणीसंहारम्

Ans : (b) शूद्रकरचित मृच्छकटिकम् - प्रकरण का उदाहरण है इसमें 10 अङ्क हैं।
विशाखदत्तकृत मुद्राराक्षस में सात अंक तथा वेणीसंहारम् में छः अङ्क तथा हैं।

47. कादम्बरी अस्ति-

(a) आख्यायिका (b) कथा
(c) परिकथा (d) कथानिका

Ans : (b) संस्कृत गद्य कवियों में अग्रगण्य बाणभट्ट ने कादम्बरी तथा हर्षचरित दो प्रसिद्ध गद्य काव्य लिखे हैं। कादम्बरी एक कथा है जबकि हर्षचरित आख्यायिका के अन्तर्गत आती है। कादम्बरी में चन्द्रापीड तथा वैशम्पायन के तीन जन्मों की कथा बतायी गयी है।

48. 'श्रुतेरिवार्थं स्मृतिरन्वगच्छत्' इत्यस्ति-

(a) रामायणे (b) महाभारते
(c) रघुवंशे (d) वेणीसंहारे

Ans : (c) 'तस्याः खुरन्यासपवित्रपांशु .....श्रुतिरिवार्थं स्मृतिरन्वगच्छत्' यह पद्य महाकवि कालिदास विरचित रघुवंश महाकाव्य के द्वितीय सर्ग का द्वितीय श्लोक है। इसमें कवि ने सुदक्षिणा को स्मृति की भाँति बताया है।

49. वाल्मीकिरामायणे प्रधानरसः अस्ति-

(a) शान्तः (b) करुणः
(c) वीरः (d) रौद्रः

Ans : (b) वाल्मीकि रामायण का प्रधान रस करुण है क्योंकि इस काव्य का उद्गम ही शोक से हुआ है 'शोकः श्लोकत्वमागतः' शोक से ही 'मा निषाद् ....' श्लोक प्रस्फुटित हुआ है।

50. 'हनुमानाब्धिमतरत् दुष्करं किं महात्मनाम्' - इति वाक्यं कस्यालङ्कारस्य उदाहरणम्-

(a) उपमालङ्कारस्य
(b) दृष्टान्तालङ्कारस्य
(c) दीपकालङ्कारस्य
(d) अर्थान्तरन्यासालङ्कारस्य

Ans : (b) 'हनुमानाब्धिमतरत् दुष्करं किं महात्मनाम्' यहाँ पर महात्माओं के सज्जनों के उत्साह की वृद्धि के लिये हनुमान का दृष्टान्त दिया गया है। जिस प्रकार हनुमान समुद्र को पार कर गये थे उसी प्रकार महात्माओं के लिये कुछ भी दुष्कर नहीं है। अतः यहाँ पर दृष्टान्त नामक अलङ्कार है।